चिंतन

इजरायल-ईरान में युद्ध से बढ़ेगा वैश्विक ऊर्जा संकट

ईरान ने आतंकी गुट हमास के जरिये जो चिंगारी इजरायल में लगाई थी, उससे अब पश्चिम एशिया झुलस रहा है। इजरायल व ईरान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया है। इजरायल ने ईरान में परमाणु ठिकानों पर हमला किया है। हमलों के दौरान इजरायल ने ईरान के परमाणु वैज्ञानिकों, सैन्य अधिकारियों, बैलिस्टिक मिसाइल भंडार, एयर डिफेंस सिस्टम और नतान्ज समेत कई परमाणु केन्द्रों को निशाना बनाया है। अब देर-सबेर ईरान भी बदला लेगा। इजरायल के इस ऑपरेशन राइजिंग लायन के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जिस तरह से ईरान को परमाणु डील के लिए धमकी के लहजे में चेतावनी दी है, उससे इजरायल के इस ऑपरेशन में अमेरिकी हाथ स्पष्ट है। इजरायली बॉम्बर ने कतर स्थित अमेरिकी सैन्य बेस से ईंधन भरे हैं, इससे भी अमेरिकी संलिप्तता साफ हो रही है। हालांकि प्रत्यक्ष तौर पर अमेरिका ने इस हमले से अपना पल्ला झाड़ा है। अब सवाल है कि ईरान लक्षित करके केवल इजरायल से बदला लेगा या फिर पश्चिम एशिया व खाड़ी क्षेत्र में स्थित अमेरिकी सैन्य बेस को भी निशाना बनाएगा। बदले में ईरान जो भी कदम उठाएगा, उसका विध्वंसक असर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष विश्व पर भी पड़ेगा। जैसे अमेरिका इजरायल के साथ खड़ा है, ठीक वैसे ही ईरान भी अकेला नहीं है, चीन व रूस उसके साथ हैं। अनिश्चितता और सैन्य संघर्ष से भरे विश्व में शक्ति के दो ध्रुव आमने-सामने हो रहे हैं। यूक्रेन व रूस जंग में भी ऐसी स्थिति बन रही है और इजरायल व ईरान के बीच तनाव में भी। ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम पर अडिग है, तो अमेरिका ईरान को ऐसा न करने देने पर तुला है। ईरान कहता आया है कि उसका परमाणु कार्यक्रम सिर्फ शांतिपूर्ण मकसदों के लिए है, लेकिन परमाणु निगरानी संस्था आईएईए (इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी) इस दावे को खारिज करती रही है। इजरायल भी आरोप लगाता रहा है कि ईरान परमाणु हथियार बना रहा है। अमेरिका व इजरायल की कोशिश है कि ईरान परमाणु हथियार न बनाए। इसी हफ्ते आईएईए की बोर्ड ऑफ गवर्नर्स ने दो दशक में पहली बार औपचारिक रूप से ईरान को परमाणु अप्रसार (एनपीटी) नियमों का उल्लंघन करने का दोषी करार दिया है। बंकरों में स्थित ईरान का सबसे बड़ा और गुप्त परमाणु संवर्धन केंद्र नतांज न्यूक्लियर फैसिलिटी पर इजरायल ने पहले भी साइबर अटैक और सीक्रेट बम धमाके किए हैं। इस बार इजरायल के हमले का दायरा काफी ज्यादा विनाशक है। ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने कहा है कि ईरान की प्रतिक्रिया इतनी भयानक होगी कि इजरायल अफसोस करेगा। बड़ी बात है कि अगर इजरायल व ईरान के बीच युद्ध विस्तार लेता है, तो विश्व व भारत पर क्या असर पड़ेगा? ग्लोबल ट्रेड का बड़ा रूट मिडिल ईस्ट से है। ईरान के युद्ध छेड़ने से यह ट्रेड रूट प्रभावित होगा, जिससे ऊर्जा व खाद्यान्न आपूर्ति पर असर पड़ेगा। मतलब आमजन के लिए वैश्विक स्तर पर महंगाई बढ़ेगी। भारत की ऊर्जा आपूर्ति भी प्रभावित हो सकती है। ऑपरेशन सिंदूर के समय इजरायल ने खुलकर भारत के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन किया था, जबकि ईरान ने मध्यस्थता की बात की थी। भारत के इजरायल व ईरान दोनों से संबंध अच्छे हैं, पर इजरायल के साथ पलड़ा भारी है। चाबहार में भारत बड़ा निवेशक है और उसके तेल व गैस का बड़ा खरीदार है। इसके बावजूद ईरान भारत के खिलाफ पाक प्रायोजित आतंकवाद को देखकर भी खुलकर स्टैंड नहीं लेता है। भारत ने इजरायल व ईरान को शांति से मसले सुलझाने की सलाह दी है।

मुद्दा

सुनील कुमार महला

वर्तमान में भी कम नहीं विमानन क्षेत्र की चुनौतियां

बारह जून को एयर इंडिया का विमान बोइंग ड्रीमलाइनर-787, जो कि गुजरात के अहमदाबाद में सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से लंदन के गैटविक हवाई अड्डे के लिए उड़ान भर रहा था, टेकऑफ के कुछ ही मिनटों बाद भयंकर आग का गोला बनकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया और इसमें 265 लोग असमय काल के ग्रास बन गए, यह बहुत ही दुखद और हृदयविदारक घटना है। जानकारी के अनुसार विमान में 169 भारतीयों समेत कुल 242 लोग सवार थे। इनमें केवल एक यात्री जिंदा बचा बताया जा रहा है। खबर है कि 625 फीट की ऊंचाई पर विमान ने सिग्नल खो दिए थे और तेजी से नीचे आने लगा था। वास्तव में, इस विमान दुर्घटना के हृदयविदारक दृश्यों ने देश-विदेश में हर किसी को स्तब्ध करके रख दिया। गुजरात में यह दूसरा भीषण विमान हादसा है। इससे पहले 19 अक्तूबर 1988 को इंडियन एयरलाइंस का मुंबई से आ रहा विमान अहमदाबाद एयरपोर्ट पर लैंडिंग से पूर्व दुर्घटना का शिकार हुआ था और इसमें 130 लोगों की जान चली गई थी। जानकारी के अनुसार दुर्घटनाग्रस्त विमान के दो ब्लैक बॉक्स में से पिछले हिस्से में स्थित एक ब्लैक बॉक्स को ढूंढ लिया गया है और उसे सुरक्षित रखा गया है। बाद में डीजीसीए के अधिकारी इसकी रिकॉर्डिंग का विस्तार से विश्लेषण करेंगे और निष्कर्ष पर पहुंचेंगे। दुर्घटना की मुख्य वजह तो अब तक सामने नहीं आई है, लेकिन लंबी दूरी की उड़ानों में विमान विशेष में ज्यादा ईंधन भरना पड़ता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि विमान में ज्यादा ईंधन से भी कहीं न कहीं आग अधिक भड़की होगी और किसी को खुद का बचाव करने का मौका तक नहीं मिल पाया। यह एक ऐसी भयानक त्रासदी है, जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। विमानन सुरक्षा ऐसा मोर्चा है, जहां छोटी सी भी कमी छोड़ने की गुंजाइश नहीं रहती है, क्यों कि एक मामूली सी ग़लती भी बहुत बड़े हादसे को जन्म दे सकती है। आज विमानन क्षेत्र में अनेक प्रकार की चुनौतियां विद्यमान हैं। मसलन,कड़ी प्रतिस्पर्द्धा, कम किराया, महंगा रखरखाव और महंगे ईंधन की वजह से विमानन कंपनियों की हालत खस्ता है। नई तकनीक अपनाने के लिए विमानन कंपनियों को भारी राशि निवेश करनी पड़ती है। विमानन कंपनियों के कुप्रबंधन या अक्षम प्रबंधन के कारण भी विमानन कंपनियां घाटे में चल रहीं हैं। इतना ही नहीं, हर स्तर पर प्रभावी संवाद की कमी, कंपनी प्रबंधन का अदूरदर्शितापूर्ण दृष्टिकोण, कुशल नेतृत्व का अभाव, कमजोर प्रबंधन, अपर्याप्त जोखिम प्रबंधन, प्रबंधकों में अनुभव व प्रशिक्षण की कमी, गलत भागीदार, पूंजी की कमी, लचर वित्तीय प्रबंधन, कर्मचारियों की उपेक्षा, यात्रियों की आवश्यकताओं की अनदेखी इत्यादि से भी विमानन कंपनियों को अक्सर सफलता नहीं मिल पाती है। यह पहली बार है जब सुरक्षा के लिए पहचाने जाने वाले बोइंग 787 के क्रैश होने की खबर सामने आई है। बहरहाल, यह दुर्घटना मानवीय त्रासदी तो है ही, कहीं न कहीं यह विमानन सुरक्षा और उसकी जवाबदेही पर गंभीर सवाल भी उठाती है। हाल फिलहाल, यह उम्मीद की जा सकती है कि डीजीसीए, बोइंग और एयरइंडिया हादसे के कारणों पर गहराई से गौर करेंगे और इस संबंध में (विमानन सुरक्षा में सुधार के संबंध में) उचित एक्शन भी लेंगे।

आज जरूरत इस बात की है कि देश के तमाम अंतरराष्ट्रीय और घरेलू हवाई अड्डों पर आपातकालीन प्रबंधन योजनाओं की समीक्षा और उनका अभ्यास अनिवार्य किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त हवाई अड्डों पर उपलब्ध अग्निशमन वाहन, एंबुलेंस, सुरक्षा कर्मचारियों की संख्या और उनके प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इस हादसे के कारणों की पारदर्शिता और ईमानदारी से गहन जांच होनी चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति होने से रोकी जा सके। इस विमान दुर्घटना में विदेशी लोग भी मारे गए हैं, हमारे अंदर उनके प्रति भी गहरी संवेदना का भाव होना चाहिए। उनके परिजनों के साथ हमें पूरा सहयोग करना चाहिए। मुआवजा जहां जरूरी हो, वहां वितरित होना चाहिए। राहत और बचाव के लिए एअर इंडिया, राज्य और केंद्र सरकार को मिलकर सामूहिकता से काम करना होगा। वास्तव में यह समय हम सभी के लिए संयम, सहायता, संवेदना और प्रार्थना का है। निश्चित ही, आज के समय में सुरक्षित विमान यात्रा एक बड़ी चुनौती है। इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हाल फिलहाल, देखना यह भी होगा कि एयरलाइन ऐसी घटनाएं दोबारा न होने देने के अपने वादे पर कितना खरा उतरता है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार, स्तंभकार व युवा साहित्यकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

विमान हादसों की पुनरावृत्ति चिंताजनक

त्रासदी

विकेश कुमार बडोला

अंतरराष्ट्रीय विमानन एजेंसियों के आंकड़ों के अनुसार अधिकतर विमान-दुर्घटनाएं उड़ान भरने और रनवे पर उतरने की समयावधि में ही होती हैं। कुल दुर्घटनाओं में 35 प्रतिशत तो उड़ान भरने या उसके तुरंत बाद ही होती हैं। विमान दुर्घटनाओं की त्रासदी झेलने वाले शीर्ष दस देशों में अमेरिका पहले स्थान पर है। सोचने वाली बात ये है कि जो दुनिया का सबसे समृद्ध और आधुनिक देश है वही क्योंकर विमान की दुर्घटनाओं को रोकने में विफल है। व्योम मार्गीय वैमानिकी-यात्रा दिनोंदिन असुरक्षित एवं भयाक्रांत होती जा रही है। विमान हादसों की पुनरावृत्ति अत्यंत चिंताजनक है। वायुयात्रा की असुरक्षा को भविष्य में हरसंभव विधि से दूर करने के उपाय किए जाने चाहिए।

बड़े आश्चर्य की बात है कि पाकिस्तान के आतंकी व सैन्य ठिकानों पर हमला करते हुए हमारी वायु सेना के युद्धक विमानों से फेंकी गई मिसाइलों ने वहां के नागरिक उड़ानों वाले हवाई जहाजों पर खरोंच तक नहीं आने दी, और यहां भारत में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री और चालक दल के सदस्यों समेत 242 यात्रियों को अहमदाबाद से लंदन लेकर जाने वाले एयर इंडिया के बोइंग ने उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद लड़खड़ाते हुए चिकित्सकों के आवासीय भवन से टकराकर आवासीय परिसर में रहने वाले 20-25 लोगों के भी प्राण लील लिए। दुर्घटनाग्रस्त विमान में सवार केवल एक व्यक्ति ही जीवित बच पाया। जब तक बचाव दल के लोग घटनास्थल पर पहुंचते, तब तक अधिसंख्य यात्रियों के मृत शरीर जलकर काले पड़ चुके थे। अधिकतर शव इस सीमा तक जले हुए मिले कि दिवंगतों की व्यक्तिगत पहचान के लिए अब समुचित डीएनए परीक्षण का ही सहारा है। चिकित्सकों के जिस आवास-परिसर से विमान टकराया था, वहां भीतर के दृश्य भी अत्यंत डरावने हैं। लगभग पूरा परिसर जलकर काला पड़ गया है। इस घटना ने भारत ही नहीं पूरी दुनिया को स्तब्ध कर दिया है। एकदम से किसी को कुछ भी नहीं सूझ रहा कि ऐसी दुर्घटना के संदर्भ में सरकार और जांच एजेंसियों की आगे की दशा-दिशा क्या होगी।

विमान अनुरक्षण के तकनीकी पक्ष के अनुसार आकलन होने पर यही पता चल रहा है कि विमान में कोई भी तकनीकी समस्या नहीं थी। इंजन, इत्यादि सभी उपकरण सुचारू रूप में कार्य कर रहे थे। विमान संबंधी सभी आवश्यक सहायक चीजें, वस्तुएं, सेवाएं व सुविधाएं विमान में उपलब्ध थीं। मुख्य और सहायक विमान-चालकों के पास विमान-चालन का दीर्घानुभव था। मौसम भी सामान्य था। वातावरण में विमान-यात्रा के लिए अनिवार्य दृश्यता में भी कोई कमी नहीं थी। हां, यदि उड़ान भरने के बाद किसी पक्षी के साथ विमान की टक्कर हुई होगी, तो घटना की आशंका उभरती है। लेकिन इसके लिए भी विमान-चालन कार्यदल आजकल अग्रिम सुरक्षा तैयारियों के साथ तैनात रहता है। उड़ान भरने के एक-दो मिनटों में ही विमान का हवाई-स्थल के रेडार-सिस्टम से डिस्कनेक्ट हो जाना भी आशंकाएं उत्पन कर रहा है। घटना के वास्तविक कारणों की पहचान के लिए केंद्र व राज्यों सरकारों को समुचित जांच करनी चाहिए। यह जांच हर संभव श्रेष्ठ उपायों व विधियों के आधार पर होनी चाहिए। इस घटना के आलोक में प्रगति एवं विकास का जो अभिशापित पक्ष दिखाई दिया है, उसने लोगों में असुरक्षा के गहरे भाव भर दिए हैं। विमान में सवार लोग साधारण लोग नहीं थे। सभी धनी और स्थापित लोग थे। इसलिए विमान या विमान संबंधी सेवाओं में कोई कमी रही होगी, इसकी संभावना भी नहीं के बराबर है। यात्रियों में इंग्लैंड के भी बहुत से निवासी थे, इसलिए वहां के प्रधानमंत्री भी इस घटना को लेकर असहज हैं। राज्य में यह पहली विमान-दुर्घटना नहीं है। गुजरात में 37 वर्ष पहले 1988 में ऐसी ही दुर्घटना हुई थी जिसमें 133 लोग मारे गये थे। तब इंडियन एयरलाइंस का मुंबई से अहमदाबाद आने वाला विमान हवाई-स्थल पर ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। कम दृश्यता के कारण विमान वृक्ष और बिजली के ट्रांसमिशन टॉवर से टकरा गया था। अंतरराष्ट्रीय विमानन एजेंसियों के

आंकड़ों के अनुसार अधिकतर विमान-दुर्घटनाएं उड़ान भरने और रनवे पर उतरने की समयावधि में ही होती हैं। कुल दुर्घटनाओं में 35 प्रतिशत तो उड़ान भरने या उसके तुरंत बाद ही होती हैं। विमान दुर्घटनाओं की त्रासदी झेलने वाले शीर्ष दस देशों में अमेरिका पहले स्थान पर है। सोचने वाली बात ये है कि जो दुनिया का सबसे समृद्ध और आधुनिक देश है वही क्योंकर विमान की दुर्घटनाओं को रोकने में विफल है। भारत में जो बड़ी विमान दुर्घटनायें हुई हैं, उनमें 31 मई 1973 को दिल्ली के पालम हवाई-स्थल पर दुर्घटनाग्रस्त हुई इंडियन एयरलाइंस की उड़ान 440, जिसमें 48 यात्रियों की मौत हो गई थी। इसके बाद, दुबई जाने वाली एयर इंडिया की उड़ान 855 मुंबई से उड़ान भरने के बाद अरब सागर में गिर गई थी। यह घटना 1 जनवरी 1978 को हुई। विमान में सवार सभी 213 लोगों की मौत हो गई। फिर इंडियन एयरलाइंस की उड़ान 113 वर्ष 1988 के 19 अक्टूबर को अहमदाबाद विमान-स्थल पर दुर्घटनाग्रस्त हुई, जिसमें 133 लोग मारे गये थे। सन् 1990 में 14 फरवरी को उड़ान संख्या 605 बेंगलुरू विमान-स्थल पर दुर्घटनाग्रस्त हुई, जिसमें 146 लोग मारे गये। सन् 1996 के 12 नवंबर को हरियाणा के चरखी दादरी में कजाकिस्तान एयरलाइंस की उड़ान 1907 की दुर्घटना में 349 लोग मारे गये थे। उड़ान 7412 वर्ष 2000 के 17 जुलाई को बिहार के पटना के घनी आबादी वाले आवासीय क्षेत्र में हादसे का शिकार हुई, जिसमें 60 लोग मारे गये थे। एयर इंडिया की एक्सप्रेस उड़ान 1344 जो कि 7 अगस्त 2020 को कोझिकोड कालीकट अंतरराष्ट्रीय विमान-स्थल पर रनवे पर फिसलने के कारण दो हिस्सों में बंट गई, जिसमें 21 लोग मारे गये। अहमदाबाद की विमान दुर्घटना से पहले दिसंबर 2024 के अंतिम सप्ताह में दक्षिण कोरिया का एक यात्री-विमान विमान-स्थल पर उतरते हुए दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। इस घटना में 179 लोग मारे गये थे। अंतरराष्ट्रीय नागरिक विमानन संगठन के पास उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 19वीं शताब्दी में 28 जून 1856 से लेकर 14 जुलाई 1897 तक कुल 5 वायु वाहन (यान या हाइड्रोजन गुब्बारा) दुर्घटनाग्रस्त या अदृश्य हुए थे। बीसवीं सदी में सन् 1901 से 1919 तक कुल 13 वाहनों के साथ दुर्घटना हुई। इनमें 11 लोग रहस्यमयी ढंग से अदृश्य हुए। इसी सदी में 1920 और 1939 की समयावधि में हुई 49 विमान दुर्घटनाओं में मृत 195 लोगों में से अधिसंख्य का पता नहीं चल पाया था। जैसे-जैसे दुनिया में वैज्ञानिक, औद्योगिक, यांत्रिक व प्रौद्योगिकीय उन्नति होती रही, उसी गति से वायुयान दुर्घटनाग्रस्त अथवा दुर्घटना में अदृश्य होते रहे। सन् 1940 और 1959 की अवधि में 75 विमान आकाश में अनियंत्रित हुए। इनमें 1160 लोग लापता थे। सन् 1960 से 1979 के मध्य 46 विमानों की दुर्गति हुई। इनमें 531 व्यक्ति काल-कवलित हुए। इसी प्रकार 1980 से 1999 के बीच 32 विमान-दुर्घटनाओं में 220 लोगों ने प्राण गंवाए।

इक्कीसवीं सदी में भी 2000 से 2019 के बीच कुल 18 घटनाओं में 295 लोगों की जानें गईं। इस समयावधि में 8 मार्च 2014 को मलेशिया एयरलाइन्स के बोइंग 777-200 ईआर की दुर्घटना भी सम्मिलित है। सन् 2019 तक यह सबसे बड़ी विमान दुर्घटना थी। इसमें 239 लोग सवार थे, जिनका आज तक कुछ भी पता नहीं चला है। इस तरह व्योम मार्गीय वैमानिकी-यात्रा दिनोंदिन असुरक्षित एवं भयाक्रांत होती जा रही है। भारत देश के शासन और वैमानिकी शिक्षण-प्रशिक्षण में कार्यरत प्रतिष्ठानों को विमान दुर्घटनाओं के परिचित, अपेक्षित और संभावित कारणों की भी सघन जांच-पड़ताल करनी होगी, ताकि वायुयात्रा को हर दृष्टि से सुरक्षित किया जा सके। विमान हादसों की पुनरावृत्ति अत्यंत चिंताजनक है। वायुयात्रा की असुरक्षा को भविष्य में हरसंभव विधि से दूर करने के उपाय किए जाने चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

शिव कोई नाम नहीं है

संकलित

दर्शन

मनुष्य की प्रकृति को समझने, हर तरह के मनुष्य के लिए एक रास्ता खोजने के अर्थ में, यह वाकई एक शाश्वत या हमेशा बना रहने वाला योगदान है। यह उस युग का या उस युग के लिए योगदान नहीं है। सृष्टि का अर्थ है कि जो कुछ नहीं था, वह एक-दूसरे से मिलकर कुछ बन गया। उन्होंने इस सृष्टि को खोलकर एक शून्य की स्थिति में लाने का तरीका खोजा। इसीलिए हमने उन्हें शिव नाम दिया। इसका अर्थ है 'वह जो नहीं है'। जब 'वह जो नहीं है', कुछ या 'जो कुछ है' बन गया, तो हमने उस आयाम को ब्रह्म कहा। शिव को यह नाम इसलिए दिया गया, क्योंकि उन्होंने एक तरीका, एक विधि नहीं, बल्कि हर संभव तरीका बताया कि चरम मुक्ति को कैसे पाएं, जिसका अर्थ है, कुछ से कुछ नहीं तक जाना। शिव कोई नाम नहीं है, वह एक वर्णन है। जैसे यह कहना कि कोई डाक्टर है, वकील है या इंजीनियर है, हम कहते हैं कि वह शिव हैं, जीवन को शून्य बनाने वाले। इसे जीवन के विनाशकर्ता के रूप में थोड़ा गलत समझ लिया गया, लेकिन वह भी सही है। बात मात्र यह है कि जब आप 'विनाशकर्ता' शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो लोग उसे बुरा समझ लेते हैं। अगर किसी ने 'मुक्तिदाता' कहा होता तो उसे अच्छा माना जाता। धीरे-धीरे 'शून्य करने वाला', 'विनाशकर्ता' बन गया और लोग यह सोचने लगे कि वह बुरे हैं। आप उन्हें कुछ भी कहिए, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता- बुद्धिमत्ता की प्रकृति यही है।

बच्चों को सुविधाओं से ज्यादा अच्छे संस्कार दें

संकलित

प्रेरणा

महाभारत में दो खास परिवार हैं, पहला पांडव और दूसरा है कौरव। पांडव परिवार में कुंती और पांच पुत्र थे। जबकि कौरव परिवार में धृतराष्ट्र और गांधारी के साथ ही सौ पुत्र थे। पांडवों के पास सुख-सुविधाओं का अभाव था, जबकि कौरवों के पास सारी सुख-सुविधाएं थीं। महाभारत में कुंती अपने पांच पुत्रों के साथ वन में रह रही थीं, क्योंकि धृतराष्ट्र और दुर्योधन नहीं चाहते थे कि पांडु के पुत्रों को राज्य मिले। धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन अधर्मी था। वह बचपन से ही पांडव पुत्रों को परेशान कर रहा था। कुंती के पति पांडु शाप की वजह से मर चुके थे। पांडु की दूसरी पत्नी माद्री भी जीवित नहीं थीं। इन दोनों के बाद कुंती को पांच पुत्रों का पालन करना था। तीन पुत्र कुंती के थे और दो पुत्र माद्री के थे। कुंती जानती थीं कि जंगल में तो कोई सुख-सुविधा तो मिलेगी नहीं, इसलिए कुंती ने बच्चों का पालन करते समय संस्कारों पर ज्यादा ध्यान दिया। दूसरी ओर कौरव पक्ष में धृतराष्ट्र अंधे थे, गांधारी ने भी आंखों पर पट्टी बांध ली थी। दुर्योधन और उसके भाई लगातार गलत काम कर रहे थे, लेकिन माता-पिता ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। नतीजा ये हुआ कि सभी कौरव पुत्र अधर्मी हो गए। महाभारत युद्ध में जब श्रीकृष्ण को ये निर्णय लेना था कि किसके पक्ष में रहेंगे, तब उन्होंने धर्म मार्ग पर चल रहे पांडव पुत्रों को चुना। धृतराष्ट्र और गांधारी ने अपने पुत्रों को सुख-सुविधा की हर एक चीज दी थी, लेकिन अच्छे संस्कार नहीं दिए थे। संतान के मोह में धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को सही-गलत का फर्क नहीं बताया। इस एक गलती की वजह से पूरा कौरव वंश नष्ट हो गया।

अंतर्मन

आज की पाती

अमरीका के सामने गिड़गिड़ाता पाकिस्तान

पाकिस्तान का जन्म ही झूठ की बुनियाद पर हुआ है। पाकिस्तान भारत के सामने ही नहीं, दुनिया को भी झूठ परोसना अपनी शान समझता है। झूठ पाक की फितरत बन गई है। पहलगाम हमले के बदले आपरेशन सिंदूर की कार्रवाई से पाकिस्तान घबराया हुआ है। भारत की 400 मिसाइलों के साथ सेना की पुरजोर तैयारी से खौफजदा पाकिस्तान हथियार खरीदने की अपील अमरीका से कर रहा है। भारत से मुकाबला करने में असमर्थ पाक के होश उड़ गए हैं। भारत की नई टेक्नोलॉजी से लैस सेना कई गुना ताकतवर है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ एक तरफ अपने लोगों को जीत का दावा कर रहे हैं। - सांकेत शर्मा, दुर्ग

करंट अफेयर

स्टोन क्रशर मशीनों को गंगा से दूर करने याचिका

उत्तराखंड के रायवाला और भोगपुर के बीच गंगा में जारी अवैध खनन पर गंभीर रुख अख्तियार करते हुए उच्च न्यायालय ने हरिद्वार जिले में 121 स्टोन क्रशर मशीनों को नदी से पांच किलोमीटर से अधिक की दूरी पर स्थानांतरित करने में अधिकारियों की कथित विफलता पर सवाल उठाए। न्यायमूर्ति रविंद्र मैठाणी और न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित की खंडपीठ ने रायवाला और भोगपुर के बीच गंगा में अवैध खनन के खिलाफ दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए पूछा कि क्षेत्र में स्टोन क्रशर मशीनों को स्थानांतरित करने के लिए उपयुक्त स्थानों का चयन अब तक क्यों नहीं किया गया? उच्च न्यायालय ने इस बात पर भी गहरी नाराजगी जताई कि स्टोन क्रशर मशीनों को नदी से पांच किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थानांतरित करने के लिए स्थानों का चिन्हीकरण किए जाने के संबंध में पूर्व में अदालत और राष्ट्रीय हरित अधिकरण के आदेशों पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गयी। अदालत ने मामले को 'अत्यधिक गंभीर' बताते हुए इस बात पर भी सवाल उठाया कि पहले बंद हो चुकी स्टोन क्रशर की 48 मशीनों को बिना उसकी अनुमति के दोबारा कैसे शुरू कर दिया गया।

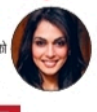

ऑफ बीट

युवा पीढ़ी में तेजी से बढ़ रहा अपेंडिक्स कैंसर का खतरा

दशकों तक, यह ऐसी बीमारी थी जिसका डॉक्टरों को करियर में एक या दो बार ही सामना करना पड़ता था, और यह अक्सर वृद्धों को होती थी। लेकिन अब एक आश्चर्यजनक और चिंताजनक प्रवृत्ति उभर रही है: अपेंडिक्स कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं, और यह तेजी से 30, 40 साल और यहां तक कि कम उम्र के लोगों को प्रभावित कर रहा है। इस बदलाव ने कई विशेषज्ञों को हैरान कर दिया है और वे इसका जवाब खोज रहे हैं। अपेंडिक्स बड़ी आंत से जुड़ी एक छोटी, उंगली के आकार की थैली होती है। शरीर में इसके उद्देश्य पर अब भी बहस होती है, लेकिन यह अपेंडिसाइटिस यानी एक दर्दनाक सूजन का कारण बनने के लिए सबसे ज्यादा जानी जाती है। 'एनल्स ऑफ इंटरनल मेडिसिन' में प्रकाशित एक नए अध्ययन से पता चला है कि 1970 के दशक के बाद पैदा हुए लोगों में अपेंडिक्स कैंसर के मामलों की संख्या में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। वास्तव में, 1940 के दशक में पैदा हुए लोगों की तुलना में युवा पीढ़ी में इसके मामलों में तीन गुना या चार गुना तक वृद्धि हुई है। कुल संख्या अब भी कम है क्योंकि अपेंडिक्स कैंसर हर साल प्रति दस लाख में से बहुत कम लोगों को होता है। लेकिन जितनी भी वृद्धि हो रही है, वह चौंकाने वाली है।

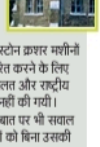

ट्रेंड

घायल लोगों से मुलाकात

अहमदाबाद विमान हादसे के बाद घायल लोगों से मुलाकात की, जिसमें एकमात्र जीवित बचा व्यक्ति भी है। उनको भरोसा दिलाया कि इस कठिन समय में हम उनके और परिवारों के साथ हैं। पूरा देश उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहा है।
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

निधन का समाचार दुखद

विमान दुर्घटना में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी के निधन का समाचार अत्यंत दुःखद है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और शोक संतप्त परिजनों को यह असीम पीड़ा सहन करने की शक्ति प्रदान करें।
-भजनलाल शर्मा, सीएम, राजस्थान

सख्त नियम जरूरी

सख्त नियमों से ही खत्म होगा सरकारी जमीन पर कब्जा एवं लंबित भू-अर्जन मामलों का निराकरण। रांची के डीसी के तर्ज पर सभी जिलों के उपायुक्त भी ऐसा प्रयास सुनिश्चित करें ताकि सरकारी जमीन का संरक्षण हो सके।
-दीपक बिरूआ, मंत्री, झारखंड सरकार

दिवंगतों को शांति मिले

अहमदाबाद में हुई दुर्भाग्यपूर्ण प्लेन क्रैश की घटना से मन बेहद दुखी और बोझिल है। ईश्वर दिवंगत मुसाफिरों व मेडिकल हॉस्टल के छात्रों को शांति दे और घायलों को शीघ्र स्वस्थ करें। ॐ शांति।
-ईशा कोप्पिकर, अभिनेत्री

अपने विचार

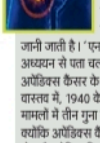

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से aapkepatra.haribhoomi@gmail.com पर भेज सकते हैं।

हिन्दुस्तान 1936

बड़े युद्ध की आशंका

एशिया में एक नया युद्ध भड़कने की आशंका जितनी दुखद है, उतनी ही चिंताजनक भी। इजरायल और ईरान के बीच विगत वर्षों से लगातार तनाव रहा है। इजरायल ने पहले भी ईरान में घुसकर प्रहार किया था और उसने ऐसी ही एक और बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। जवाब में ईरान ने भी अपने ड्रोन की मदद से इजरायल पर हमला बोला है। हालांकि, इजरायल की तुलना में ईरान की कार्रवाई बहुत मामूली है। इजरायल का हमला एकदम निश्चित लक्ष्यों पर था, जिससे ईरान के परमाणु प्रतिष्ठानों को भी नुकसान हुआ है और उसके कई आला सैन्य अधिकारियों की भी मौत हुई है। खबरें बताती हैं कि ईरान ने हमलों में कई कमांडरों और छह परमाणु वैज्ञानिकों को खो दिया है। ईरान के लिए सबसे बड़ा झटका उसके सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ जनरल मोहम्मद बाघेरी का मारा जाना है। बाघेरी को इजरायल का धुर विरोधी माना जाता था और इजरायल ने उन्हें निशाना बनाकर ईरान को साफ संकेत दे दिया है। ऐसे हमले पर ईरान को चौंकना नहीं चाहिए, क्योंकि वह भी इजरायल को कट्टर दुश्मन मानता है।

ऐसा नहीं है कि ईरान की ताकत इजरायल को पता नहीं। इजरायली अधिकारियों ने पहले ही खुलकर स्वीकार किया है कि ईरान जवाबी हमले कर सकता है। मतलब, इजरायल इस बात के लिए तैयार है कि उसे युद्ध या जवाबी हमले की स्थिति में कम से कम नुकसान हो। ईरान अपने स्तर पर इजरायल को जरूर नुकसान पहुंचाना चाहेगा और इसके लिए अनेक देश उसे उकसाना चाहेंगे। आज यही एक बड़ी चिंता की बात है। ईरान को यह देखना होगा कि वह महज जुनून के दम पर जंग में न उतर जाए। विगत दशकों में हमने पश्चिम एशिया में बहुत खूनखराबा देखा है, लाखों लोग मारे गए हैं। ऐसे में, अगर इजरायल और ईरान के बीच युद्ध बढ़ता है, तो बड़ी संख्या में लोग मारे जाएंगे। इराक व अफगानिस्तान की तबाही लोग भूले नहीं हैं और बीच में बसे ईरान की तबाही कोई नहीं चाहेगा। वैसे, ईरान विगत वर्षों में महज मजहबी जुनून के तहत जैसे फैसले ले रहा है, उससे चिंता होती है। ईरान को परमाणु बम बनाने की जल्दी है, जबकि अमेरिका के सहयोगी देश ऐसा नहीं चाहते। ईरान की इस कोशिश पर इजरायल को भी आपत्ति है और उसने यह साफ कर दिया है।

ईरान को देखना होगा कि वह महज जुनून के दम पर जंग में न उतर जाए। विगत दशकों में हमने पश्चिम एशिया में बहुत खूनखराबा देखा है। इस पर अंकुश लगाने की जरूरत है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या परमाणु बम ईरान के लिए इतना जरूरी है कि वह इसके लिए एक बड़े युद्ध में उतरकर बड़ा नुकसान झेलने को तैयार है। केवल ताकत की बात करें, तो परमाणु शक्ति बनना गलत नहीं है, पर इस शक्ति के बल पर किसी देश को नक्शे से मिटा देने की बात करना नाजायज है। सर्वोच्च ईरानी नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने इजरायल को कड़वे और दर्दनाक नतीजों की चेतावनी दी है। आज युद्ध और युद्ध के माहौल, दोनों से बचने की जरूरत है। कुछ लोगों के अहंकार की वजह से युद्ध में आम लोगों का खून नहीं बहना चाहिए। इसके साथ ही, यह मुस्लिम देशों के लिए भी अमन-चैन से सोचने का समय है। उन्हें मजहब की बुनियाद पर किसी भी गुटबाजी या जंग की हिमायत से बचना चाहिए। रही बात इजरायल की, तो अमेरिका ऐसे हर मौके पर पल्ला झाड़कर खड़ा हो जाता है। ऐसी चतुराई ठीक नहीं है। पश्चिम एशिया ही नहीं, पूरे एशिया में अमेरिकी नीतियों के पक्षपात या निष्पक्षता को एक बार जरूर परखना चाहिए। केवल कूटनीति से शांति को बहाल करना संभव नहीं है, शांति के लिए सबसे जरूरी है- अपनी नीयत और नीतियों में ईमानदारी।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 13 जून, 1950

चीनी-संकट की जांच

नई दिल्ली, 12 जून। भारत सरकार ने जुलाई-अगस्त 1949 के चीनी-संकट की जांच कराने का निश्चय किया है और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री गंगानाथ इस कार्य के लिए नियुक्त किये गये हैं। जांच मुख्यतः चीनी-संकट की ऐसी बातों के बारे में होगी, जिन पर तटकर बोर्ड पूरी तरह विचार नहीं कर सका था। आज कृषि मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति में इस बात की घोषणा करते हुए कहा गया कि चीनी उद्योग पर तटकर बोर्ड का प्रतिवेदन प्राप्त कर भारत सरकार ने 6 मार्च 1950 के प्रस्ताव में कहा था कि चीनी-संकट की और अधिक जांच के बारे में ध्यान दिया जा रहा है और इस संबंध में शीघ्र ही निर्णय किया जायेगा। सरकार ने अब तटकर बोर्ड के प्रतिवेदन की जांच पूरी कर ली है और संसद में दिये गये आश्वासन के अनुसार नीचे लिखे मामलों में जांच कराने का निश्चय किया है:- (1) चीनी कारखानों को 1948-49 में चीनी ढोने के लिए बहुत अधिक डिब्बे दिये गये। (2) 1949 में जो चीनी भारत में काम में आने को थी, उसे एक बड़े पैमाने पर पाकिस्तान भेज दिया गया। (3) अनेक कारखानों ने उत्तर प्रदेशीय सरकार के 26 अगस्त 1949 और केन्द्रीय सरकार के 2 सितम्बर 1949 के जब्ती के आदेशों को भंग कर चीनी बाहर भेजी गयी। (4) अनेक कारखानों या उनके व्यापारियों ने जुलाई-अगस्त 1949 में निर्धारित मूल्य पर भारी लाभ लिया। (5) मई-जून 1949 में उद्योगों के एक प्रवक्ता ने 50 हजार टन चीनी के निर्यात का प्रस्ताव किया था और बाद में वह प्रस्ताव वापस ले लिया गया। ऐसा किन परिस्थितियों में हुआ? (6) संकट से पूर्व कारखानों ने भारी मात्रा में चीनी अपने गोदामों में भेज दी थी, उत्तर प्रदेशीय तथा केन्द्रीय सरकार की जब्ती के आदेश के बीच के समय में बिहार के कारखानों से भारी मात्रा में चीनी हटायी गयी और जुलाई-अगस्त 1949 में चीनी का विभिन्न दिशाओं में भारी मात्रा में आवागमन हुआ, जिससे उसे ऊंचे मूल्यों पर बेचने में आसानी हो।

राज्यों को पेट्रोल राशन समाप्त करने की आज्ञा- नई दिल्ली, 12 जून। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार निकट भविष्य में प्रत्येक राज्य सरकार के पास आज्ञा भेजेगी कि वह अपने राज्य में पेट्रोल वितरण-व्यवस्था की स्थिति की जांच करे और आवश्यक समझे तो पट्रोल का राशन समाप्त कर दे।

इजरायल और ईरान का इम्तिहान

इजरायल का ईरान पर ताजा हमला बहुत चिंताजनक है। आज दुनिया में एक बहुत बड़ा सवाल है कि अरब और इस्लामी दुनिया इस हमले पर कैसी प्रतिक्रिया देगी?

यहां स्कैन करें

विवेक काटजू | पूर्व राजनयिक

शुक्रवार सुबह ईरान पर इजरायल के हमले ने दुनिया के एक बड़े इलाके में अभूतपूर्व और बहुत खतरनाक हालात पैदा कर दिए हैं। जिन इलाकों में तनाव फैला है, उनमें पश्चिम एशिया के साथ-साथ दक्षिण एशिया क्षेत्र भी शामिल है। इजरायली सशस्त्र बलों के मुताबिक, इजरायली हमला ईरान के परमाणु संवर्धन केंद्रों को तबाह करने के मकसद से किया गया है।

इजरायल का दावा है कि ईरान ने कम से कम नौ परमाणु बम बनाने के लिए पर्याप्त सामग्री का विकास कर लिया है। इसके अलावा, ईरान के पास ऐसी मिसाइल क्षमता भी है, जो उसे इजरायल पर भी हमला करने में सक्षम बनाती है। ऐसे में, इजरायल का दावा है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम इजरायल के अस्तित्व के लिए एक स्पष्ट व जीवंत खतरा पेश करता है। वास्तव में, पश्चिम एशिया में अपनी सुरक्षा को लेकर हमेशा सचेत रहा इजरायल कभी नहीं चाहेगा कि ईरान परमाणु हथियार विकसित कर ले।

बताया जाता है कि इजरायली हमले में करीब 200 एयरक्राफ्ट का इस्तेमाल किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, नतांज में ईरान के मुख्य परमाणु संवर्धन केंद्र पर हमला किया गया है और साथ ही, ईरान के कुछ सैन्य प्रतिष्ठानों को भी निशाना बनाया गया है। ऐसी रिपोर्ट है कि ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के प्रमुख मेजर जनरल हुसैन सलामी और साथ ही, सशस्त्र बलों के प्रमुख जनरल मोहम्मद बाघेरी मारे गए हैं। लगता है, इजरायल का ऑपरेशन राइजिंग लॉयन आने वाले दिनों में भी जारी रहने वाला है। इजरायल का यह बड़ा सैन्य अभियान तब तक जारी रह सकता है, जब तक कि वह अपनी मंजिल हासिल नहीं कर लेता है।

दूसरी ओर, ईरानी नेतृत्व ने भी कसमें खाईं कि वह जवाबी कार्रवाई करेगा। इजरायली कार्रवाई को ईरान ने हमले का एलान मान लिया है। अब उसकी चेतावनी को भी गंभीरता से लिया जा रहा है। गौर करने की बात है कि इजरायली सशस्त्र बलों ने अपने देश की जनता को मिसाइल और ड्रोन हमलों के लिए तैयार रहने के लिए सचेत किया है। इजरायल की आशंका गलत नहीं है, क्योंकि ईरान ने इजरायल पर जवाबी हमले शुरू कर दिए हैं। वह ड्रोन का इस्तेमाल कर रहा है।

शुक्रवार शाम तक जो हालात बने, उन्हें देखते हुए इसमें कोई शक नहीं कि इजरायल सैन्य हमले जारी रखेगा और ईरान भी मुकम्मल जवाब देना चाहेगा। हालांकि, शुक्रवार शाम जब मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं, तो ईरान-इजरायल संघर्ष से जुड़े अनेक सवालिया निशान सामने नजर आ रहे हैं। एक बड़े युद्ध की आशंका सामने मंडराने लगी है।

ताजा युद्ध या संघर्ष से जुड़े बड़े सवालों के साफ जवाब अगले 48 घंटों में सामने आ जाएंगे और इन जवाबों का भारत समेत पूरे क्षेत्र की सुरक्षा पर बहुत बड़ा असर होगा। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भारत के लाखों नागरिक अरब देशों में काम कर रहे हैं और इन देशों के साथ भारत के बहुत करीबी रिश्ते हैं। फिलहाल एक बड़ा सवाल यह है कि अरब-इस्लामी दुनिया ईरान पर इजरायल के हमले पर कैसी प्रतिक्रिया देगी? हम जानते हैं, इस्लामी दुनिया शिया और सुन्नी के बीच बंटी हुई है। हम यह भी जानते हैं कि एक तरफ, शिया देशों का नेतृत्व ईरान करता है। दूसरी तरफ, सऊदी अरब इस्लामी दुनिया का मुखिया होने का दावा करता है और इस्लामी सिद्धांतों के मामले में कट्टर वहाबी है। परंपरागत रूप से वहाबी मुसलमान शियाओं के बिल्कुल खिलाफ रहे हैं। हालांकि, ईरानी नेतृत्व इस्लामी दुनिया के सभी वर्गों से यही अपील करेगा कि वे अपने मतभेदों को भूलकर एकजुट होकर इजरायल के खिलाफ खड़े हो जाएं। ईरान मुस्लिम मुल्कों को यह बताना चाहेगा कि यह इस्लामी एकता दिखाने का समय है। हालांकि, यहां सवाल यह है कि क्या सुन्नियों की बहुसंख्या वाले मुस्लिम मुल्क शिया बहुल ईरान की अपील पर गौर फरमाएंगे? अगर तमाम मुस्लिम मुल्क ईरान की अपील पर गौर करते हैं, तो न सिर्फ इजरायल के खिलाफ, बल्कि पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका के खिलाफ भी बहुत गुस्सा फूट पड़ेगा।

सुन्नी बहुल इस्लामी मुल्कों की प्रतिक्रिया का एक संकेत ओमान द्वारा इजरायली कार्रवाई की निंदा में भी देखा गया है। ओमान के मुताबिक, इजरायली हमला एक खतरनाक बदलाव की ओर इशारा कर रहा है।

इजरायली हमले पर आ रही प्रतिक्रियाओं का एक और सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू तेल की आपूर्ति है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में, खासकर ऊर्जा आपूर्ति के संबंध में बड़ी चिंताएं पैदा होने लगी हैं। अब यह आशंका है कि इजरायल होर्मुज जलडमरूमध्य को बाधित करने की कोशिश करेगा, जिससे होते हुए सऊदी अरब और अन्य अरब देशों से तेल टैंकर चीन, भारत और दुनिया के अन्य देशों तक पहुंचते हैं। पूरी दुनिया को तेल की जरूरत है, अगर इजरायल-ईरान संघर्ष से तेल की आपूर्ति प्रभावित हुई, तो भारत सहित दुनिया के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर पड़ेगा।

फिलहाल, अमेरिका इस झटके से अछूता है, क्योंकि वह अब ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर है और वास्तव में वह दुनिया का सबसे बड़ा ऊर्जा उत्पादक भी है। हम देख सकते हैं, इस हमले की वजह से अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को तत्काल झटका लगा है। बाजार और निवेशकों की नकारात्मक प्रतिक्रिया शेयर बाजारों में भी जाहिर हो रही है। हालांकि, अगले कुछ दिनों में तस्वीर और साफ हो जाएगी। यकीनन, तेल आपूर्ति में किसी भी तरह की बाधा से ईंधन की कीमतें बढ़ेंगी, जिससे गरीब देशों पर विशेष रूप से बुरा असर पड़ेगा। यह संघर्ष या युद्ध अगर आगे बढ़ा, तो भारत सहित दुनिया के अनेक देशों की परेशानी बढ़ेगी। आने वाले दिनों में भारत को बहुत सावधानी के साथ पश्चिम एशिया संबंधी फैसले लेने पड़ेंगे। इजरायल के साथ भारत के बहुत अच्छे रिश्ते रहे हैं।

भारत को यह भी ध्यान रखना होगा कि अगर वह समझदारी भरी कूटनीति नहीं अपनाता है, तो उसके सम्मान और व्यापक इस्लामी दुनिया के साथ उसके संबंधों पर असर पड़ेगा। खास तौर पर अरब देशों में भारत के हितों को नुकसान पहुंच सकता है। शायद यही समय है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फिर यह कथन दोहराना होगा कि यह युद्ध व आतंकवाद का युग नहीं है। संघर्ष को जल्दी रोकने की तमाम उम्मीदों के बावजूद, एकमात्र आसान राह यही है कि ईरान विश्व समुदाय को आश्वस्त करे कि वह परमाणु सामग्री का उपयोग हथियार बनाने के लिए नहीं कर रहा है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

एआई पेशेवरों की बढ़ती मांग युवाओं के लिए बड़ा मौका

यहां स्कैन करें

शशांक द्विवेदी | असिस्टेंट प्रोफेसर, सेंट मार्गरेट इंजीनियरिंग कॉलेज

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा हाल ही में जारी *इंडियाज एआई रिवॉल्यूशनः ए रोडमैप टु डेवलप्ड इंडिया रिपोर्ट* के अनुसार, देश में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पेशेवरों की मांग तेजी से बढ़ती जा रही है। सरकार का अनुमान है कि अगले साल तक करीब 10 लाख एआई पेशेवरों की जरूरत होगी। उच्च शिक्षा, विशेष रूप से इंजीनियरिंग में एआई सीखने को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है।

आज एआई का उपयोग स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, रक्षा, परिवहन, ग्राहक सेवा, निर्माण, यहां तक कि न्याय प्रणाली में हो रहा है। भारत जैसे देश के लिए, जहां विशाल जनसंख्या, विविध समस्याएं और सीमित संसाधन हैं, एआई स्मार्ट समाधान प्रदान करने का सशक्त उपकरण बन सकता है। जैसे, कृषि में एआई आधारित ड्रोन और सेंसर किसानों को मिट्टी की गुणवत्ता, फसल की स्थिति और मौसम की जानकारी प्रदान कर सकते हैं। एआई से रोगों की शीघ्र पहचान और सटीक उपचार संभव हो रहा है। भारत जनरेटिव एआई परियोजना में दुनिया में दूसरे स्थान पर है। अब 80 प्रतिशत भारतीय कंपनियां एआई को प्राथमिकता देती हैं। 69 प्रतिशत कंपनियों ने तकनीकी निवेश को बढ़ाने की योजना बनाई है। देश में पहले से ही कई एआई मॉडल मौजूद हैं। इनमें भारत जेन, डिजिटल इंडिया भाषानी, सर्वम-1एआई मॉडल, चित्रलेखा, हनुमान एवरेस्ट 1.0 इत्यादि हैं। भारत के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) बाजार में 25-35 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है।

उद्योग जगत की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह एआई में निवेश करे और इंटर्नशिप व लाइव प्रोजेक्ट्स के जरिये युवाओं को तैयार करे।

इस रिपोर्ट में कई प्रमुख बिंदु सामने आए हैं। मसलन, एआई विशेषज्ञ तैयार करने के लिए देश भर में हाई परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे उद्योगों और आम जनता तक एआई की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए विशेष योजनाएं शुरू की जाएंगी। रिपोर्ट में एआई के नैतिक उपयोग, उसके आंकड़ों की निजता और साइबर सुरक्षा पर भी जोर दिया गया है। अगर भारत को एआई क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करना है, तो एआई शिक्षण-प्रशिक्षण को प्राथमिकता देनी होगी। अभी एआई से संबंधित पाठ्यक्रम चुनिंदा उच्च शिक्षण संस्थानों तक सीमित हैं। इस स्थिति में व्यापक बदलाव की जरूरत है। विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों को एमएल (मशीन लर्निंग), डाटा साइंस, रोबोटिक्स, क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे विषयों को अनिवार्य रूप से शामिल करना होगा। आईटीआई, पॉलिटेक्निक और स्किल डेवलपमेंट सेंटर को भी एआई आधारित कोर्स शुरू करने चाहिए। सरकार के साथ-साथ उद्योग जगत की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह एआई के क्षेत्र में निवेश करें, इंटर्नशिप और लाइव प्रोजेक्ट्स के माध्यम से युवाओं को व्यावहारिक अनुभव दे। देश की कई आईटी कंपनियां, जैसे टीसीएस, इन्फोसिस, विप्रो, एचसीएल पहले से ही एआई आधारित प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही हैं। इनके साथ साझेदारी कर विश्वविद्यालयों को शोध और नवाचार के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जहां एक ओर एआई अपार संभावनाएं लेकर आ रहा है, वहीं इसकी राह में कई चुनौतियां भी हैं। मसलन, कुशल प्रशिक्षकों की कमी, हाई-एंड कंप्यूटिंग संसाधनों की सीमित उपलब्धता, डेटा सुरक्षा और गोपनीयता से जुड़े मुद्दे, ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी, पारंपरिक नौकरियों में ऑटोमेशन के कारण लोगों में नौकरी जाने का डर। इन सभी मुद्दों के समाधान के लिए समग्र नीति, स्थानीय भाषाओं में प्रशिक्षण और समावेशी तकनीकी विकास जरूरी है।

भारत में पहले ही कई पहल की जा चुकी हैं। 'नेशनल प्रोग्राम ऑन एआई' के तहत नीति आयोग द्वारा एआई को स्वास्थ्य, शिक्षा, स्मार्ट सिटीज और कृषि में बढ़ावा दिया जा रहा है। डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों में एआई को रणनीतिक तकनीक के रूप में शामिल किया गया है। स्कूली छात्रों को एआई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। भारत के पास युवाओं की विशाल आबादी, आईटी विशेषज्ञता और नवाचार की प्रवृत्ति है। इसलिए 10 लाख एआई पेशेवरों की आवश्यकता सिर्फ एक आंकड़ा नहीं है, यह एक आमंत्रण है युवाओं के लिए, शैक्षणिक संस्थानों के लिए और उद्योगों के लिए कि वे इस परिवर्तन का हिस्सा बनें।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

सेवा से पाइए संतुष्टि

जब तुम्हें ऐसा कुछ करना है, जो तुम नहीं कर सकते, तब तुम विश्राम नहीं कर सकते और तुम तब भी विश्राम नहीं कर सकते, जब तुम्हें लगता है कि तुम्हें वह बनना है, जो तुम नहीं हो। तुम्हें ऐसा कुछ नहीं करना, जो तुम नहीं कर सकते। तुमसे वह देने के लिए नहीं कहा जाएगा, जो तुम नहीं दे सकते। तुमसे ऐसी कोई अपेक्षा नहीं की जाती, जो तुम नहीं कर सकते। जितना तुम कर सकते हो, केवल वही तुम्हारे हिस्से की सेवा है और कोई भी यह नहीं चाहता कि जो तुम नहीं हो, वैसे बनो।

यह समझ तुम्हें गहरा विश्राम देती है। यदि तुममें आकांक्षा या आलस्य है, तो तुम विश्राम नहीं कर सकते। दोनों ही गहरे विश्राम के विरुद्ध हैं। एक आलसी व्यक्ति रात भर करवटें बदलेगा, बेचैन रहेगा और एक आकांक्षी व्यक्ति अंदर ही अंदर जलेगा। गहन विश्राम तुम्हारी कलाओं और योग्यताओं को उभारता है और तुम्हें अपने स्वरूप के समीप लाता है। थोड़ा सा भी यह आभास कि ईश्वर तुम्हारे साथ हैं, गहरा विश्राम लाता है। प्रार्थना, प्रेम तथा ध्यान गहन विश्राम के विशिष्ट रस हैं।

याद रखो, कार्य करना तुमको इतना नहीं थकाता, जितना कर्ता-भाव। तुम्हारी सभी प्रतिभाएं दूसरों के लिए हैं। यदि तुम सुरीला गाते हो, तो वह दूसरों के लिए है, यदि तुम स्वादिष्ट भोजन बनाते हो, तो वह दूसरों के लिए, अच्छी पुस्तक लिखते हो, तो वह भी दूसरों के पढ़ने के लिए। यदि तुम अच्छे बढ़ई हो, तो इसलिए कि दूसरों के इस्तेमाल के लिए अच्छी चीजें बना सको। यदि तुम एक निपुण सर्जन हो, तो दूसरों को स्वस्थ करने के लिए हो। यदि तुम अच्छे शिक्षक हो, तो वह भी दूसरों के लिए। तुम्हारे सभी कार्य, सभी निपुणताएं दूसरों के लिए हैं। अपनी प्रतिभाओं, निपुणताओं का उपयोग करो, अन्यथा वे तुम्हें पुनः नहीं दी जाएंगी। सेवा करते समय यह कभी मत सोचो कि तुम किसी पर एहसान कर रहे हो। सेवा का फल तुम्हें तुरंत मिलता है। इसका पुरस्कार निश्चित है और जितनी सेवा तुमने की है, उसकी तुलना में पुरस्कार हमेशा कहीं अधिक ही होता है। मगर पुरस्कार की आशा सेवा को श्रम में बदल देती है।

यदि तुम सोचते हो कि बहुत सेवा कर चुके, तब तुम बहुत कम करोगे; जब तुम यह सोचते हो कि तुमने बहुत कम सेवा की है, तब और अधिक कर सकोगे। गौर करना, श्रम में पुरस्कार मिलने पर भी शिकायतें रहती हैं। सेवा में कोई शिकायत नहीं होती, चाहे तुम्हें तुरंत कोई फल न भी नजर आए। सेवा करने का कोई भी अवसर मिले, तो कृतज्ञ महसूस करो। अदूरदर्शी व्यक्ति ही अल्पकालीन लाभ देखते हैं, दूरदर्शी दीर्घकालीन। चाहे तुम खुद को बुद्धिमान समझो या न समझो, सेवा से छुटकारा नहीं। सेवा तुम्हें तृप्ति देती है और दीर्घकालीन पुण्य भी।

श्रम में पुरस्कार मिलने पर भी शिकायतें रहती हैं। सेवा में कोई शिकायत नहीं होती, चाहे तुम्हें तुरंत कोई फल न भी नजर आए। सेवा करने का कोई भी अवसर मिले, तो कृतज्ञ महसूस करो।

श्री श्री रविशंकर

सचिन तेंदुलकर | पूर्व क्रिकेटर

खेल का मतलब सिर्फ मौज-मस्ती नहीं है; यह टीमवर्क को बढ़ावा देता है और हमें अनुशासन भी सिखाता है। इसलिए हरेक बच्चे के खेलने, सीखने और आगे बढ़ने के अधिकारों की रक्षा के लिए मिलकर काम कीजिए।

हादसे की ऊंचाई से गिरते सवाल

किसी ने नहीं सोचा था कि 12 जून, 2025 का दिन भारत के नागरिक उड्डयन क्षेत्र पर एक गहरा धब्बा छोड़ जाएगा। इस दिन अहमदाबाद से लंदन के गैटविक एयरपोर्ट के लिए उड़ान भर रहा एअर इंडिया का विमान टेकऑफ के कुछ ही मिनटों के भीतर क्रैश हो गया। यह हादसा न केवल 242 जिंदगियों को लील गया, बल्कि पूरे राष्ट्र की आत्मा को भी झकझोर गया।

एअर इंडिया के इस ड्रीमलाइनर विमान को 'आधुनिकतम सुरक्षा तकनीक' से लैस बताया जाता था। फिर सवाल उठता है, कैसे हुआ यह हादसा? क्या विमान में पहले से कोई तकनीकी गड़बड़ी थी? क्या मेंटिनेन्स में लापरवाही बरती गई? या फिर यह एक दुर्भाग्यपूर्ण संयोग था। देखा जाए, तो यह केवल तकनीकी विफलता नहीं है, यह हमारी प्रणाली की असफलता भी है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय की क्या भूमिका थी? क्या विमान के उड़ान भरने से पहले उसका समुचित परीक्षण हुआ था? क्या ग्राउंड स्टाफ ने किसी खामी की अनदेखी की थी? ये सारे सवाल अब जनता के हैं। हादसों के बाद हम अक्सर संवेदनाएं प्रकट करते हैं, मोमबत्तियां जलाते हैं, सोशल मीडिया पर पोस्ट डालते हैं और फिर भूल जाते हैं। लेकिन इस बार कुछ बदलना होगा। यह केवल एक हादसा नहीं, बल्कि एक चेतावनी है। यह हमें बताता है कि आधुनिक तकनीक और चमकदार हवाई जहाज भी अगर सिस्टम की लापरवाही के साथ उड़ें, तो वे जानलेवा बन जाते हैं।

इस हादसे के बाद हमें दो काम जरूर करने चाहिए। पहला, पीड़ित परिवारों को हरसंभव सरकारी, कानूनी और मानसिक मदद दी जाए। और दूसरा, यह तय किया जाए कि भारत में कोई भी विमान उड़ने से पहले सौ बार जांचा जाए। हमारे लिए यह समय केवल शोक का नहीं, उत्तरदायित्व का भी है। यदि हम सिर्फ दुख मनाकर चुप हो जाएंगे, भूल जाएंगे, तो ऐसे हादसे फिर होंगे। हवाई यात्रा अब सुरक्षा चुनौती बनती जा रही है। हमें इस बात की भी चिंता करनी होगी कि क्या भारत में नागरिक उड्डयन का निजीकरण और कम लागत की प्रतिस्पर्द्धा यात्रियों की सुरक्षा से समझौता करवा रही है? क्या पायलटों की थकावट, टेक्निकल स्टाफ की कमी और मुनाफे की भूख ऐसी त्रासदियों को जन्म दे रही हैं? अगर हां, तो हमें पूरी गंभीरता से निर्णय लेना होगा- सुरक्षा पहले या सुविधा?

उन सभी यात्रियों को हमारी श्रद्धांजलि है, जो सिर्फ मंजिल की आशा लेकर चले थे, और अब हमारी यादों का हिस्सा बन गए हैं। वे लौटकर नहीं आएंगे, लेकिन अगर हमने उनकी याद में अपने सिस्टम को बेहतर बना दिया, तो शायद उनके जाने का कोई अर्थ रह जाएगा।

प्रियंका सौरभ, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

विमान हादसा

कोई अनहोनी कहकर नहीं आती

किसी अनहोनी की सूचना पहले ही मिल जाए, तो वह अनहोनी ही क्या? नियति को क्या मंजूर होता है, यह कोई नहीं जानता। अहमदाबाद में लंदन की उड़ान भरने वाले वायुयान का दुर्घटनाग्रस्त होना बेहद दुख का विषय है। उच्च तकनीकी युग में लंबी उड़ान के वायुयान का इस प्रकार से दुर्घटनाग्रस्त होना कि सभी यात्री एवं विमान के क्रू मेंबर्स काल के गाल में समा जाएं, गहन चिंता का विषय है। सर्वविदित है कि विगत कुछ बरसों में विमान यात्राओं का चलन बढ़ा है। विदेश यात्राएं वायुयान द्वारा ही सुगम होती हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उड़ानों के संचालन में पूर्ण सावधानी बरती ही जाती है, फिर भी ऐसी दुर्घटनाएं पीड़ित परिवारों को जीवन भर का दंश दे जाती हैं। ऐसा नहीं है कि इस दुर्घटना के कारणों की जांच नहीं होगी। जांच भी होगी तथा कारणों का खुलासा भी होगा, फिर भी आवश्यक है कि विमान दुर्घटनाओं को रोकने के लिए विशेष सावधानी बरती जाए, ताकि ऐसे हृदय विदारक हादसों से बचा जा सके।

सुधाकर आशावादी, टिप्पणीकार

दर्दनाक है। दुखद और हृदय विदारक। तस्वीरें इतनी भयावह कि रोंगटे खड़े हो जाएं। आग के गुब्बारे में कमोबेश 241 यात्री असमय काल-कवलित हो गए। विडंबना देखिए, इसमें गुजरात के पूर्व सीएम विजय रूपाणी भी सवार थे। हादसा न केवल हृदय विदारक है, अपितु एअर इंडिया के विमान परिचालन तंत्र, एयर ट्रैफिक कंट्रोल एवं सेफ्टी तथा सरकार की कंट्रोल ऐंड कमांड पॉलिसी पर भी सवालिया निशान हैं। यह ठीक है कि हादसे को हम और आप नहीं रोक सकते हैं, लेकिन उसके विरुद्ध तंत्र तो विकसित कर सकते हैं। आज देश में न तो सड़क, न रेल और न ही एयर परिचालन को फूलप्रूफ माना जा सकता है। हम और आप कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। इतनी तरक्की के बाद भी एंटी क्रैश मेकनिज्म हम क्यों नहीं डेवलप कर पाए? दुर्घटनास्थल के मंजर और झुलसे शवों से क्या भविष्य में हम कोई सबक लेंगे?

हर्ष वर्द्धन, टिप्पणीकार

सावधानी बरतने के बाद भी अगर विमान उड़ते ही गिर गया, तो कहीं न कहीं तकनीकी खराबी मानी जा सकती है। माता-पिता, बच्चे, व होनहार डॉक्टर, जो दुर्घटना के शिकार हुए, वे देश की एक बहुत बड़ी क्षति है। इसमें जान-माल का जो भारी नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई होना संभव नहीं है। एअर इंडिया की विश्वसनीयता को भी आघात पहुंचा है। हालांकि, जांच चल रही है, फिर भी अनहोनी तो अनहोनी ही है।

शकुंतला महेश नेनावा, टिप्पणीकार

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 14-06-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH14 User: dilip.lal Time: 06-13-2025 22:44 Color:

संवाद
नवभारत टाइम्स
नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । शनिवार, 14 जून 2025

एक और युद्ध ?

ईरान पर इस्राइली हमले से अनिश्चितता

इस्राइल ने ईरान के 'परमाणु कार्यक्रम ठिकानों' पर अचानक हमला करके न सिर्फ सबको चौंका दिया है बल्कि इस पूरे क्षेत्र को अनिश्चितता के भंवर में डाल दिया है। अमेरिका ने तत्काल यह साफ किया कि इस कार्रवाई में वह शामिल नहीं है। वहीं, यह लगभग तय माना जा रहा है कि ईरान जवाबी कार्रवाई करेगा।

निशाने पर परमाणु केंद्र

नया ऑपरेशन । इस्राइल ने ईरान के खिलाफ अपनी कार्रवाई को ऑपरेशन राइजिंग लायन नाम दिया है, जो बताता है कि यह अपने आप में महज एक कार्रवाई नहीं बल्कि नया सिलसिला हो सकता है। हमलों का व्यापक रूप भी इसकी गंभीरता को स्पष्ट कर देता है।

छिड़ेगी जंग । ईरान ने माना है कि इन हमलों में उसके कम से कम छह परमाणु वैज्ञानिक मारे गए। यही नहीं, ईरान के सबसे बड़े सैन्य अधिकारी इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स (IRGC) के चीफ हुसैन सलामी के भी मारे जाने की खबर है। ईरान ने जवाबी कार्रवाई का इरादा भी जता दिया है।

दुष्प्रभावों की शुरुआत । इस्राइली कार्रवाई के वैश्विक दुष्प्रभावों का संकेत इसी एक तथ्य से मिल जाता है कि पहले हमले के कुछ घंटों के अंदर अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें 13% बढ़ गईं। इसमें दो राय नहीं कि इस्राइल लंबे समय से कहता रहा है कि ईरान को परमाणु हथियार विकसित करने से हर हाल में रोका जाए और जरूरी हो तो उसके लिए बल प्रयोग से भी हिचका न जाए। उसका कहना है कि ईरान इस स्थिति में आ गया था कि कुछ दिनों के अंदर 15 परमाणु बम बना सकता था।

अमेरिका से बातचीत । इस्राइल के इन आरोपों की स्वतंत्र तौर पर पुष्टि नहीं हुई है। यह बात भी सच है कि इस मसले पर अमेरिका से ईरान की बातचीत चल रही थी। रविवार को दोनों पक्षों में अगले दौर की वार्ता होनी थी। ऐसे में इस्राइल की अचानक की गई इस कार्रवाई के बाद सभी पक्षों की नजरें इस पर टिक गई हैं कि आगे घटनाक्रम कैसा रूप लेता है।

ईरान का रुख । सबसे बड़ा सवाल यह है कि ईरान की जवाबी कार्रवाई का स्वरूप कैसा और उसका दायरा कितना बड़ा होता है। वह खुद को इस्राइल के खिलाफ सांकेतिक कार्रवाई तक सीमित रखता है या अमेरिकी दूतावासों व अन्य ठिकानों को भी जद में लेता है या होरमुज की खाड़ी से गुजरते जहाजों को भी निशाना बनाता है जहां से 21% ग्लोबल तेल की सप्लाई होती है।

दो दूनी चार

OTP ज़रूरी है ?

रमेश तिवारी

Suspected Spam ! मेरे मित्र के मोबाइल फोन की स्क्रीन पर यही लिखा आ रहा था। फिर भी उन्होंने फोन उठा लिया। दूसरी तरफ से पूछा, आप फलां बोल रहे हैं? दोस्त ने कहा, आप बताएं। उधर से आवाज आई, आपकी लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी कैंसल होने जा रही है।

दोस्त समझ गया, पॉलिसी री-एक्टिव करने के नाम पर ठगी हो सकती है। फोन काट दिया, नंबर ब्लॉक कर दिया, रिपोर्ट कर दिया। उसने मुझसे इसकी चर्चा की, चिंता जताई कि कभी दिमाग इतना नहीं चल पाया तो? इस चिंता का जवाब कई बार सरकारी नुमाइंदों की ओर से दिया गया है। अनजाने नंबरों से आने वाली कॉल्स का जवाब न दें। इस सलाह पर कई मित्रों ने कहा कि ये कैसे किया जा सकता है, अगर जरूरी कॉल हो तो? मैंने कहा कि हो सकता है कॉल जरूरी हो, लेकिन जब तक कोई ठोस उपाय नहीं निकलता, अभी यही करते रहना चाहिए।

असल में कॉल, OTP इत्यादि को हमारे मन की तह तक जरूरी बना दिया गया। ऑनलाइन शॉपिंग करिए, OTP शेयर करना ही होगा। कैब बुक करिए, OTP शेयर करना ही होगा। भले ही सरकार की ओर से बार-बार बताया जाए कि किसी को OTP शेयर नहीं करना है, हमें रोजाना के काम में OTP शेयर करने के लिए मजबूर किया जाता है। एक आम आदमी कैसे फर्क करेगा कि कैब कंपनी को OTP शेयर करना है, लेकिन फलां कंपनी को नहीं। अगर किसी का फोन आए और कहे कि बैंक से बोल रहे हैं, इंश्योरेंस कंपनी से बोल रहे हैं, स्टॉक ब्रोकिंग कंपनी से बोल रहे हैं...लगता है कि सच ही बोल रहा होगा।

अब जाकर सिस्टम का ध्यान इस ओर जा रहा है। स्टॉक मार्केट रेगुलेटर सेबी ने एक नई व्यवस्था बनाई है। इसमें निवेशक को पता चल जाएगा कि वह जिसे पैसा ट्रांसफर कर रहा है, वह सेबी के पास रजिस्टर्ड है या नहीं। जो रजिस्टर्ड होंगे, उनका ऑनलाइन हैंडल @valid के रूप में होगा, जो अक्टूबर से लागू होगा। प्लान है कि ये हैंडल सिर्फ उन वाजिब हाथों को बैंकों के जरिये दिया जाए, जिनका निवेशकों से लेना-देना है। निवेशक इसी हैंडल पर थोड़ा यकीन रखते हुए UPI पेमेंट कर सकेंगे। UPI के मामले में ये इसलिए जरूरी है कि इस मोड से रोज 5 लाख रुपये ट्रांसफर किए जा सकते हैं।

ट्रांजैक्शन के सिलसिले में वित्तीय संस्थाओं की ओर से जो भी कॉल की जाती है, उसमें '1600xx' नंबर सीरीज का इस्तेमाल करने के लिए भी कहा गया है। बैंकों को कहा गया है कि उनके वेब अड्रेस को .bank.in से लिंक किया जाए। ये काम भी 31 अक्टूबर तक पूरा किया जाना है। जो लोग बैंकों से मिलते जुलते नाम की फर्जी वेबसाइट के जरिये धोखाधड़ी करते हैं, उन्हें इससे झटका लगेगा। बैंकों को OTP छोड़कर सत्यापन के लिए दूसरी सुरक्षित तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने की भी खबरें आई हैं। वैसे भी OTP कई बार आते भी नहीं, जिससे ट्रांजैक्शन अटक जाता है। साइबर फ्रॉड की चुनौतियों से निपटने के लिए इन कदमों से काफी राहत मिलने की उम्मीद की जा सकती है।

ऑफ़ दि ट्रैक

सूरज में क्या छिपा है

दिलीप लाल

इतिहास में पहली बार वैज्ञानिकों ने सूर्य के रहस्यमय दक्षिणी ध्रुव की तस्वीरें ली हैं। यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) के सोलर ऑर्बिटर यान द्वारा खींची गई ये तस्वीरें दो दिन पहले सार्वजनिक की गईं। इनसे सूर्य के उस भाग की झलक मिली है, जिसे पहले कभी किसी इंसान या यान ने नहीं देखा था। धरती और अन्य ग्रह सूर्य के भूमध्य रेखा के आसपास की कक्षा में परिक्रमा करते हैं, लेकिन सोलर ऑर्बिटर ने अपनी कक्षा को सूर्य की भूमध्य रेखा से 17 डिग्री नीचे झुकाया, जिससे दक्षिणी ध्रुव पहली बार स्पष्ट रूप से सामने आया। इन तस्वीरों में चुंबकीय क्षेत्र की उलझन, रासायनिक तत्वों की गतियों का विवरण है। इनसे अंतरिक्ष मौसम, सौर पवन और सूर्य की 11 वर्षीय गतिविधि चक्र को समझने में मदद मिलेगी। खास बात यह है कि सूरज के दक्षिणी ध्रुव पर उत्तर और दक्षिण ध्रुव के गुण वाले चुंबकीय क्षेत्र एक साथ दिखे हैं, जो यह संकेत देते हैं कि सूर्य का चुंबकीय क्षेत्र पलटने वाला है। यह परिवर्तन हर 11 वर्षों में होता है। आने वाले वर्षों में सोलर ऑर्बिटर शुक्र की गुरुत्वाकर्षण सहायता से अपनी कक्षा को और अधिक झुकाएगा, जिससे 2029 तक सूर्य के ध्रुवों की और भी बारीक झलक संभव हो सकेगी।

ऐसी व्यवस्था चाहिए, जिसके केंद्र में शोकग्रस्त परिवार हों

जो चले गए, उन्हें याद रखना है

अमित सिंह

जब भी कोई हवाई दुर्घटना खबर बनती है, तब लोगों का ध्यान कुछ समय के लिए मुड़े-तुड़े मेटल के टुकड़ों, ब्लैक बॉक्स और प्रेस ब्रीफिंग्स पर चला जाता है। एक्सपर्ट्स मौसम, मशीनी खराबी या पायलट की गलती जैसे कारणों पर चर्चा करते हैं। लेकिन जिस तेजी से ऐसी खबरें सुर्खियां बनती हैं, उसी तेजी से गायब भी हो जाती हैं। जिन लोगों ने इन हादसों में परिजनों को गंवाया होता है, उनकी सोचिए। ऐसे हर हादसे से परिजनों की जिंदगी हमेशा के लिए बदल जाती है।

हादसे की त्रासदी । एयर इंडिया हादसे का भी सबसे भयावह पहलू यही है कि किसी मां को अपने बच्चे की परवरिश अकेले करनी पड़ेगी। किसी का रोल मॉडल भाई अब दुनिया में नहीं रहा। जो बचाव कार्य में लगे हैं, वे इस हादसे की तस्वीरों को क्या कभी भूल पाएंगे?

मेंटल हेल्थ । कुछ को लगता है कि इंश्योरेंस या मुआवजे से मृत व्यक्ति के परिजनों का काम चल जाएगा। लेकिन सच क्या है? स्टडी से पता चला है कि नॉन-इंश्योर्ड या अंडर-इंश्योर्ड कॉस्ट उससे 70% अधिक हो सकती है, जो बीमा के तहत मिलती है। परिजन ऐसे हादसों में अपने अजीज शख्स को ही नहीं गंवाते, उन्हें आगे की जिंदगी में अक्सर कोई मदद नहीं मिलती। वे जिन ट्रॉमा का शिकार होते हैं, उससे उबरने के लिए वर्षों थेरपी की जरूरत पड़ सकती है। फिर मेंटल हेल्थ शायद ही इंश्योरेंस में कवर होता है।

कानूनी पहलू । मुआवजे से मौजूदा आय की तो भरपाई हो सकती है। मगर किसी का करियर ग्राफ अभी ऊपर जाना ही शुरू हुआ है और हादसे में उसकी जान चली गई, तब क्या? परिजनों ने उसे लेकर जो सपने देखे थे, वे कभी पूरे नहीं हो पाएंगे। कई मामलों में वाजिब मुआवजा पाने की कानूनी लड़ाई भी लंबी और खर्चीली हो सकती है। ऐसे हादसों में जो जान गंवाते हैं, उनमें से कइयों को घर बदलना पड़ता है, बच्चों को महंगे स्कूल से निकालने की नौबत आ जाती है या घर के बड़े-बुजुर्गों की देखभाल के लिए किसी को नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसी कॉस्ट किसी स्प्रेडशीट में जगह नहीं बना पाती।

मानवीय नजरिया हो

- शोकग्रस्त परिजनों की मेंटल हेल्थ का सवाल
- जांच-बचाव कार्य में लगे लोगों की फिक्र की जाए
- पीड़ित परिवारों को लीगल हेल्प मिले

ट्रॉमा का दायरा । उन लोगों की भी सोचिए, जो घटनास्थल पर सबसे पहले पहुंचते हैं या जो हादसे की जांच करते हैं। क्रैश के बाद पसरी खामोशी में वे घटनास्थल पर पहुंचते हैं। वे मलबे का मुआयना करते हैं। कॉकपिट वॉइस रेकॉर्डर्स को सुनते हैं कि हादसे से ऐन पहले क्या बात हो रही थी। वे जवाब पाने के लिए पीड़ितों के परिजनों से बात करते हैं। इन बातों से उनके मन पर भी गहरा असर होता है। ट्रॉमा के कारण उनकी भी नींद उड़ जाती है। मगर इन लोगों को भी साइकोलॉजिकल सपोर्ट नहीं मिलता।

व्यवस्था में सुधार । अक्सर हादसे से पहले उसके संकेत मिलते हैं और ICAO 2019 State Safety Briefing report से इस मामले में चिंता बढ़ती है। भारत का State Safety Programme foundation सिर्फ 57.34% पर है और इसके किसी भी सेफ्टी इंडेक्स का स्कोर 1 से अधिक नहीं है। इसका मतलब यह है कि देश में जिस तरह से एयर ट्रैफिक बढ़ा है, उसकी निगरानी की क्षमता नहीं बढ़ी। लाइसेंसिंग, सर्टिफिकेशन, संभावित खतरों की पहचान और सेफ्टी को बढ़ावा देने के मामले में प्रदर्शन खराब है। इससे वैसे जोखिम का पता चलता है, जो आगे चलकर बड़े खतरे में बदल सकते हैं। अगर निगरानी व्यवस्था अच्छी हो तो इन खतरों को रोका जा सकता है।

इंसान सर्वोपरि । एविएशन इंडस्ट्री में गलतियों से सबक सीखने पर ध्यान दिया जाता है न कि किसी पर अंगुली उठाने में। यह अच्छा है, लेकिन हमें ऐसी संस्कृति की जरूरत है, जिसमें मानवीय क्षति को सबसे ऊपर रखा जाए।

- शोकग्रस्त परिवार को वास्तविक मदद दी जाए।
- हादसे की जांच व बचाव करने वालों को साइकोलॉजिकल केयर मिले।
- परिजनों को लीगल और फाइनैंशल सिस्टम से जूझने में मदद दी जाए।

भारत में आज एविएशन इंडस्ट्री की ग्रोथ काफी तेज है। ऐसे में इस पर लोगों का भरोसा बनाए रखना जरूरी है। इसके लिए हमें एक ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जिससे एविएशन इंडस्ट्री को एक कम्युनिटी का रूप मिले, जिसकी बुनियाद भरोसा और मानवता हो।

(लेखक एविएशन प्रफेशनल हैं, जिनके पास 35 वर्षों से अधिक का तजुर्बा है)

मुश्किल में मस्क

इलॉन मस्क को लगता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप से दोस्ती तोड़ते वक्त उन्होंने कुछ ज्यादा ही कह दिया। इसके लिए उन्होंने खेद जताया है, लेकिन क्या इससे नुकसान की भरपाई होगी और क्या टेस्ला की मुश्किलें कम होंगी?

5 पॉइंट

1 गिरती बिक्री
2024 में टेस्ला की वार्षिक बिक्री में पहली बार गिरावट आई। इस साल पहली तिमाही के नतीजे भी निराशाजनक रहे। अमेरिकी और वैश्विक बाजार में बिक्री घट रही है, अगली तिमाही और खराब हो सकती है।

2 बढ़ती प्रतिस्पर्धा
टेस्ला के मॉडल पुराने पड़ते जा रहे हैं। उसका मुकाबला चीनी कंपनी BYD से है, जो कम कीमत में आधुनिक मॉडल और उन्नत तकनीक ले आई है। BYD सबसे ज्यादा EV बेचने वाली कंपनी बन चुकी है।

3 इनोवेशन की कमी
टेस्ला को कभी टेक्नॉलजी में लीडर माना जाता था, लेकिन अब वह बढ़त सिकुड़ती जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि कार इनोवेशन लगभग ठहर गया है। मस्क के पॉलिटिक्स पर ध्यान देने से कंपनी को ज्यादा नुकसान हुआ।

4 सरकार का सपोर्ट

मस्क को उम्मीद थी कि ट्रंप प्रशासन रोबोटैक्सी के लिए सॉफ्ट रेगुलेशन लाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा। राज्यों के अलग-अलग नियमों के चलते इस तकनीक को लागू करना और मुश्किल हो गया है।

5 लोगों का गुस्सा
सरकारी खर्चों में कटौती के लिए मस्क ने जो कदम उठाए, उससे जनता में गुस्सा है। बिना ड्राइवर की गाड़ियों की सुरक्षा को लेकर भी संदेह बना हुआ है। मस्क को दोबारा भरोसा जीतना होगा। *प्रस्तुति: शैलेंद्र पांडेय*

निरंकुश राजा की वैधता कम हो जाती है

प्रशांत आनंद भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी हैं, जिन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद निरोध और रणनीतिक अभियानों का व्यापक अनुभव है। इसी हफ्ते उनकी किताब आई है- रूल्स टू रूल। इसमें उन्होंने बताया है कि कैसे प्राचीन भारतीय शासकों को मिले सबक आज भी व्यावहारिक हैं। उनसे बात की नाइश हसन ने। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश:

NBT सप्ताह का इंटरव्यू

प्रशांत आनंद

■ पारंपरिक इतिहास की कहानी से हटकर प्राचीन भारतीय शासकों के नेतृत्व विषय पर किताब लिखने का ख्याल कैसे आया?

जब भी वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना हो या भविष्य की कोई अहम रणनीति बनानी हो, तो उसे यथार्थ की कसौटी पर भी जरूर परखना चाहिए। इतिहास हमें उस यथार्थवादी दृष्टिकोण या कसौटी को तय करने का सबसे बेहतर अवसर देता है। जितना समय बीत गया हो उतना ठोस विश्लेषण करने और उतनी ही दूरदर्शिता प्राप्त करने का अवसर होता है। शायद इन विचारों से प्रेरणा मिली है।

■ आपने स्पष्टता, साहस और इरादे को नेतृत्व के लिए मुख्य गुण बताया है। कौन से शासक की कहानी इन गुणों को सबसे अच्छे से दर्शाती है?

चंद्रगुप्त मौर्य में इन तीनों गुणों को साफतौर पर देखा जा सकता है। मगध में घनानंद को पराजित करने से लेकर मौर्य साम्राज्य का विस्तार सेंट्रल एशिया की सीमा तक करने का कार्य उन्होंने अपने दम पर किया। उन्हें उत्तराधिकार में कुछ मिला था, ऐसी बात नहीं है। पर चाणक्य की रणनीतिक सोच को अपने पराक्रम से सफल बनाकर भारत के सबसे गौरवशाली साम्राज्य को खड़ा करना असाधारण कार्य था।

■ आप सम्राट अशोक के विजेता से दार्शनिक राजा बनने के परिवर्तन को आधुनिक नेतृत्व विकास के लिए किस तरह मॉडल मानते हैं?

अशोक की कहानी में एक ऐसा व्यक्ति दिखता है जो अपने पिता बिंबिसार का चहेता बेटा नहीं था। संभवतः वह देखने में अच्छा नहीं था और उसकी मां साधारण परिवेश से थीं। इसलिए मौर्य दरबार में उसे शुरू में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर वह अपने बूते पर आगे बढ़ा। कलिंग विजय के बाद सब हासिल कर सम्राट अशोक ने यह समझा कि केवल युद्ध करके साम्राज्य का विस्तार करने की क्या सीमाएं हैं। शासन की सार्थकता जनकल्याण में है, यह समझने में अशोक अपने समय से बहुत आगे थे।

■ हर्षवर्धन के शासन में रणनीतिक कूटनीति ने नेतृत्व की आपकी समझ को कैसे आकार दिया?

हर्ष ऐसे शासक रहे जो राजगद्दी के कभी इच्छुक नहीं रहे। लेकिन परिस्थितिवश उन्हें साम्राज्य की जिम्मेदारी लेनी पड़ी और शकों के संकट से साम्राज्य को उन्होंने बाहर निकाला। इससे भी बढ़कर जब पुलकेशिन के साथ युद्ध में अपेक्षित सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने एक कदम पीछे लौटना स्वीकार किया।

■ कुछ प्राचीन भारतीय राज्यों में देखे गए विकेंद्रीकरण का विचार आधुनिक शासन के लिए कितना प्रासंगिक है?

शक्ति को बनाए रखने के लिए जरूरी है उसका विकेंद्रीकरण। शक्ति के साथ वैधता का प्रश्न हमेशा जुड़ा रहता है। जैसे ही राजा निरंकुश होता है, उसकी वैधता कम होने लगती है। उसके बाद उसकी शक्ति का गिरना तय हो जाता है। समाज के व्यापक हित के प्रयोग में शक्ति का इस्तेमाल होने से ही उसे वैधता मिलती है। यह आधुनिक शासन को हमेशा याद रखना है।

■ प्राचीन भारतीय शासकों की सभ्यता की निरंतरता आधुनिक नेतृत्व के संदर्भ में किस तरह से महत्वपूर्ण है?

आज आज के संदर्भ में बात करें तो नेतृत्वकर्ता से अपेक्षा होती है कि वह केवल अपने हितों का ध्यान रखते हुए नेतृत्वकर्ता न बने। अगर ऐसा होता है तो जनता उस नेतृत्व को नकारने लगती है। यह बात आप इतिहास में निरंतर देख सकते हैं। जब भी किसी राजा के शासन में जनता को सुरक्षा की भावना या इंसाफ की तसल्ली नहीं मिली, वह सत्ता नकार दी गई। जब भी इन अपेक्षाओं का हनन हुआ, सत्ता कमजोर ही हुई। आज के समय में भी अगर हम देखें तो शासन में जो लोग हैं, वे जब नीति बनाते हैं तो उनकी जवाबदेही जनता के प्रति होती है। हमें सभ्यता ने ही यह सिखाया है।

> **"नेतृत्वकर्ता से लोगों की यह अपेक्षा होती है कि वह केवल अपने हितों का ध्यान रखते हुए नेतृत्वकर्ता न बने। अगर ऐसा होता है तो जनता उस नेतृत्व को नकारने लगती है। यह बात आप इतिहास में निरंतर देख सकते हैं। जब भी किसी राजा के शासन में जनता को सुरक्षा की भावना या इंसाफ की तसल्ली नहीं मिली, वह सत्ता नकार दी गई**

■ पुलकेशिन द्वितीय और नरसिंह वर्मन प्रथम के शासन से आधुनिक नेतृत्व क्या सीख सकता है?

पुलकेशिन ने जिस तरह खुद से बहुत शक्तिशाली हर्षवर्धन का मुकाबला करने के लिए उनके सैन्य अभियान का सटीक आकलन किया और फिर अपने सैन्य बल को वहीं केंद्रित कर हर्षवर्धन को पीछे लौटने के लिए मजबूर किया, वह नेतृत्व क्षमता का एक बड़ा उदाहरण है। नरसिंहवर्मन ने कोई भी लड़ाई अधूरी तैयारी या उतावलेपन में नहीं लड़ी, चाहे वो पुल्लालुर की लड़ाई हो या मणिमग्लम का युद्ध हो। सटीक समय और स्थान का निर्धारण उनसे सीखा जा सकता है।

■ धर्मपाल जैसे शासकों की मिसाल आधुनिक राज्य के शिल्प में कैसे मदद कर सकती है?

धर्मपाल ने कन्नौज के लिए समय के बदलने का इंतजार हमेशा किया। कभी भी उनमें कौतूहल या अतिउत्साह में आकर काम करने की प्रवृत्ति नहीं दिखती। धर्मपाल ने समझा कि संघर्ष में जब दो बड़ी ताकतें टकरा रही हों तो उस दौरान कैसे अपनी शक्ति को बचा कर रखना है और सही समय पर कैसे उसका प्रयोग करना है।

www.nbt.in

देर रात की वह मुलाक़ात

कुछ दिन पहले की बात है। रात गहरी नींद सो रहा था कि किसी भारी चीज के गिरने की तेज आवाज आई। पहले तो उसे सुनकर भी अनसुना करने की कोशिश की। लेकिन आवाज इतनी तेज थी कि जिज्ञासा रोक नहीं पाया। घड़ी देखी, तीन बजने को थे। मैंने बिस्तर छोड़ दिया। बालकनी में गया और नीचे झांका। देखा कि एक बाइक गिरी हुई है और एक आदमी जमीन पर पड़ा है। पहले लगा कि कोई सड़क दुर्घटना हो गई है। लेकिन कुछ था, जो अजीब था। वह आदमी अपनी बाइक उठाता, कुछ दूर चलाता और फिर गिर जाता। साफ लग रहा था कि उसके साथ कुछ गड़बड़ है। मुझे चिंता हुई और मैं तुरंत नीचे गया। पास पहुंचकर देखा तो वह पूरी तरह से नशे में धुत था। आंखें लाल भभूका, मुंह से शराब की बदबू, लड़खड़ाती आवाज- साफ था कि उसने बहुत ज्यादा पी रखी थी।

मैंने उससे उसका नाम और घर पूछा। लेकिन वह कुछ भी साफ-साफ नहीं बता पा रहा था। बार-बार यही कह रहा था कि उसे जाना है, लेकिन बाइक चलाने की हालत में वह बिल्कुल नहीं था। इसी बीच उसका मोबाइल बजा। स्क्रीन पर 'वाइफ कॉलिंग' लिखा था, लेकिन वह फोन उठाने को तैयार नहीं था। मुझे लगा कि शायद वह घरवालों से डर रहा है। मैंने उससे इजाजत लेकर फोन खुद उठा लिया। फोन पर एक घबराई हुई महिला की आवाज थी- 'आप कौन हैं? मेरे पति कहां हैं?' मैंने पूरी बात समझाई और बताया कि वह भीषण नशे में हैं और बाइक चलाकर घर जाने की हालत में नहीं हैं। परली ओर उस शख्स की बीवी ने राहत भरी सांस ली और बोलीं, 'प्लीज, उन्हें किसी तरह घर छोड़ दीजिए। घर पास ही है।'

खुद अपनी आंख से

रवि ठाकुर

मैंने बाइक वहीं खड़ी कर दी और उन्हें सहारा देकर पैदल ही घर तक ले गया। रास्ते में वह आदमी बार-बार लड़खड़ाता, लेकिन मैंने उसे संभाल लिया। करीब 15 मिनट की दूरी पर उसका घर था। दरवाजा खोलते ही उनकी पत्नी ने अपने पति को संभाला, फिर मेरी तरफ देखा और भावुक स्वर में बोलीं, 'आप न होते तो कुछ भी हो सकता था। बहुत-बहुत धन्यवाद।' मैंने बस इतना ही कहा, 'कोई बात नहीं, इंसानियत के नाते किया है।'

उस रात घर वापस आकर मैं सोचता रहा- अगर मैंने उसे नजरअंदाज कर दिया होता तो क्या होता? नींद से भरी आंखें लिए बालकनी से वापस आकर सो जाना मेरे लिए मुश्किल नहीं था, लेकिन अगर अगली सुबह उस बाइक सवार के साथ या उसकी वजह से किसी और के साथ ऐसा-वैसा होने की खबर मिलती तो फिर क्या चैन की नींद सो पाता? कोफ्त मगर इस बात की होती है कि उस शख्स की पत्नी की जो एहसान भरी भावुक नजर मुझे हिला गई, खुद वह शख्स उससे वंचित ही रहा। उसे होश ही नहीं था कि पत्नी की चिंतातुर नजरों की कीमत समझता।

चलते-चलते...

एक हालिया अध्ययन में पाया गया है कि नियमित रूप से साइकल चलाने से डिमेंशिया का खतरा 19% और अल्जाइमर का खतरा 22% तक कम हो सकता है। यह शोध JAMA Network Open में प्रकाशित हुआ है। साइक्लिंग एक संतुलन और उच्च तीव्रता वाली गतिविधि है, जो मस्तिष्क की जटिल कार्यक्षमता को सक्रिय करती है।

रीडर्स मेल

▶ भरोसा बना रहे

13 जून का संपादकीय 'जांच बताएगी सच' पढ़ा। अहमदाबाद में हुआ विमान हादसा बेहद दुखद और चिंता का विषय है। 242 यात्रियों से भरे बोइंग 787 ड्रीमलाइनर का इस तरह दुर्घटनाग्रस्त होना दर्दनाक तो है ही, यह यात्रियों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। भारत की तेजी से बढ़ती एविएशन इंडस्ट्री इस पहलू को अनदेखा नहीं कर सकती। ड्रीमलाइनर विमान में तकनीकी खामियों की बात पहले भी उठ चुकी है, लेकिन अब जब हादसा हो चुका है, तो यह जरूरी है कि इससे जुड़े सभी पहलुओं की जांच पूरी पारदर्शिता से हो और जिम्मेदारी तय की जाए। समझना होगा कि एविएशन इंडस्ट्री के लिए यात्रियों का भरोसा सबसे बड़ी चीज है। ऐसे हादसे किसी भी सूरत में नहीं दोहराए जाने चाहिए। सरकार, कंपनियों और सभी संबंधित एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सुरक्षा मानकों पर कोई समझौता न हो और लोगों का विश्वास बना रहे।

प्रीति सिन्हा, ईमेल से

▶ बेटी की चिंता ज्यादा

13 जून को 'दोषी लड़की एक, सब पर गुस्सा क्यों' शीर्षक से प्रकाशित लेख पढ़ने को मिला। लड़किया कुछ ही दोषी हैं तो पुरुष भी कुछ ही दोषी होते हैं। फिर भी आक्षेप पूरे पुरुष समाज पर लगाया जाता है। कभी पुरुष प्रधान सत्ता का आतंक कहकर, तो कभी पितृसत्ता और पुरुषवाद की सोच बताकर। मैं एक सीनियर सिटीजन हूं, लेकिन यह कहने में कोई गुरेज नहीं करता कि पुरुष और स्त्री को एक समान मानने की रट ही गलत है। स्त्री वास्तव में पुरुष से कहीं ज्यादा सम्मान और स्नेह की हकदार है क्योंकि वह जननी है। आम सोच है कि आप अपनी बेटी को अकेले घर से बाहर नहीं भेज सकते। बेटी देर तक घर से बाहर रहे तो चिंता हो जाती है। बेटा बाहर रहे तो भी चिंता होती है, लेकिन बेटी की तुलना में कम। आखिर ऐसा क्यों, इस पर भी सोचने की जरूरत है।

सतीश त्यागी, गाजियाबाद

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • शनिवार • 14 जून • 2025
www.rashtriyasahara.com

निष्पक्ष हो तफ्तीश

मेडे, ये वो आपात संदेश था जो बृहस्पतिवार को अहमदाबाद से लंदन जा रहे एयर इंडिया के विमान के पायलट ने उड़ान भरने के तुरंत बाद हवाई यातायात नियंत्रक (एटीसी) को भेजा था, लेकिन एटीसी जब तक कोई प्रतिक्रिया करता तब तक दूसरी ओर सुनने वाला कोई बचा नहीं था। विमान टेक ऑफ करने के कुछ ही मिनटों के भीतर हवाई अड्डे के बाहर सिविल अस्पताल और बीजे मेडिकल कॉलेज के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में सवार देशी विदेशी यात्रियों और क्रू सहित 242 लोगों में से सिर्फ एक खुशकिस्मत यात्री के सिवा कोई नहीं बचा। मेडिकल कॉलेज होस्टल, कैफेटेरिया को भी भारी क्षति पहुंची और 10 से अधिक लोगों की भी मौत हुई है जिनमें कुछ प्रशिक्षु चिकित्सक थे। लंदन जा रहे गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी की भी मृत्यु हो गई। स्वाभाविक तौर पर यह कभी न भूलने वाला गम है। हादसे के वास्तविक कारणों का पता तो जांच के बाद ही लग सकेगा, लेकिन कुछ तथ्यों पर तुरंत गौर करना जरूरी है। वह क्या कारण थे कि बोइंग 787 ड्रीमलाइनर विमान (एआई171) उड़ान भरने के बाद 625 फुट से ऊपर नहीं उठ पाया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार विमान के लैंडिंग गेयर भी तब तक सिमटे नहीं थे कि पायलट को आपात पुकार लगानी पड़ी, लैंडिंग गेयर समेटने की प्रक्रिया स्वचालित होती है। क्या विमान टेक ऑफ के लिए जरूरी गति नहीं पकड़ पाया था। विमान को तेजी से नीचे आते देखा गया और यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। ऐसा भी नहीं है कि पायलट कम अनुभवी रहे हों। उड़ान की कमान कैप्टन सुमित सभरवाल के हाथों थी। सभरवाल के पास 8200 घंटे की उड़ान का अनुभव था। हादसे की परिस्थितियां विमान के रखरखाव को लेकर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। क्या उड़ान से पहले जरूरी जांचों में लापरवाही बरती गई थी? बोइंग कंपनी के विमानों को लेकर बीते वर्षों में इसमें कई तकनीकी और सुरक्षा से जुड़ी समस्याएं भी सामने आई हैं। कई बार ड्रीमलाइनर्स मॉडल के सभी विमानों को उड़ान भरने से रोका जा चुका है। कंपनी अभी तक तो सभी आरोपों से इनकार करके बचती रही है। अब वक्त आ गया है कि अहमदाबाद हादसे में मारे गए पायलट की आपात पुकार को हर वक्त सुना जाए और विमानों के मेंटिनेंस में लापरवाही को आपराधिक कृत्य माना जाए ताकि अब कोई और हादसा न हो और देश की छवि पर कोई धब्बा न लगे।

बांग्लादेश की अकड़ बरकरार

बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस का कहना है कि उनकी अंतरिम सरकार भारत के साथ अच्छे संबंध चाहती थी मगर हमेशा कुछ न कुछ गलत हो जाता है। ब्रिटेन की चार दिवसीय यात्रा के दौरान लंदन में चैथम हाउस थिंक टैंक के साथ बातचीत के दौरान यूनुस ने भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों और देश के लोकतांत्रिक रोडमैप सहित विभिन्न मुद्दों पर बात की। उन्होंने कहा, भारत हमारा पड़ोसी है, हम नहीं चाहते कि उनके साथ कोई बुनियादी समस्या हो। मगर भारतीय प्रेस में आने वाली खबरों को फर्जी ठहराते हुए कहा कि हर बार चीजें गलत हो जाती हैं और लोग कहते हैं कि इसका संबंध शीर्ष स्तर के नीति निर्माताओं से है। यही बात बांग्लादेश को बहुत बेचैन और क्रोधित करती है। उनका कहना है, इस क्रोध को काबू करने की कोशिश करते हैं मगर साइबर स्पेस में बहुत सारी चीजें होती रहती हैं।

शेख हसीना के निष्कासन के बाद भारत-बांग्लादेश के संबंधों में तनाव आ गया। यूनुस की मांग पर कि हसीना लोगों से वैसी बातें न करें, जैसी वह ऑनलाइन अक्सर करती हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया पर हसीना की गतिविधियों को नियंत्रित न कर सकने की बात की, जिसे उन्होंने विस्फोटक स्थिति बताया। इसी दरम्यान भारत सरकार ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के बांग्लादेश स्थित पैतृक निवास पर की गई तोड़-फोड़ की कड़ी निंदा की। यूसुफ ने बीते साल बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के प्रमुख का पदभार संभाला था। जनता के दबाव के बाद उन्होंने 2026 में राष्ट्रीय चुनाव की घोषणा की। बेशक वे अपने मुल्क में मचे राजनीतिक घमासान और कानून-व्यवस्था से अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान भटकाना चाहते हैं। बांग्लादेश की राजनीतिक अस्थिरता के लिए कोई बाहरी जिम्मेदार नहीं हो सकता। भारत अपने पड़ोसियों से सकारात्मक व रचनात्मक संबंध रखने पर बारीक नजर रखता है। रही बात हसीना को राजनीतिक शरण देने की तो मामला अब अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण के समक्ष है। मामले की गंभीरता को समझते हुए दोनों मुल्कों को आपसी असहमतियों को दूर करने के प्रयास करने चाहिए। हालांकि जब तक वहां चुनी हुई सरकार नहीं आती, तब तक कोई भी निर्णय अंतिम नहीं माना जा सकता।

कटाक्ष/ कबीरदास

ग्यारह साल, बा-कमाल!

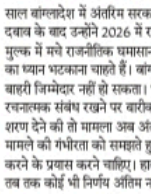

मोदी पार्टी गलत नहीं कहती है। ये विपक्ष वाले सब कुछ के एंटी हैं-एंटी हिन्दुत्व, एंटी भारतीयता, एंटी भारतीय कल्चर, एंटी नेशनल। यहां तक कि एंहटी देसी परंपरा भी हैं। देखा नहीं, कैसे मोदी जी की सरकार के ग्यारह साल पूरे होने के सेलिब्रेशन तक का मजाक उड़ा रहे हैं। कहते हैं कि ग्यारह साल तो निकाल दिए, पर किया क्या? अच्छे दिन तो अभी तक ना आए। अरे नाशुक्रो, ग्यारह साल कर तो दिए, यही क्या कम है? ग्यारह तो अपने आप में शुभ संख्या है, पर तुम क्या जानो, एंटी-भारतीयता बाबू!

रही ग्यारह साल में क्या किया है की बात, तो अच्छे दिन को इंतजार में सुखाने के अलावा भी मोदी जी ने बहुत कुछ किया है, जो वर्ल्ड रिकार्ड के स्टैंडर्ड का है। ग्यारह साल में मोदी जी आधुनिक इतिहास के सबसे लंबे समय तक अपने देश की धरती पर एक भी प्रेस कान्फ्रेंस नहीं करने वाले, लोकतंत्र के बादशाह हो गए हैं। है दुनिया में कोई और शासक, जो छप्पन इंच की छाती के बाद भी और ज्यादातर मीडिया को गोद लेने के बाद भी, पत्रकारों के सवालों का सामना करने में इतना लजाता हो? क्या यह वर्ल्ड रिकार्ड नहीं है? और गरीबी और भूख का विपरीत-अनुपात! भूख बढ़ती ही गई, ज्यों-ज्यों गरीबी मिटायी मोदी जी ने। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार, घोर गरीबी एकदम मिटने के करीब है और अस्सी करोड़ की भूख मुफ्त राशन से टाली जा रही है। हर साल दो करोड़ नौकरियां देने के वादे के फौरन बाद, नौकरी की परिभाषा का विस्तार कर उसमें पकौड़े तलना जोड़ दिया गया। फिर भीख मांगना। फिर कहा गया कि नौकरी मांगने वाला क्यों बनना, नौकरी देने वाला बनो। दो करोड़ नौकरी देने वाले बनेंगे, तो नौकरी लेने वाले जाहिर है कि विदेश से आएंगे। योगी जी ऐसा यूपी बनाने का ही तो बोले हैं। और मोदी जी ने ग्यारह साल में चुनावी रैलियों, रोड शो का जो वर्ल्ड रिकार्ड कायम किया है उसका क्या? और जो सरकारी आयोजनों को अपनी पार्टी की रैलियों में तब्दील करने का रिकार्ड कायम किया है, उसका क्या? और जो पोशाकें बदलने का, भांति-भांति की पगड़ियां पहनने का रिकार्ड बनाया है, उसका क्या? और जो भारत को दुनिया में अकेला करने का रिकार्ड बनाया है, उसका क्या? बस अकेला, सब पर भारी होने से चूक गया!

इस्राइल का आक्रामक रुख

गाजा

डॉ. एस.के. मिश्र

हाल में 10 जून को मध्य गाजा में अमेरिका समर्थित एक मानवीय समूह द्वारा संचालित सहायता वितरण स्थल पर हजारों विस्थापित लोगों के पंहुचने के दौरान इस्राइली गोलाबारी से कम से कम 17 फिलिस्तीनी मारे गए तथा दर्जनों घायल हो गए। उल्लेखनीय है कि इस्राइली सैन्य क्षेत्र के अंदर स्थित इस्राइल और अमेरिका समर्थित 'गाजा ह्यूमैनिटेरियन फाउंडेशन' के सहायता वितरण केंद्र पर लगभग प्रत्येक दिन गोलीबारी की घटना घटित हो रही है।

इस्राइल का स्पष्ट कहना है कि उसने हमास पर लगाम लगाने के लिए यह व्यवस्था की है, जबकि संयुक्त राष्ट्र ने इस नवीन व्यवस्था को यह कह कर नकार दिया है कि इसके कारण गाजा में व्याप्त भुखमरी के संकट का समाधान नहीं किया जा सकेगा और इस्राइल इस सहायता वितरण केंद्र को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करेगा। इस्राइली सेना के प्रवक्ता एफी डिफ्रिन का कहना है, 'हमास ने हताहतों की संख्या बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बताई है।' इस्राइल सुरक्षा बल (आईडीएफ) और इस्राइल सुरक्षा एजेंसी ने घोषणा की कि उन्होंने 36 वर्षीय एक थाई नागरिक नट्ठापोंग पिंटा का शव बरामद किया है, जिसे 7 अक्टूबर के हमले के दौरान मुजाहिदीन ब्रिगेड ने अगवा कर लिया था। उस बीच हमास की सशस्त्र शाखा अल कस्साम ब्रिगेड ने दावा किया कि इस्राइली सेना गाजा में एक विशेष स्थान की घेराबंदी कर रही है, जहां इस्राइली बंधक को रखा गया है और जिसकी पहचान प्रवक्ता अब्बू ओबेदा ने मतन जंगाउकर के रूप में की है।

इधर अबू ओबेदा ने चेतावनी दी कि दुश्मन उसे जिंदा नहीं पकड़ सकेगा। इस्राइल ने इस दावे पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं दी है। इस्राइल का मानना है कि उसके सैन्य अभियान बड़ी सतर्कता से चलाए जा रहे हैं। इस्राइली सेना ने 9 जून की सुबह गाजा में मानवीय सहायता पहुंचाने के लिए जा रहे एक जलयान को जब्त कर लिया और उसमें सवार सामाजिक कार्यकर्ता स्वीडन निवासी ग्रेटा थनबर्ग तथा अन्य जलवायु कार्यकर्त्ताओं को हिरासत में ले लिया। वास्तव में ये कार्यकर्ता गाजा पट्टी में जारी इस्राइल के सैन्य अभियान का विरोध करने वाले थे, क्योंकि मानवीय सहायता के प्रवेश पर इस्राइल द्वारा प्रतिबंधों के कारण 20 लाख फिलिस्तानी आबादी वाले क्षेत्र में अकाल की स्थिति पैदा होने का संकट खड़ा हो गया है। ग्रेटा थनबर्ग गाजा ले रही सहायता सामग्री वाले 'मैडलीन' नामक जहाज पर सवार 12 यात्रियों में से एक थीं। वास्तव में 'फ्रीडम फ्लोटिला कोलिशन' नामक संगठन गाजा पट्टी क्षेत्र में

मानवीय मूल्यों की सुरक्षा हेतु सहायता द्वारा पहुंचाने और इस्राइल द्वारा की गई घेरेबंदी तथा युद्ध के दौरान उसके आचरण अथवा व्यवहार का विरोध करने और फिलिस्तानियों तक राहत सामग्री की आपूर्ति करने के लिए ही इस यात्रा का विशेष आयोजन किया गया था। इस संगठन के अनुसार इस्राइली नौ सेना ने जलयान को गाजा से लगभग 200 किमी. की दूरी पर अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्र में जब्त कर लिया। 'फ्रीडम फ्लोटिला कोलिशन' सहित अन्य अनेक अधिकार समूहों ने इस्राइल की इस कार्रवाई को अंतरराष्ट्रीय कानून व नियमों का उल्लंघन करार दिया।

दूसरी ओर, इस्राइल ने इन आरोपों को नकारते हुए कहा कि इस प्रकार के जलयान गाजा में उसकी नौ सैनिक नाकाबंदी का उल्लंघन करते हैं। इस्राइल के विदेश मंत्रालय के अनुसार, इस्रासल की नौ सेना के साथ गिरफ्त में लेकर अपने आदोह बंदरगाह लाया गया। इस्राइल में ग्रेटा और अन्य कार्यकर्त्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कानूनी अधिकार समूह अदाला के अनुसार ग्रेटा थनबर्ग, दो अन्य कार्यकर्ता और एक पत्रकार भी स्वयं ही इस्राइल छोड़ने के लिए सहमत हो गए हैं। इस्राइल के विदेश मंत्रालय ने सामाजिक कार्यकर्ताओं की इस यात्रा को 'जनसंपर्क का हथकंडा' बताया। इस्राइल नौ सेना के सैनिकों द्वारा सामाजिक कार्यकर्ताओं को आवश्यक जलपान की व्यवस्था भी की गई। वास्तव में इस संगठन का प्रमुख उद्देश्य विश्व नेताओं पर फिलिस्तीनी क्षेत्र में इस्राइल के नरसंहार युद्ध को समाप्त करने के लिए दबाव डालना ही है। हमास के कब्जे के जवाब में इस्राइल द्वारा गाजा में बाहरी लोगों एवं उनके द्वारा आपूर्ति किए जाने वाली सामग्री के प्रवाह को पूरी सख्ती के साथ प्रतिबंधित कर दिया गया है। एक जानकारी के अनुसार गाजा के लगभग 70 प्रतिशत कर्मचारी बेरोजगार हो गए या उन्हें वेतन नहीं मिला तथा लगभग 80 प्रतिशत निवासी अपना जीवनयापन दयनीय स्थिति में कर रहे हैं।

हमास के कब्जे के बाद से गाजा और इस्राइल में फिलिस्तानी सशस्त्र समूहों में टकराव अनवरत जारी है। हमास गाजा में प्रतिद्वंद्वी इस्लामवादी गुटों के साथ भी संघर्ष में आया है, जो सलाफी-जिहादवाद का पालन करते हैं। ब्रिटेन के कब्जे वाले पश्चिमी तट में 'फिलिस्तानी समुदाय' के विरुद्ध बार-बार हिंसा भड़काने के आरोप में दो अति दक्षिणपंथी इस्राइली मंत्रियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। विदेश सचिव द्वारा घोषित उपायों के तहत इतामार बेन-ग्वीर और बेजालेल स्मोत्रिच को ब्रिटेन में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा तथा ब्रिटेन में उनकी संपत्तियां जब्त कर ली जाएंगी। यह संयुक्त कदम ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, नार्वे और कनाडा द्वारा उठाया गया है। इसके जवाब में इस्राइल ने कहा 'यह अपमानजनक है कि निर्वाचित प्रतिनिधियों और सरकार के सदस्यों पर इस प्रकार के उपाय लागू किए जा रहे हैं।'

यह भी कहा जा रहा है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी नेतान्याहू से गाजा युद्ध समाप्त करने को कहा है, तथा ईरान पर हमला करने को फिलहाल प्रतिबंधित कर दिया है। निःसंदेह गाजा में फिलिस्तीनी इस्राइल-हमास युद्ध का दंश झेल रहे हैं। फिलिस्तीनियों पर इस्राइली सेना द्वारा अनवरत गोलाबारी जारी रखने के कारण गाजा में गाज गिर चुकी है और मानवता त्राहि-त्राहि चिल्लाने लगी है। सर्वविदित है कि युद्ध से युद्ध का अंत नहीं होता और आधुनिक युग का युद्ध लड़ाई के मैदान तक सीमित नहीं रहता। प्रत्येक युद्ध विगत युद्ध से भयंकर होता है। युद्ध के घातक व विनाशक स्वरूप के कारण आज मानवीय मूल्यों की सुरक्षा हेतु एवं विश्व शांति बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास जरूरी हैं। यह मानव की उत्तरजीविता केलिए अत्यंत गंभीर प्रश्न है।

(लेख में व्यक्त विचार निजी हैं)

> ब्रिटेन के कब्जे वाले पश्चिमी तट में 'फिलिस्तानी समुदाय' के विरुद्ध बार-बार हिंसा भड़काने के आरोप में दो अति दक्षिणपंथी इस्राइली मंत्रियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इतामार बेन-ग्वीर और बेजालेल स्मोत्रिच को ब्रिटेन में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा तथा ब्रिटेन में उनकी संपत्तियां जब्त कर ली जाएंगी। यह संयुक्त कदम ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, नार्वे और कनाडा द्वारा उठाया गया है। इसके जवाब में इस्राइल ने कहा कि 'यह अपमानजनक है'

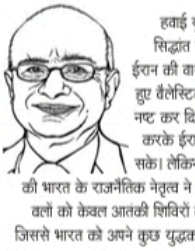

- सौंफ आंत की परत को रिलैक्स करता है और ऐंठन से राहत देता है। हार्मोनल बदलावों के दौरान महिलाओं के लिए यह बोनस की तरह होता है
- गर्मी के मौसम में सौंफ का शरबत पीने से मन तरोताजा रहता है और शरीर की गर्मी शांत रहती है। गैस, अपच, और पेट की जलन की समस्या में भी यह लाभदायक है
- आयुर्वेद में सौंफ को शतपुष्पा के नाम से जाना जाता है। सौंफ के दाने चबाने से पेट फूलना और भारीपन कम होता है, जिससे पाचन सुचारू रहता है
- सौंफ की शीतल प्रकृति पित्त दोष को शांत करती है। सौंफ खाने से मानसिक तनाव दूर होता है, और नींद भी अच्छी आतीहै

स्रोत : मीडिया इनपुट्स

हवाई युद्ध के पहले सिद्धांत के हिसाब से इसाइल ने ईरान की वायु रक्षा को ध्वस्त करते हुए बैलेस्टिक मिसाइल लॉन्चरों को नष्ट कर दिया ताकि जोरदार हमले करके ईरान को घुटनों के बल ला सके। लेकिन इस महत्त्वपूर्ण सिद्धांत की भारत के राजनैतिक नेतृत्व ने अनदेखी की और रक्षा बलों को केवल आतंकी शिविरों को नष्ट करने को कहा जिससे भारत को अपने कुछ युद्धक विमान तक गंवाने पड़े।

ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक
@Chellaney

खतरे में वैश्विक शांति

ईरान-इसाइल संघर्ष **डॉ. एस.डी. वैष्णव**

ईरान और इस्राइल के बीच सीधे तौर पर युद्ध की शुरुआत हो चुकी है। दोनों ओर से एक-दूसरे पर बम बरसाए जा रहे हैं और हालात दिन-प्रतिदिन बदतर हो रहे हैं। चूंकि इस्राइल के साथ अमेरिका भी है तो जाहिर है, ईरान के लिए मौजूदा वक्त काफी चुनौतीपूर्ण है। ईरान के न्यूक्लियर प्रोग्राम को लेकर अमेरिका और इस्राइल लगातार ईरान को चेतावनी दे रहे थे। पिछले वर्ष तेहरान पर अपने बम वर्षक विमानों से हमला करके इस्राइल ने वहां हड़कंप मचा दिया था। ऑपरेशन 'नेशन ऑफ लायंस' के तहत एक बार फिर इस्राइल ने ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल साइट्स पर बारूद बरसाकर अपने मंसूबे साफ कर दिए हैं। इस बार तेहरान पर हुए हमले में इस्राइल ने ईरान के आर्मी चीफ जनरल मोहम्मद बाघेरी और ईरानी रिवॉल्यूशनरी गार्ड कॉप्स के कमांडर-इन-चीफ हुसैन सलामी के साथ परमाणु वैज्ञानिक डॉ. फ़रेदून अब्बासी-दावानी और डॉ. तेहरांची के मारे जाने की पुष्टि की है। इस्राइल हमेशा सुनियोजित और पूरी तैयारी के साथ हमले करता है, जिसमें मोसाद की अहम भूमिका रहती है, यह उसी का परिणाम है।

ईरान पर किए गए हमले के बाद ईरान की जवाबी करवाई की आशंका के चलते इस्राइल में इमरजेंसी घोषित की गई है। ईरान के लिए यह हमला निश्चित रूप से बड़ी क्षति है। और उसने इस्राइल पर जवाबी कार्रवाई शुरू भी कर दी है। ईरान के साथ इराक ने भी अपना एयर स्पेस बंद कर दिया है। उधर इस्राइल के रक्षा मंत्री इस्राइल कैट्स ने कहा है कि हम ईरान के हर हमले का मुंहतोड़ जवाब देंगे। इस्राइल और ईरान के बीच लंबे समय से जो जुबानी जंग चल रही थी; वह अब बारूदी जंग में बदल गई है। ईरान के इतने महत्त्वपूर्ण लोगों का एक साथ हमले में मारा जाना ईरान के सुरक्षा और खुफिया तंत्र पर सवाल खड़े करता है। इस्राइल के लिए निश्चित रूप से यह एक रणनीतिक जीत कही जाएगी। ईरानी सेना प्रमुख जनरल मोहम्मद बाघेरी को ईरानी रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरजीसी) के साथ

रणनीतिक और परमाणु नीति निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाते देखा जाता रहा है। ईरान के इतने बड़े और महत्त्वपूर्ण पद पर बैठे अधिकारी के मारे जाने से मध्य-पूर्व में युद्ध की आग निश्चित रूप से और बढ़ेगी। हालांकि अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु संवर्धन संधि को लेकर अलग-अलग देश में बैठकें जारी थीं और यह बातचीत किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रही थी।

अमेरिका इस्राइल को ईरान के परमाणु साइट्स पर हमले न करने के लिए लगातार रोक रहा था। हमले के बाद अमेरिका ने कहा है कि इस हमले में उनका कोई हाथ नहीं है, लेकिन ईरान इस हमले को अमेरिका की ओर से उकसावे की रणनीति मानता है। आज जिस युद्धाक्रांत समय के साये में हम जी रहे हैं, वहां से सिर्फभय और टकराहट की लपटें उठती नजर आती हैं। उधर रूस-यूक्रेन युद्ध का अंत होता दिख नहीं रहा है। गाजा पट्टी, लेबनान और सीरिया पर इस्राइली बारूद लगातार बरस रहा है। मेरे जेहन में इस्राइल का अरब देशों के साथ हुआ 6 दिन का संघर्ष जिसमें इस्राइल की जीत हुई थी और इस्राइल द्वारा अपने अपहृत नागरिकों को वापस लाने के लिए चलाए गए 'ऑपरेशन थंडरबोल्ट' की याद ताजा है। इस्राइल अपने विरोधियों के खिलाफ हर मोर्चे पर आक्रामक रुख अख्तियार करता रहा है। इस बार मध्य-पूर्व में यदि युद्ध विस्तारित हुआ, तो वैश्विक महाशक्तियां इस जंग में अपने कदम अवश्य रखेंगी। आईडीएफ, मोसाद और अमेरिकी बैकअप इस्राइल की ताकत है, इसलिए मध्य-पूर्व में इस्राइल किसी भी कीमत पर पीछे नहीं हटेगा।

बहरहाल, विचलित करने वाला यह समय हमें भीतर तक झकझोरता है। वैश्विक शांति के लिए महाशक्तियों को अपनी साम्राज्य विस्तार की नीतियों पर भी लगाम लगानी होंगी। जय-पराजय का यह समर किस मोड़ पर जाकर रुकेगा, अभी कहा नहीं जा सकता, लेकिन दो महायुद्धों के बीच जन्मी जयशंकर प्रसाद की कामायनी का यह छंद मनुष्यता के पक्ष में खड़ा नजर आता है- 'दुख की पिछली रजनी बीच, विकसता सुख का नवल प्रभात' इस बात का यकीन दिलाता है कि दुख की पिछली रजनी को लांघकर, कभी-न-कभी सुख का नवल प्रभात अवश्य खिलेगा और उसदिन सारा विश्व समरसता की गूंज से भर उठेगा।

लक्ष्य पर ध्यान दें **संत राजिन्दर**

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो परमात्मा के साथ अपना नाता और अपने उद्देश्य का रास्ता खोज रहे हैं। जो लोग परमात्मा की खोज कर रहे हैं, उनमें से कुछ ऐसे भी लोग हैं जो बहुत उत्साह के साथ खोज कर रहे हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो बड़े जुनून और बड़े उत्साह के साथ शुरुआत करते हैं, उनकी रुचि कम हो जाती है और वे अपने लक्ष्य को हासिल करने में असफल होते हैं। अगर हमें इस जीवन में अपने आध्यात्मिक सफर को पूरा करना है तो हमें अपने इस लक्ष्य से दूर नहीं होना चाहिए। इस मानव जन्म का लक्ष्य हमारी आत्मा का परमात्मा से लंबी जुदाई, परमात्मा से पुनर्मिलन की तड़प को पूरा करना है। अध्यात्म एक प्रेम का मार्ग है और हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से जोड़ता है। जब हम आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हैं तो अपनी वास्तविक पहचान को समझना जरूरी है। या हम आध्यात्मिक अनुभव की खोज में एक भौतिक शरीर हैं या हम आध्यात्मिक प्राणी हैं, जिसमें भौतिक स्तर पर अनुभव कर रहे हैं? इसी में परमात्मा को पाने का रहस्य छुपा है। हम सब आत्माएं हैं। जैसे हमें यह मनुष्य जन्म मिला है, इसी रूप में ही वास्तव में स्वयं को जानने की सभी सुविधाएं हैं, यह आत्मा को परमात्मा के प्रेम का अनुभव करने और परमात्मा के पास वापस जाकर अपनी लंबी यात्रा को पूरा करने का मौका है। अभी हम सब इंद्रियों के स्तर पर जी रहे हैं और सिर्फ वही अनुभव कर रहे हैं जो जड़ पदार्थ से बना है। प्रभु जो चेतनता के महासागर हैं, उनके प्रेम का अनुभव करने के लिए हमें आध्यात्मिक रूप से चेतन अवस्था में रहने और अपने सच्चे स्वरूप के प्रति जागृत होने की आवश्यकता है। आत्मा और परमात्मा को खोजने के लिए हमें हमारी खोज पर ही ध्यान देना चाहिए और किसी बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जब हम परमात्मा से संवाद करते हैं, तब हमें किसी और चीज की आवयकता नहीं होनी चाहिए। हमें परमात्मा पाने की नशे में मस्ती की गहराई में डुबकी लगाकर ऊपर के मंडल में उड़ान भरनी है। ध्यान-अभ्यास ही परमात्मा से जुड़ने का साधन है। हमें प्रार्थना एवं ध्यान-अभ्यास में एकाग्रचित्त होकर बैठना चाहिए। हमें ध्यान-अभ्यास के दौरान किसी और चीज को बीच में नहीं आने देना चाहिए।

रीडर्स मेल

कहीं साजिश तो नहीं

गुजरात के अहमदाबाद एयरपोर्ट से बृहस्पतिवार दोपहर को लंदन के गैटविक एयरपोर्ट जा रहे एयर इंडिया के विमान का टेकऑफ करते ही क्रैश होने की खबर एक बेहद दुःखद घटना है। इस हादसे में लगभग 242 लोगों का मारा जाना किसी त्रासदी से कम नहीं है। क्रैश हुए विमान में अनेकों परिवारों ने अपनों को खोया है उनकी भरपाई अब कभी नहीं हो पाएगी। इस घटना के तुरंत बाद राहत और बचाव के कार्य में सेना के जवान जुट गए। बहरहाल, इस हादसे को लेकर अभी तमाम तरह के कयास लगाए जा रहे है। जानकारों के मुताबिक जिस तरह एयरक्राफ्ट नीचे गया उससे इंजन में खराबी की आशंका लग रही है। घटनास्थल से आ रही वीडियो में दिख रहा है कि पायलट की तरफ से एयरक्राफ्ट के नोज को ऊपर उठाने की कोशिश की गई थी। अभी सिर्फ अनुमान ही लगाया जा रहा है कि विमान का इंजन फेल हुआ होगा। इस विमान हादसे के पीछे क्या कारण रहे हैं उनका पता तो ब्लैक बॉक्स से ही लगेगा। इस पूरे घटनाक्रम से एक सवाल ये भी खड़ा होता है कि क्या ये किसी साजिश का तो शिकार नहीं हो गया? इस हादसे की गहन जांच जरूर होनी चाहिए ताकि सच सामने आ सके।

हितेंद्र डेढ़ा, दिल्ली

रेल मंत्रालय का उम्दा कदम

निसंदेह यह रेल मंत्रालय की तरफ से एक सराहनीय कदम है, मोदी सरकार का यह कदम जनता को लूट से आजादी दिलाएगा और इस से एजेंट से छुटकारा मिल जाएगा। जिस बल्क बुकिंग से आमजन परेशान हो रहा था, उससे राहत मिलेगी, लेकिन इसका असली फायदा जमीनी स्तर पर देखने के लिए इंतजार करना होगा और इसके अतिरिक्त मंत्रालय को यह सुनिश्चित करना होगा की आईआरसीटीसी की वेबसाइट सुचारु रूप से चले जब तत्काल बुकिंग का समय होता है क्योंकि अक्सर पेमेंट करने के बाद वेबसाइट हैंग हो जाता है, पैसा काट लिया जाता है और टिकट बुक नहीं होता है और कई-कई बार तो पेमेंट के टाइम स्वतः लॉग आउट हो जाता है।

बाल गोविंद, नोएडा

अमेरिका ने दी भारत को चोट

भारत अभी भी भले नहीं माने, मगर देर-सवेर उसे यह मानना ही पड़ेगा कि अमेरिका हमारा दोस्त हो ही नहीं सकता। वो दशकों से पाकिस्तान के साथ था, है और रहेगा। कहने को हमारी सरकार ट्रंप को दोस्त मान रही है मगर वो आदमी इस्लामाबाद के तरफ ज्यादा झुका हुआ है। वरना अभी-अभी हमारा पाकिस्तान के साथ संक्षिप्त झड़प हुई, उसमें वो भारत और पाकिस्तान को बराबरी का तराजू में तौल रहा था। इतना ही नहीं अमेरिका के सेंट्रल कमांड के प्रमुख जनरल माइकल कुरिला ने कहा है कि पाकिस्तान आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अमेरिका का अभूतपूर्व सहयोगी रहा है। अमेरिका ने एक और चोट भारत को पहुंचाई है। पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल सैय्यद असीम मुनीर को अमेरिका द्वारा 14 जून को अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। इसी दिन ट्रंप का 79वां जन्मदिन भी है। क्या अब भी पीएम मोदी ट्रंप को सम्मान एवं अजीज दोस्त की नजरों से देखेंगे?

जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3, 4 सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा तथा 1209-1210, बाराखंभा रोड, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्थानीय संपादक - रमेश मिश्र*।

कल्पमेधा

किसी भी आदमी को उसकी सफलता के किस्सों से मत जांचो, बल्कि केवल इससे कि गिरने के बाद वह आदमी कितनी बार खड़ा हुआ।

- नेल्सन मंडेला

विस्थापन का दर्द

अपना घर-बार छोड़ कर दूसरी जगह ठिकाना तलाशने की मजबूरी जीवन की डगर को और कठिन बना देती है। ऐसे लोगों के पास विस्थापन का दर्द झेलने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रह जाता है। यह किसी एक देश की बात नहीं है, बल्कि दुनिया भर में विभिन्न कारणों से विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजंसी की एक रपट के मुताबिक, दुनिया में जबरन विस्थापितों का आंकड़ा 12.2 करोड़ से अधिक हो गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 20 लाख अधिक है और बीते दशक की अपेक्षा लगभग दोगुना है।

संयुक्त राष्ट्र की रपट में कहा गया है कि लोगों के विस्थापन के लिए युद्ध, आंतरिक हिंसा और उत्पीड़न मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। गौरतलब है कि वर्तमान में दुनिया में मुख्य रूप से दो मोर्चों पर आमने-सामने का युद्ध हो रहा है, वह है रूस-यूक्रेन और इजराइल-हमास। रूस और यूक्रेन के बीच तो लंबे समय से संघर्ष चल रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग हताहत भी हुए हैं। निकट भविष्य में इस युद्ध का अंत होने के आसार अभी नजर नहीं आ रहे हैं। इस कारण यूक्रेन में 88 लाख लोगों को अपना घर-बार व जमीन-जायदाद छोड़ कर दूसरी जगह जाना पड़ा है। वहीं, इजराइल-हमास के बीच युद्ध में ईरान का हस्तक्षेप भी किसी से छिपा नहीं है। दूसरी ओर, सीरिया एक दशक से अधिक समय से गृहयुद्ध झेल रहा है, जिस कारण वहां भी बड़ी संख्या में लोगों को विस्थापन का दर्द झेलना पड़ रहा है।

रपट के मुताबिक, आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों की संख्या पिछले वर्ष के अंत में नौ फीसद से बढ़ कर 7.35 करोड़ हो गई है। गृहयुद्ध से जूझ रहा सूडान तो दुनिया के सबसे बड़े विस्थापन संकट का केंद्र बन गया है, जहां संघर्ष के कारण 1.4 करोड़ से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं। यह सीरिया के 1.35 करोड़ विस्थापितों से अधिक हैं। इसके अलावा अफगानिस्तान में एक करोड़ से अधिक लोगों को जबरन विस्थापित किया गया है। हालांकि, इस मामले में भारत की स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। जिनेवा स्थित आंतरिक विस्थापन निगरानी केंद्र की एक हालिया रपट के मुताबिक, भारत में वर्ष 2024 में हिंसा के कारण 1,700 लोग विस्थापित हुए, जो 2023 में विस्थापित लोगों की संख्या से कम हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत में इस मामले में भविष्य में और सुधार होगा।

विस्थापन का एक पहलू यह भी है कि इन लोगों को खाद्य संकट और कुपोषण का भी शिकार होना पड़ रहा है। विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की रपट के अनुसार, दुनिया भर में कुल विस्थापितों में से 9.5 करोड़ ऐसे देशों में रह रहे हैं, जहां पहले से ही खाद्य संकट गहराया हुआ है, जैसे कि कांगो, कोलंबिया, सूडान और सीरिया। करीब 20 देशों में 14 करोड़ लोग युद्ध और हिंसा के कारण भोजन की कमी से जूझ रहे हैं। इससे स्थिति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र और कुछ अंतरराष्ट्रीय सहायता एजंसियां विस्थापित लोगों की मदद का प्रयास करती रही हैं, लेकिन वित्तीय कोष के अभाव में उनके ये प्रयास भी नाकाफी साबित हो रहे हैं।

खामियों की आग

दिल्ली की घनी आबादी वाले इलाकों में आग से बचाव के इंतजाम पर सवाल तो पहले ही उठते रहे हैं, वहीं सरकारी इमारतों में पिछले दिनों जिस तरह की खामियां सामने आई हैं, वह चिंता का विषय है। गर्मियों के मौसम में यहां हर वर्ष आग लगने की घटनाएं होती हैं, लेकिन इन्हें रोकने के लिए न तो समन्वित उपाय किए जाते हैं और न ही नागरिकों को जागरूक किया जाता है। जब सरकारी विभाग ही लापरवाही बरतेंगे, तो कई मंजिला भवनों और व्यावसायिक इमारतों में जान-माल की सुरक्षा की क्या ही उम्मीद की जा सकती है। हाल ही में राजधानी की कई सरकारी इमारतें अग्नि सुरक्षा की कसौटी पर खरी नहीं उतर पाईं। जांच के दौरान यही हाल सरकारी अस्पतालों में दिखा। क्या कोई इस तथ्य को गंभीरता से लेगा कि कुछ अस्पतालों और सरकारी भवनों को इसी आधार पर अग्नि सुरक्षा प्रमाणपत्र जारी नहीं किए गए या उनका नवीनीकरण नहीं किया गया, क्योंकि उनमें आग से बचाव के पुख्ता इंतजाम नहीं थे। ऐसा संभव नहीं कि इमारतों से संबंधित विभागों के जिम्मेदार अधिकारियों को अपनी कमियां दूर करने के लिए आगाह न किया गया हो। फिर भी लापरवाही बरती जा रही है, तो इसे गंभीरता लिया जाना चाहिए।

दिल्ली के कुछ सरकारी भवन इतने पुराने हैं कि उनका मानकों पर खरा उतरना मुश्किल है। बावजूद इसके उन्हें अनापत्ति प्रमाणपत्र मिलते रहे हैं, तो यह जांच का विषय होना चाहिए। लोकनायक अस्पताल में वैकल्पिक सीढ़ियां बंद पाई गई हैं। दुर्भाग्यवश कोई घटना होती है, तो इसकी गंभीरता को समझा जा सकता है। हैरत की बात है कि आंबेडकर अस्पताल में वैकल्पिक निकास को स्थायी रूप से बंद पाया गया, यह जानते हुए भी कि रोज बड़ी संख्या में मरीज यहां आते हैं। आखिर इस तरह की लापरवाही के लिए कौन जवाबदेह है? दो वर्ष पहले राजधानी के एक नर्सिंग होम में आग लगने से छह नवजात शिशुओं की मौत हो गई थी। उस समय वहां अग्नि सुरक्षा उपायों में भारी कोताही पाई गई थी। आज भी अगर राजधानी में बड़े अस्पताल नियमों की अनदेखी कर रहे हैं, तो समय रहते सरकार को कदम उठाना चाहिए।

आतंकवाद के खिलाफ एकजुट भारत

पहलगाम में आतंकी हमले और भारत की सोची-समझी सैन्य प्रतिक्रिया 'आपरेशन सिंदूर' के बाद केंद्र सरकार ने एक अभूतपूर्व कूटनीतिक पहल की। सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडलों को विभिन्न देशों में भेजकर देश की एकता का संदेश दिया।

निशिकांत दुबे/हर्ष श्रृंगला

स्वतंत्र भारत के इतिहास में इससे पहले कभी भी भाजपा, कांग्रेस, एआइएमआइएम, द्रमुक, बीजद, शिवसेना और अन्य दलों के सांसदों ने एकजुट संदेश के साथ यात्रा नहीं की। शशि थरूर, सुप्रिया सुले, असदुद्दीन ओवैसी और गुलाम नबी आजाद जैसे विपक्षी नेता एक मंच पर प्रमुखता से मौजूद थे। चौबीस करोड़ मुसलमानों की आबादी वाले भारत ने देखा कि यह समुदाय राष्ट्र के खिलाफ धर्म को हथियार बनाने से इनकार कर पाकिस्तान की आतंकवाद की विचारधारा के खिलाफ मजबूती से खड़ा है। खाड़ी देशों में यह संदेश ले जाने वाला प्रतिनिधिमंडल अपने आप में भारत के सामाजिक ताने-बाने का प्रतिबिंब था। इसमें पांच धर्मों- हिंदू, मुसलिम, ईसाई, सिख और बौद्ध नेता शामिल थे, जो सभी धर्मों के भारतीयों की एकता और मजबूती को दर्शाता है। आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने का स्पष्ट संदेश देने वाली इन समन्वित यात्राओं को न केवल स्वीकार किया गया, बल्कि विदेशों में उनकी सराहना भी की गई।

पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले और भारत की सोची-समझी सैन्य प्रतिक्रिया आपरेशन सिंदूर के बाद केंद्र सरकार ने एक अभूतपूर्व कूटनीतिक पहल की शुरुआत की। 23 मई से सात सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल, जिनमें सत्ताधारी पार्टी और विभिन्न विपक्षी दलों से 59 संसद सदस्य शामिल थे, उन्होंने 30 से अधिक देशों की यात्रा की और रणनीतिक रूप से विश्व नेताओं, नीति निर्माताओं, मीडिया, प्रबुद्ध मंडलों एवं प्रवासी समुदायों के साथ बातचीत की। इन समूहों को एक स्पष्ट और एकीकृत संदेश आगे बढ़ाने का काम सौंपा गया था: आतंकवाद पर भारत का कतई बर्दाश्त नहीं करने का रुख और आतंकवादी तंत्र एवं उनके प्रायोजकों के लिए चेतावनी। उनके मिशन में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य, खाड़ी देश, यूरोप, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के रणनीतिक साझेदार शामिल थे। इस पहल की विशेषता यह थी कि इससे राष्ट्रीय एकता प्रदर्शित हुई। एकजुटता के इस दुर्लभ प्रदर्शन ने एक शक्तिशाली संदेश दिया कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई राजनीति से परे है और यह एक साझा राष्ट्रीय मुद्दा है। अपने वैश्विक संपर्क के दौरान, सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने कई प्रमुख विश्व नेताओं और प्रमुख राजनीतिक हस्तियों से मुलाकात की, जिससे भारत के आतंकवाद विरोधी संदेश को काफी बढ़ावा मिला। वाशिंगटन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने आतंकवाद का मुकाबला करने और भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के साथ व्यापक चर्चा की। ब्रुसेल्स में भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद के समूह ने बेल्जियम के चैंबर आफ डेप्युटीज के अध्यक्ष पीटर डी रूवर से मुलाकात की, जिन्होंने भारत के साथ एकजुटता व्यक्त की। कुवैत में हमारे मिशन ने एक अनौपचारिक बातचीत का आयोजन किया था, जहां प्रतिनिधिमंडल को पूर्व उप प्रधानमंत्री, चार पूर्व मंत्रियों, खाड़ी सहयोग परिषद के पूर्व महासचिव और कुवैत के तीन प्रमुख समाचारपत्रों के वरिष्ठ संपादकों सहित 40 से अधिक प्रमुख हस्तियों के साथ संवाद करने का अवसर मिला। सऊदी अरब, कुवैत, बहरीन और अल्जीरिया, इन सभी मुसलिम बहुल देशों में बातचीत एक स्पष्ट संदेश के साथ शुरू हुई: यह दो राष्ट्रों के बीच का संघर्ष नहीं, बल्कि भारतीय नागरिकों पर पाकिस्तान की सेना द्वारा प्रायोजित आतंकी हमला है। कुवैत और सऊदी अरब में बैजयंत पांडा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने क्षेत्रीय नेताओं और प्रबुद्ध मंडलों को संबोधित किया, जिसमें भारत द्वारा पहले के राजनयिक प्रयासों के दौरान की गई ऐतिहासिक गलतियों पर चर्चा की गई। प्रतिनिधिमंडल ने याद दिलाया कि कैसे 2008 के मुंबई हमलों के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 2009 में शर्म अल-शेख में अपने पाकिस्तानी समकक्ष से मुलाकात की और एक संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर किए, जिसमें आइएसआइ या पाकिस्तानी सेना का नाम लिए बिना भारत और पाकिस्तान को आतंकवाद के परस्पर पीड़ित के रूप में बताया गया। यह कमजोर स्थिति जुलाई 2011 में मुंबई में एक और आतंकी हमले के बाद जल्दी ही उजागर हो गई। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य असदुद्दीन ओवैसी ने इस बात को विस्तार से समझाया कि कैसे पाकिस्तान के वर्तमान सेना प्रमुख और पूर्व आइएसआइ प्रमुख जनरल असीम मुनीर इस आतंकवादी तंत्र की प्रतीकात्मक कड़ी हैं। उन्होंने पाकिस्तान को विदेशी सहायता मिलने पर भी सवाल उठाया।

> अपने वैश्विक संपर्क के दौरान, सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों ने कई प्रमुख विश्व नेताओं और राजनीतिक हस्तियों से मुलाकात की, जिससे भारत के आतंकवाद विरोधी संदेश को काफी बढ़ावा मिला। वाशिंगटन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने आतंकवाद का मुकाबला करने और भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के साथ व्यापक चर्चा की। बहरीन और कुवैत में प्रतिनिधिमंडल ने उप प्रधानमंत्रियों सहित देश के प्रमुख राजनीतिक नेतृत्व के साथ सार्थक बातचीत की।

इस पहल से पांच मुख्य रणनीतिक उपलब्धियां हासिल हुईं। पहला, एकीकृत राष्ट्रीय संदेश। विभिन्न दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने यह स्पष्ट कर दिया कि आतंकवाद का विरोध चुनावी राजनीति से परे है। दूसरा, पाकिस्तान को बेनकाब करना। प्रतिनिधिमंडलों ने पहलगाम हमले की साजिश रचने में पाकिस्तान की भूमिका को सफलतापूर्वक उजागर किया। तीसरा, कूटनीतिक अलगाव- इस अभियान ने पाकिस्तान को कूटनीतिक रूप से और अलग-थलग करने में मदद की तथा इस संदेश को मजबूत किया कि आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों के बीच कोई अंतर नहीं किया जा सकता। चौथा, सामुदायिक जुड़ाव-प्रतिनिधिमंडलों ने विदेशों में भारतीय प्रवासियों और स्थानीय समुदायों के साथ बातचीत की और भारत के रुख के लिए समर्थन जुटाया। पांचवां, भविष्य की कूटनीति का खाका- आगे बढ़ते हुए भारत को संसदीय कूटनीति को औपचारिक रूप देना चाहिए। बीते दस जून को सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की और अपनी प्रतिक्रिया साझा की। प्रधानमंत्री ने परिणामों पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और बाद में सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा, जिस तरह से उन्होंने भारत की आवाज को आगे बढ़ाया, उस पर हम सभी को गर्व है।

निशिकांत दुबे-भाजपा सांसद, हर्ष श्रृंगला-पूर्व विदेश सचिव

खुशी की खोज

दुनिया मेरे आगे

अमिताभ स.

महात्मा बुद्ध के वचन हैं- अप्प दीपो भव। यानी अपना दीप स्वयं बनिए। ऐसे ही 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला' वाक्यांश सिख दर्शन को उजागर करता है। इसमें सम्मिलित दो पंजाबी शब्द 'चढ़दी कला' का अर्थ खुद को विजयी करना, ऊपर उठना और ऊंचाई की ओर बढ़ना है। यह सकारात्मकता, आशावाद, आत्मविश्वास से सराबोर होने और कठिनाइयों से ऊपर उठने की मानसिकता का प्रबल प्रतीक है। दूसरे शब्दों में इसे 'उगता सूरज' का पर्यायवाची कह सकते हैं। कहा जाता है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों के बावजूद, सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण बनाए व अपनाए रखने से विजयी पताका लहलहा उठती है। यही नहीं, निहायत सामान्य शब्द जीवन के उतार-चढ़ाव को कबूल करने और उनसे उबरने की क्षमता को भी परिभाषित करते हैं। ये आत्मविश्वास का संचार करते हैं और दिक्कतों का सामना करने के लिए मजबूत बनाने के साथ-साथ तमाम कठिनाइयों को दूर करने की हिम्मत बंधाते हैं। साथ-साथ दूसरों का समर्थन और मदद जुटाने व कष्टदायी दौर में उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने की भावना को भी बढ़ावा देते हैं।

सच है कि हर इंसान के भीतर अद्वितीयता छिपी है। उसे पहचानने और फिर निखारने से जीवन में शिखर यात्रा के रास्ते खुलने लगते हैं। एक व्यक्ति ने माली से पूछा कि उसके बगीचे के पौधे इतने सुंदर क्यों उगते हैं? माली ने जवाब दिया, 'मैं उन्हें बढ़ने से रोकने वाली बाधाओं को हटाता रहता हूं।' ऐसे ही हर किसी को अपने निखार में आने वाली बाधाओं को दरकिनार कर आगे बढ़ना चाहिए। जैसे 'मैं तुम्हें पसंद करता हूं' और 'मैं तुम्हें प्यार करता हूं' में अंतर होता है।

गौतम बुद्ध यों समझाते थे कि अगर तुम फूल को पसंद करते हो, तो तुम उसे तोड़ कर रखना चाहोगे। लेकिन अगर उस फूल से प्रेम करते हो, तो तोड़ने के बजाय तुम रोज उसमें पानी डालोगे, ताकि वह और उसके आजू-बाजू दूसरे फूल खिलते रहें। ऐसी ही कोशिश हर किसी को खुद और दूसरों को निखारने में करनी चाहिए। हरेक जीवन में मुश्किलें तो होंगी ही। इसलिए किसी दूसरे के जीवन में मुश्किलें न खड़ी करने की हमेशा सभी को सच्ची कोशिश करनी चाहिए। दरअसल, ताउम्र चले और कहीं नहीं पहुंचे की स्थिति तब होती है, जब चलने वाला जानता ही नहीं कि उसे जाना कहां है? बगैर लक्ष्य के चलते जाना या अपने लक्ष्यों-कार्यों को अधूरा छोड़ते जाना किसी को कहीं नहीं ले जाता। जबकि समय पर लक्ष्य निर्धारण करने और उसे पाने में जुटने भर से जीवन रोशन हो जाता है। यही असल खुशी का भी मार्ग प्रशस्त करता है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने तो आठवीं कक्षा में सहपाठियों से भरी कक्षा के बीच अध्यापक से कह दिया था कि वे बड़े होकर अमेरिका का राष्ट्रपति बनना चाहते हैं। उन्होंने केवल कहा ही नहीं, बल्कि अपना मकसद पाने में भी जुट गए। नतीजतन, पचास साल से कम उम्र में ही वे अमेरिकी राष्ट्रपति बन गए। चूंकि योग्यताएं कर्म से पैदा होती हैं, इसीलिए ज्यादातर स्कूलों में प्राथमिक से लेकर माध्यमिक कक्षाओं तक छात्र- छात्राओं को भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक शास्त्र आदि विषयों की पढ़ाई के साथ-साथ खेल, नृत्य, संगीत जैसी तमाम कला-विधाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है, ताकि बच्चे छोटी उम्र से ही अपनी रुचि अनुरूप लक्ष्य तय कर आगे बढ़ सकें।

हालांकि, फिल्मों के पुराने जमाने के जाने-माने खलनायक अजीत तो मानते थे कि ऊपर उठने का एकमात्र रास्ता साफ नीयत है। उनकी राय में अदाकारी में तो कम-ज्यादा भी चलेगा, लेकिन इंसान के तौर पर हरेक की फितरत हमेशा सौ फीसद और ज्यादा होनी चाहिए। हर क्षेत्र में वही लंबे समय तक कामयाब रहता है, जो इंसान भी बेहतर होता है। हम जिस प्रकार के विचारों का पोषण करेंगे, वैसे ही बन जाएंगे।

ओशो अक्सर बताते थे कि जब हमारा जन्म हमारी मर्जी से नहीं होता और मृत्यु भी हमारी मर्जी से नहीं होती, तो इस जन्म-मरण के बीच में होने वाला समूचा घटनाक्रम हमारी मर्जी से कैसे हो सकता है? बावजूद इसके हर किसी में इतनी ताकत होनी चाहिए कि अपनी मुश्किलों से अकेले जूझ सके। उसका सामना कर सके। फारसी व सूफी कवि रूमी का मानना है, 'खूबसूरत दिन खुद आपके पास नहीं आते। आपको उन तक पहुंचना होता है।' बेशक जल्दी नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो कुछ भी खूबसूरत और महान है, उसे समय लगता है। बस अपने काम को निरंतर बेहतर करते रहना चाहिए। काम की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ-साथ ज्यादा काम करने का मौका मिले, तो सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। जिम्मेदार मेहनती इंसान बाकी लोगों से श्रेष्ठ होने के अलावा ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इसके अलावा, किसी के जीवन में सिर्फ अच्छे दिन नहीं आते, अपनी मेहनत से बुरे दिनों को भी अच्छे में बदला जा सकता है। यह भी सच है कि सबके दिन कभी न कभी जरूर बदलते हैं। व्यक्ति को धैर्य से प्रतीक्षा करना चाहिए।

> ताउम्र चले और कहीं नहीं पहुंचे की स्थिति तब होती है, जब चलने वाला जानता ही नहीं कि जाना कहां है? बगैर लक्ष्य के चलते जाना या अपने लक्ष्यों को अधूरा छोड़ते जाना किसी को कहीं नहीं ले जाता। जबकि समय पर लक्ष्य निर्धारण करने और उसे पाने में जुटने भर से जीवन रोशन हो जाता है।

फैसले का इंतजार

मणिपुर में एक बार फिर से हिंसा भड़क गई है। प्रधानमंत्री कई मौकों पर पिछली सरकारों पर पूर्वोत्तर राज्यों की अनदेखी का आरोप लगा चुके हैं। उनके कई बयान हैं जैसे 'हम पूर्वोत्तर के आठ राज्यों को कांग्रेस की तरह एटीएम नहीं, बल्कि अष्टलक्ष्मी मानते हैं। प्रधानमंत्री स्वयं कई बार पूर्वोत्तर का दौरा भी कर चुके हैं। मगर पिछले दो वर्षों से मणिपुर में जारी हिंसा पर मौजूदा केंद्र सरकार की उदासीनता इन घोषित नीतियों से मेल नहीं खाती। ऐसा नहीं है कि सरकार शांति के प्रयास नहीं कर रही होगी। मगर, या तो वे प्रयास सही दिशा में नहीं हो रहे हैं या फिर नाकाफी हैं। उम्मीद है कि कड़े फैसले लेने के लिए जानी जाने वाली मौजूदा केंद्र सरकार जल्द ही मणिपुर हिंसा पर भी कोई ठोस फैसला लेगी और वहां शांति कायम होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

- बृजेश माथुर, गाजियाबाद

कालाबाजारी पर अंकुश

रेलवे स्टेशनों पर जिस तरह से दलालों का बोलबाला रहता है, उस पर सरकार अब धीरे-धीरे शिकंजा कस रही है। हाल ही में यह तय हुआ है कि जिनका 'आइआरसीटीसी खाता' आधार से जुड़ा होगा, वही तत्काल टिकट कटा पाएंगे। अब इसके लिए ओटीपी अनिवार्य होगा। ऐसा इसलिए किया गया, क्योंकि दलाल शुरू के कुछ मिनटों में तत्काल टिकट लेकर अपने पास रख लेते थे और मजबूर लोगों से मुनाफा कमाते थे। उनकी इस मनमानी को रोकने के लिए ही सरकार ने यह निर्णय किया है। ये दलाल इतने शातिर हैं कि ओटीपी पूछ कर नंबर भर देते थे। अब फर्जी बुकिंग और एजंटों पर लगाम लगाई जा सकेगी। सबसे बड़ी बात कि बिना ओटीपी के अब टिकट की बुकिंग संभव नहीं होगी। यह कदम पहले ही उठाया जाना चाहिए था।

- मीना धानिया, सिरसपुर, दिल्ली

अमेरिका के बदले सुर

अमेरिका के सुर जिस तरह से बदल रहे हैं और उसका पाकिस्तान प्रेम जिस तरह उमड़ रहा है, यह भारत के लिए न केवल चेतावनी है बल्कि भविष्य में सचेत रहने का संदेश भी है। गूगल, फेसबुक, वाट्सऐप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और लिंकडेन जैसी संचार प्रणालियां अमेरिकी सर्वर, इंटरनेट और व्यवस्था पर निर्भर है। यह सबसे बड़ा खतरा है। दूसरी ओर हम अपने पड़ोसी चीन को देखें, तो वे लोग अमेरिका के किसी भी सामाजिक मंच से कोसों दूर हैं। उनका अपना इंटरनेट है। सभी संचार तंत्र खुद के बनाए हुए हैं और विदेशी पर्यटकों को छोड़ कर अपने देश में सभी सामाजिक मंचों को चीन के लोगों ने अपना लिया है। इसीलिए चीन अमेरिका की आंखों में आंखें डाल कर बात करता है। समय आ गया है कि भारत धीरे-धीरे अमेरिका पर अपनी निर्भरता अब कम करे।

- आरके शर्मा, दिल्ली

घटती प्रजनन दर

संयुक्त राष्ट्र की एक नई जनसांख्यिकी रपट के अनुसार, भारत की जनसंख्या 2025 में 146 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है, जो दुनिया में सबसे अधिक है। अब से कुछ वर्ष पहले तक चीन सबसे बड़ी आबादी वाला देश हुआ करता। मगर भारत इस दर्जे को ज्यादा दिनों तक बरकरार नहीं रख पाएगा। जैसे चीन में आज आबादी घट रही है। घटती हुई आबादी का असर कोई एक-दो वर्षों में नहीं, बल्कि दो दशक बाद ही पता चलता है, जब युवा शक्ति कम हो जाती है। रपट में कहा गया कि भारत की प्रजनन दर घट कर 1.9 जन्म प्रति महिला हो गई है। सरकार को इस ओर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए, यह स्थिति हर पहलू से ठीक नहीं है।

- जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

गिरती प्रजनन दर
अवसर और चुनौतियां

भारत की जनसंख्या संरचना गिरती प्रजनन दर के साथ बदल रही है और इसके साथ नए अवसर और चुनौतियां आ रही हैं। एक समय जनसंख्या विस्फोट का सामना कर रहे भारत के समक्ष अब नई जनसंख्या संरचना से चुनौती आ गई है। यह समस्या बहुत अधिक जन्म के बजाय बहुत कम जन्म की है। 'यूएनएफपीए स्टेट आफ वर्ल्ड पापुलेशन 2025' रिपोर्ट के अनुसार, भारत की कुल प्रजनन दर 1.9 हो गई है जो 2.1 की रिप्लेसमेंट दर से कम है। इसका अर्थ है कि औसतन भारतीय महिलाओं के कम बच्चे होंगे जिससे समय बीतने के साथ जनसंख्या का वर्तमान स्तर नीचे गिरेगा। हालांकि, भारत अब भी 1.46 बिलियन के साथ दुनिया का सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है, पर विकास की प्रकृति में परिवर्तन आ रहा है। बड़े परिवारों के दिन लद गए हैं और छोटे परिवारों तथा कम जन्मों के साथ एक मौन पर व्यापक परिवर्तनकारी प्रवृत्ति दिख रही है। भारत की प्रजनन में यह कमी रातोंरात नहीं आई है।

यह दशकों की सामाजिक प्रगति और बदलाव का परिणाम है। अब ज्यादा लड़कियां अपनी शिक्षा पूरी कर रही हैं। गर्भ निरोधकों और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच का विस्तार हुआ है। शहरीकरण ने जीवनशैलियों व आकांक्षाओं में परिवर्तन किया है। ऐसे सांस्कृतिक मानकों का विकास हो रहा है जिनमें ज्यादा महिलायें देर से शादी कर रही हैं, कार्यबल में शामिल हो रही हैं तथा प्रजनन निर्णयों पर स्वायत्तता की मांग कर रही हैं। 1960 में औसत भारतीय महिला के लगभग 6 बच्चे होते थे, पर आज उनकी संख्या गिर कर दो से कम रह गई है। यह परिवर्तन जनसंख्या संरचना की प्रवृत्ति से आगे बढ़ कर महिला सशक्तीकरण का स्पष्ट संकेत है। गिरती प्रजनन दर के अपने कुछ सकारात्मक प्रभाव हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से यह व्यक्तिगत पसंद, खासकर महिलाओं की पसंद के विस्तार का संकेत देती है। इससे संकेत मिलता है कि ज्यादा से ज्यादा लोग यह तय कर रहे हैं कि कब और कितने बच्चे होने चाहिए। जीवन प्रत्याशा वर्तमान समय में महिलाओं के लिए 74 तथा पुरुषों के लिए 71 है। इसके बढ़ने के साथ अपरिहार्य रूप से भारत को बढ़ती वृद्ध जनसंख्या का सामना करना पड़ेगा।

लेकिन इसके नकारात्मक प्रभाव भी होंगे। देश को ऐसे भविष्य का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए जहां कुछ युवा कामगार ज्यादा बड़ी बुढ़ाती जनसंख्या का सहारा बनेंगे। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्यरक्षा, समाज कल्याण व्यवस्थाओं तथा परिवार संरचना पर असर पड़ेगा। गिरती प्रजनन दर के कारण श्रमबल में कमी आएगी जिससे समय बीतने के साथ आर्थिक उत्पादकता एवं प्रगति बाधित हो सकती है। जापान, इटली और दक्षिण कोरिया जैसे देश पहले ही इन स्थितियों का सामना कर रहे हैं। वर्तमान समय में बेहतर जनसंख्या संरचना वाले भारत को इन देशों के अनुभवों से सबक लेते हुए भविष्य में ऐसी ही समस्याओं में फंसने से बचना होगा। समान रूप से भारत में वर्तमान समय में जारी गहरी क्षेत्रीय व सामाजिक-आर्थिक विसंगतियों को संबोधित करना महत्वपूर्ण होगा। जहां शहरी और शिक्षित परिवार स्वेच्छा से कुछ बच्चे पैदा करने का निर्णय कर सकते हैं, वहीं ग्रामीण और कम आय वाले समुदायों में अनेक महिलाओं की पहुंच अब भी उपयुक्त प्रजनन स्वास्थ्यरक्षा तक नहीं है तथा उनका अपनी प्रजनन पसंद पर सीमित नियंत्रण है। प्रगति के इस मूलाधार तक असमान पहुंच प्रजनन दर में आई कमी से संभावित प्रगति को बाधित कर सकती है। इसलिए भारत की घटती प्रजनन दर को चेतावनी की तरह नहीं देखा जाना चाहिए और न इसके प्रति लापरवाही बरतनी चाहिए। हालांकि, यह संकट नहीं है, पर यह एक संकेत तथा विचारशील नियोजन एवं समावेशी नीति का आह्वान है। भारत में प्रजनन दर में कमी क्षेत्रीय स्तर पर भी समान रूप नहीं है और यह भी विसंगतियों का कारण बन सकती है। यूएनएफपीए रिपोर्ट में इस तथ्य पर उचित ही जोर दिया गया है कि अब जनसंख्या संरचना परिवर्तन से घबराने के बजाय लोगों के सशक्तीकरण पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि वे अपने प्रजनन संबंधी जीवन के बारे में सही सूचनाओं के आधार पर स्वतंत्र होकर निर्णय ले सकें।

विश्वविद्यालयों पर ट्रंप का हमला

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के सर्वाधिक सम्मानित विश्वविद्यालयों व खासकर आईवी लीग संस्थानों के खिलाफ आक्रामक अभियान छेड़ दिया है। इसमें फंड में कटौती, नीतियों की जांच तथा आक्रामक बयानबाजी शामिल है।

कल्याणी शंकर
(लेखिका, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

एक विवादास्पद अभियान के रूप में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के सर्वाधिक सम्मानित विश्वविद्यालयों व खासकर आईवी लीग संस्थानों के खिलाफ आक्रामक अभियान छेड़ दिया है। इसमें फंड में कटौती, नीतियों की जांच तथा आक्रामक बयानबाजी शामिल है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अमेरिकी विश्वविद्यालयों पर निशाना लगाया है। पिछले कुछ सप्ताह से उन्होंने 'आइवी लीग विश्वविद्यालयों' के खिलाफ जैसे युद्ध छेड़ दिया है। उन्होंने खासतौर से हार्वर्ड, येल, प्रिंसटन, कोलम्बिया, कार्नेल, ब्राउन, डरमाउथ व पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों पर निशाना लगाया है।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इन कदमों ने अमेरिका के उच्च शिक्षा क्षेत्र को बुरी तरह झकझोर दिया है। अब अकादमिक लोगों को अमेरिकन प्रशासन की ओर से बड़ी चुनौतियों से संघर्ष करना पड़ रहा है। विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों पर डोनाल्ड ट्रंप के हमलों के राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। आम जनता ऐसे कदमों को कंजरवेटिव रणनीति के रूप में देखती है जो उच्च शिक्षा पर उदारवाद का प्रभाव कम करना चाहती है। इसका उद्देश्य डेमोक्रेटिक पार्टी के परंपरागत समर्थन आधार को नुकसान पहुंचाना है जिसे कंजरवेटिव पार्टी की तुलना में छात्रों एवं अकादमीशियनों का व्यापक समर्थन मिलता है।

यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि ट्रंप की फंड घटाने समेत विश्वविद्यालयों के खिलाफ आक्रामक अन्य नीतियों से प्रभावित होने वाले विश्वविद्यालय उन क्षेत्रों में हैं जहां डेमोक्रेटों को मजबूत समर्थन प्राप्त है। इन संस्थानों में से अनेक फंड में कटौती तथा अनुदान सीमित करने से प्रभावित हैं जिससे उनके शोध एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। कंजरवेटिव अक्सर यह शिकायत करते रहे हैं कि इन संस्थानों में पूर्वाग्रह भरे पड़े हैं। कुछ लोग इसे राष्ट्रपति ट्रंप प्रशासन की रणनीति का अंग मानते हैं जो उच्च शिक्षा का स्वरूप बदलने का प्रयास कर रहा है।

कुछ लोगों का अनुमान है कि ट्रंप आइवी लीग संस्थानों का इसलिए विरोध कर रहे हैं कि वे स्नातक की मानद उपाधियां दे रहे हैं तथा अतिथियों को स्नातक छात्रों को संबोधित करने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं, जबकि उनको व्हार्टन स्कूल से स्नातक उपाधि मिली है। अधिकांश हालिया अमेरिकन राष्ट्रपतियों ने आईवी लीग संस्थानों से स्नातक उपाधि प्राप्त की है जिनमें ट्रंप भी शामिल हैं। ट्रंप ने पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय के स्कूल आफ व्हार्टन से स्नातक अध्ययन किया है। 2024 के पिछले कुछ महीनों में ट्रंप प्रशासन ने प्रमुख कालेजों और विश्वविद्यालयों को आक्रामक ढंग से फेडरल फंडिंग से वंचित किया है। इस संबंध में 10 मार्च को प्रशासन ने हार्वर्ड, कोलंबिया, एनवाईयू और 60 अन्य संस्थानों के खिलाफ कार्रवाई की। उसने कुछ संस्थानों और विश्वविद्यालयों के खिलाफ यहूदी-विरोधी उत्पीड़न के कारण नागरिक अधिकार कानून के संभावित उल्लंघनों की जांच भी शुरू की है। ट्रंप के इन प्रयासों के चलते 10 बिलियन डालर से अधिक शोध अनुदान रोके गए हैं। आप्रवास और कस्टम इन्फोर्समेंट विभाग ने अनेक छात्र एक्टिविस्टों को गिरफ्तार किया है। अंतरराष्ट्रीय छात्रों को हार्वर्ड में प्रवेश के अयोग्य ठहराया गया है जिससे उनका कर-राहत दर्जा भी खतरे में पड़ गया है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अंतरराष्ट्रीय छात्रों के हार्वर्ड में अध्ययन एवं उसके कार्यक्रमों में भाग लेने पर भी प्रतिबंध लगा दिया है।

ट्रंप प्रशासन के इन कदमों से हार्वर्ड का कर-छूट दर्जा भी खतरे में पड़ गया है। प्रशासन की इन कार्रवाइयों से आइवी लीग विश्वविद्यालयों में भारी तनाव पैदा हो गया है। अनेक विश्वविद्यालयों ने शुरू में ट्रंप प्रशासन की नीतियों की अनदेखी करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने परिसरों में सुरक्षा बढ़ाने तथा कुछ खास विभागों पर निगरानी बढ़ाने का भी निर्णय किया। कोलम्बिया विश्वविद्यालय को प्रशासन की ओर से चेतावनी दी गई कि यहूदी-विरोधी उत्पीड़न की घटनाओं को उपयुक्त तरीके से संबोधित किया जाए तथा ऐसा न करने पर उसकी मान्यता भी खतरे में पड़ सकती है। प्रिंसटन विश्वविद्यालय व पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय के शोध अनुदानों में हजारों मिलियन डालर की धनराशि स्थगित कर दी गई। ट्रंप प्रशासन का शिक्षा विभाग दस विश्वविद्यालयों में कथित यहूदी-विरोधी मामलों की जांच कर रहा है, जबकि अन्य विश्वविद्यालयों और संस्थानों को चेतावनी दी गई है कि उनके खिलाफ भी ऐसी जांचें शुरू की जा सकती हैं। इसके साथ ही शिक्षा विभाग अवैध नस्ल-आधारित परियोजनाओं को अनुमति देने के लिए 52 विश्वविद्यालयों की जांच कर रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकन विश्वविद्यालयों में अंतरराष्ट्रीय छात्रों का प्रवेश सीमित करने के लिए नए दिशानिर्देश जारी किए हैं जिनमें वीसा की संख्या सीमित करना भी शामिल है। ट्रंप ने सार्वजनिक रूप से हार्वर्ड की आलोचना करते हुए कहा है कि 'हार्वर्ड को अपना व्यवहार सुधारने की आवश्यकता है।' प्रशासन और विश्वविद्यालयों के बीच इस टकराव ने अमेरिका के सबसे पुराने और सबसे अमीर हार्वर्ड विश्वविद्यालय तथा राष्ट्रपति ट्रंप के बीच नाटकीय संघर्ष को जन्म दे दिया है।

ट्रंप ने एक्स पर कहा, 'सभी जानते हैं कि हार्वर्ड रास्ते से भटक गया है। हार्वर्ड एक मजाक है जो घृणा और मूर्खता की शिक्षा देता है और अब उसे संघीय फंड नहीं मिलना चाहिए।' हार्वर्ड को वित्तीय व अन्य कारणों से भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इनका कारण फंड में कटौती तथा नए संघीय निगरानी नियमों का पालन करने पर सहमति देना है। इन निगरानी नियमों में पाठ्यक्रम, प्रवेश और शोध प्राथमिकताओं की जांच शामिल है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने प्रशासन के इन कदमों के खिलाफ कानूनी कदम उठाए हैं। इन शिकायतों के कारण न्यायिक प्रक्रिया शुरू हो गई है और उसे अस्थाई राहत भी मिली है। संघीय अदालत के एक जज ने ट्रंप प्रशासन की उस नीति को स्थगित कर दिया है जिसके अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय छात्रों को वीसा पाने पर सीमायें आरोपित की गई हैं।

जहां तक ट्रंप द्वारा आइवी लीग संस्थानों पर निशाना लगाने का सवाल है, प्रशासन ने अनेक स्पष्टीकरण दिए हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि 2024 के राष्ट्रपति चुनाव प्रचार अभियान में ट्रंप ने उन कालेजों की फंडिंग और मान्यता में कटौती का वादा किया था जो 'यहूदी-विरोधी प्रचार' में शामिल हैं। 2024 में व्हाइट हाउस में लौटने के बाद ट्रंप ने आईवी लीग स्कूलों के खिलाफ अभियान छेड़ दिया। व्हाइट हाउस का कहना है कि यह अभियान इस चिन्ता से प्रेरित है कि ये स्कूल अपने परिसरों में चल रहे यहूदी-विरोधी प्रचार पर समुचित कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। यह चिन्ता गाजा में टकराव बढ़ने के बाद अमेरिकन विश्वविद्यालयों में इस्राइल-विरोधी प्रदर्शन तेज होने से गहरी हुई है।

यह स्पष्ट नहीं है कि ट्रंप और अकादमीशियनों के बीच यह टकराव क्या स्वरूप लेगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रभावित संस्थान दबाव कहां तक झेल सकते हैं। क्या वे संघर्ष करेंगे अथवा व्हाइट हाउस का अनुसरण करेंगे। यदि लक्षित विश्वविद्यालय जल्दी अपनी नीतियों में परिवर्तन से इनकार कर दें तो भी वे अपने आप इनमें बदलाव शुरू करेंगे। मिशिगन, ओहियो स्टेट और कैलीफोर्निया विश्वविद्यालयों ने कुछ परिवर्तन किए हैं और दूसरे भी इसी रास्ते पर चल सकते हैं। इन विशिष्ट संस्थानों में प्रवेश की इच्छा वाले अंतरराष्ट्रीय छात्र अब अनिश्चितता का शिकार हैं और वे दूसरे देशों में इनके विकल्प खोज सकते हैं। उन्होंने अमेरिकन अर्थव्यवस्था में भारी योगदान दिया है।

इनमें से कुछ दूसरे देशों के विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेने पर विचार कर रहे हैं। कहा जाता है कि किसी संस्थान को बनाने में सालों लगते हैं, पर उसे कुछ ही क्षणों में नष्ट किया जा सकता है। टकराव बढ़ रहा है और प्रभावित विश्वविद्यालय ज्यादा कानूनी विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। यदि यही स्थिति जारी रही तो अमेरिकन विश्वविद्यालयों को प्रतिभा का नुकसान हो सकता है और यह स्थिति उस समय भी होगी यदि ट्रंप प्रशासन अपनी नीतियां और कार्रवाइयां उलटने पर विचार करे। इस कदम से अमेरिकी लोकतंत्र की छवि भी खराब हो रही है।

न्यायिक प्रक्रिया में मौन क्रांति

"कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों के लिए न्याय तक पहुंच बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभर रही है।"

विपुल यादव
(लेखक, पेशे से अधिवक्ता हैं)

भारत में कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों के लिए न्याय तक पहुंच बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभर रही है। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) द्वारा शुरू की गई, कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता (अनुच्छेद 21) के संवैधानिक अधिकारों और मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करने के राज्य के कर्तव्य (अनुच्छेद 39) को क्रियान्वित करती है।

यह प्रणाली एक सार्वजनिक बचावकर्ता-शैली दृष्टिकोण को अपनाती है, जो अंशकालिक पैनलबद्ध वकीलों पर निर्भर पिछले मॉडल से एक बदलाव है। कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली सुनिश्चित करता है कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तहत हर जिले में पूर्णकालिक, वेतनभोगी कानूनी पेशेवरों को तैनात किया जाए।

इन टीमों को आम तौर पर एक मुख्य कानूनी सहायता बचाव परामर्शदाता, उप प्रमुख और सहायक कानूनी सहायता बचाव परामर्शदाताओं के साथ संरचित किया जाता है, जिसका उद्देश्य स्थिरता, जवाबदेही और समर्पित सेवा है।

गौतम बुद्ध नगर में एक कानूनी सहायता बचाव परामर्शदाता के रूप में, लेखक कमजोर व्यक्तियों और न्याय प्रणाली के बीच की खाई को पाटने में कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली के व्यावहारिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है। उनकी जिम्मेदारियाँ अदालत में पेश होने से परे वकालत, रणनीति, परामर्श और समन्वय को शामिल करने तक फैली हुई हैं। वे जमानत आवेदन, संशोधन और अपील का प्रबंधन करते हैं, मामले की प्रगति की निगरानी करते हैं और आपराधिक कार्यवाही के दौरान निरंतर कानूनी सहायता प्रदान करते हैं। जेल अधिकारियों, अदालत के कर्मचारियों, पुलिस और परिवारों के साथ सहयोग भी अभियुक्तों के अधिकारों की रक्षा के लिए अभिन्न अंग है। कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली का एक प्रमुख घटक अनिवार्य साप्ताहिक जेल विजिट प्रोटोकॉल है। इन मुलाकातों के दौरान, कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली उन विचाराधीन कैदियों की पहचान करते हैं जिनके पास कानूनी प्रतिनिधित्व या उनके मामलों की समझ की कमी है, अक्सर लंबी अवधि के बाद कानूनी प्रणाली के साथ उनकी पहली बातचीत होती है।

वे कानूनी परामर्श देते हैं, जमानत या छुट्टी की संभावनाओं का आकलन करते हैं और आवश्यक कानूनी दस्तावेजों का मसौदा तैयार करते हैं। इसके अलावा, कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली हिरासत में दुर्व्यवहार, अवैध हिरासत या प्रक्रियात्मक देरी जैसे मुद्दों की रिपोर्ट नालसा को देते हैं, जो व्यक्तिगत न्याय और प्रणालीगत पारदर्शिता दोनों में योगदान देता है। व्यावसायिकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए, नालसा की कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली योजना (2022) परिचालन और नैतिक दिशा-निर्देशों की रूपरेखा तैयार करती है। बचाव पक्ष के वकीलों को क्लाइंट की गोपनीयता बनाए रखने, बिना किसी पूर्वाग्रह के काम करने और व्यक्तिगत गरिमा को बनाए रखने की आवश्यकता होती है। केस फाइलों, अदालती आदेशों, जेल विजिट नोट्स और मासिक रिपोर्टों का सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड रखना अनिवार्य है, जिसकी समीक्षा डीएलएसए द्वारा की जाती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि एलएडीसी को निजी प्रैक्टिस करने से प्रतिबंधित किया गया है, जिससे उनका पूरा ध्यान कानूनी सहायता पर केंद्रित हो और हितों के टकराव को रोका जा सके। प्रत्येक जिले में एक निगरानी और सलाह समिति भी है जो एलएडीसी के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए जिम्मेदार है, जिसके पास लापरवाही या कदाचार के लिए अनुशासनात्मक कार्रवाई की सिफारिश करने का अधिकार है।

इस संस्थागत निरीक्षण का उद्देश्य जनता का विश्वास और पेशेवर जवाबदेही को मजबूत करना है। एलएडीसी से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे सहानुभूति और सामाजिक जागरूकता के साथ अपना काम करें, खासकर महिलाओं, किशोरों, विकलांग व्यक्तियों या एससी/एसटी या अल्पसंख्यक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों से जुड़े संवेदनशील मामलों में, न्याय के लिए मानव-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा दें। जमीनी स्तर के अनुभव से, एलएडीसीएस ने गौतम बुद्ध नगर में ठोस प्रभाव दिखाया है, जिसमें कई विचाराधीन कैदियों को जमानत, अपडेट और उचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ है। कानूनी प्रक्रियाओं में तेजी लाकर, एलएडीसीएस केस बैकलॉग को कम करने और जेलों में भीड़भाड़ कम करने में मदद करता है, साथ ही न्याय प्रणाली में विश्वास बहाल करता है। न्यायालयों को बेहतर तरीके से तैयार बचाव पक्ष के वकीलों से भी लाभ मिलता है, जिससे केस प्रबंधन में आसानी होती है।

यह प्रणाली केवल मुफ्त कानूनी सेवाओं के बारे में नहीं है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण, नैतिक और सुसंगत प्रतिनिधित्व प्रदान करने के बारे में है। जागरूकता बढ़ाने, कर्मचारियों की कमी को दूर करने और पहुंच का विस्तार करने जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन कानूनी सहायता बचाव परामर्श प्रणाली भारत में कानूनी सशक्तिकरण का एक आधारभूत स्तंभ साबित हो रहा है, जो संवैधानिक मूल्यों, मानवीय गरिमा और सभी के लिए न्याय के सार की रक्षा कर रहा है।

आप की बात

निंदनीय घटना

जर्जर ट्रेन, टूटी खिड़की, टूटे दरवाजे, सभी टॉयलेट गंदे व गंदगी से ओतप्रोत, सामान से भरे कोच, कॉकरोचों व कीड़े-मकोड़े से युक्त टूटी सीटें व फटे गद्दे, बिजली व पानी की सुविधा भी नहीं। ऐसी ट्रेन बीएसएफ के 1200 जवानों को अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा व्यवस्था हेतु जाने के लिए रेलवे प्रशासन ने मुहैय्या करवाई थी। यह बहुत निंदनीय व शर्मसार कर करने वाली बात है। रेलवे ने एक तरह से जवानों के साथ बहुत ही भद्दा मजाक ही किया है। देश की सुरक्षा व्यवस्था व अन्य सुरक्षा में लगे जवानों की यह कैसी कद्र की गई। ऐसी ट्रेन उपलब्ध कराने से पहले रेलवे प्रशासन को तनिक भी भान नहीं आया कि देश के रक्षक जा रहें हैं। हालांकि, रेल मंत्री ने घटना का संज्ञान लेकर चार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की है। लेकिन इससे स्पष्ट होता है कि सिविलियन नौकरशाही के एक हिस्से में देश की रक्षा करने वाले सैनिकों व अर्धसैनिक बलों के प्रति सम्मान का अभाव है। ऐसे समय जब पूरा देश आपरेशन सिंदूर के बाद वीर सैनिकों और बीएसएफ जवानों के प्रति प्रशंसा के भाव से भरा है, नौकरशाही का यह अपराध अक्षम्य है। देश की सेना, अर्धसैनिक बलों व पुलिस को सिविल प्रशासन से यथोचित सम्मान मिलना जरूरी है और सरकार को इसे नियमबद्ध करने की दिशा में बढ़ना चाहिए।

-हेमा हरि उपाध्याय, उज्जैन

विमान दुर्घटना

अहमदाबाद में हाल ही में हुई विमान दुर्घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। यह हादसा केवल एक तकनीकी खामी नहीं, बल्कि पूरे विमानन तंत्र की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्नचिन्ह है। जब देश में हवाई यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है और हवाई यात्रा आम नागरिकों के लिए भी सहज हो रही है, ऐसे में इस तरह की त्रासदियाँ लोगों के भरोसे को गहरा आघात पहुँचा सकती हैं। भारत इस समय दुनिया का चौथा सबसे बड़ा एविएशन मार्केट है। केंद्र सरकार की उड़ान योजना के तहत देश के छोटे शहरों को भी हवाई सेवा से जोड़ा जा रहा है। बीते दशक में एयरपोर्ट की संख्या 74 से बढ़कर 159 हो चुकी है। हवाई यात्रा अब केवल अमीरों की सुविधा नहीं, बल्कि आम लोगों की जरूरत बन चुकी है। अप्रैल 2025 में डोमेस्टिक एयर ट्रैवल में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि और 17 नवंबर 2024 को एक ही दिन में 5 लाख यात्रियों का सफर इस बात का प्रमाण है कि भारत में हवाई यात्रा तेजी से लोकप्रिय हो रही है। ऐसे में किसी एक बड़ी दुर्घटना से आम लोगों का भरोसा टूटना देश के विमानन क्षेत्र की प्रगति पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर सकता है। इस भयानक दुर्घटना से समुचित सबक लेकर विमानों का उड़ान से पहले समुचित परीक्षण होना चाहिए।

- सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

दुर्घटना की जांच

अहमदाबाद से लन्दन जाने वाले एयर इण्डिया की विमान दुर्घटना में 260 से अधिक लोगों के मरने की खबर है। एअरपोर्ट के पास रिहायशी इलाके में भवन से टकरा कर जमीन पर गिरते ही विस्फोट हो गया और आग लग गई। बिल्डिंग में सिविल अस्पताल के कुछ डॉक्टर मारे गए व घायल हुए हैं। जांच के बाद दुर्घटना के कारणों का पता चलेगा। विमान हादसे की बारीकी से जांच करानी चाहिए, क्योंकि अभी-अभी हम एक बड़े ऑप्रेशन सिंदूर से निपटे हैं। आशंका है कि कहीं ये दुश्मनों की चाल तो नहीं है। दुर्घटना के आतंकी पहलू पर भी विचार किया जाना चाहिए। विमान उड़ते ही हादसे का शिकार होना अनेक शंकाओं को जन्म दे रहा है, जिनमें रखरखाव की गलतियां, तकनीकी खराबी, आदि शामिल हैं। बोइंग के इस ड्रीमलाइनर विमान को दुनिया का एक सर्वोत्तम विमान माना जाता है, लेकिन इसके उड़ान भरते ही दुर्घटना स्वाभाविक रूप से विमान बनाने वाली कंपनी के लिए भी चिन्ता का विषय होनी चाहिए। दुर्घटना के बाद बोइंग के शेयरों को झटका लगा जो इस कंपनी के विमानों की सुरक्षा के प्रति जनता की चिन्ता प्रकट करता है। अतः विमान की तकनीकी सटीकता के बारे में भी जांच होनी चाहिए।

शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

अमेरिका की छवि

अमेरिका की छवि एक विशुद्ध व्यापारी की है। वह न किसी का मित्र है और न किसी का शत्रु। पहलगाम की आतंकी घटना के बाद राष्ट्रपति ट्रम्प ने घटना की निन्दा करते हुए कहा था कि वह आंतकवाद के विरुद्ध लड़ाई में भारत के साथ खड़ा है। लेकिन इसके बाद उसके सुर बदलते रहे। 14 जून को अमेरिका अपना सैन्य दिवस मना रहा है जिसमें अमेरिका की सेना ने पाकिस्तान के फील्ड मार्शल आसिम मुनीर को अतिथि के रूप में निमंत्रित किया है। यही नहीं अमेरिकी कमाण्ड ने पाक को आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में अपना प्रमुख साझीदार भी बताया है। यह तब है जब दुनिया के अधिकांश देश पाकिस्तान को न केवल आतंकवाद का पोषक और निर्यातक मानते हैं बल्कि वे आतंकवाद से पीड़ित भी हैं। वर्तमान में भी संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित कई आतंकी सरगना पाकिस्तान में सरकार और सेना के संरक्षण में भारत-विरोधी बयानबाजी कर रहे हैं। वे भारत में खुलेआम जिहाद और गजवाये हिंद की बात करते हैं। स्पष्ट है कि अमेरिका भारत का उभार रोकने के लिए पाकिस्तान को मुहरा बना रहा है।

- नरेन्द्र टौंक, मेरठ

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

पिता का हृदय प्रकृति की सबसे सुंदर और उत्कृष्ट कृति है। -प्रीवोस्ट एबे

युद्ध का नया मोर्चा

पहले से युद्धरत इस्राइल ने ईरान के परमाणु व सैन्य ठिकानों पर हमला कर, जिसमें कई शीर्ष ईरानी कमांडर मारे गए हैं, अपने लिए युद्ध का एक नया मोर्चा तो खोला ही है, पूरे पश्चिम एशिया को एक खतरनाक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। दरअसल, इस्राइल का कहना है कि यह ऑपरेशन 'राइजिंग लॉयन' ईरान की कथित परमाणु हथियार महत्वाकांक्षाओं को विफल करने के लिए शुरू किया गया है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) की ताजा रिपोर्ट में भी ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर चिंताएं जताई गई हैं। बीस वर्षों में पहली बार आईएईए ने ईरान पर परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) के स्पष्ट उल्लंघन का आरोप लगाया है। ईरान बेशक यह कहता आया है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है, लेकिन उस पर गुप्त ढंग से परमाणु कार्यक्रम चलाने के जो आरोप लगते रहे हैं, वे शंकाएं तो पैदा करते ही हैं। इसके अतिरिक्त, ईरान की ओर से बार-बार इस्राइल को नष्ट करने की धमकियां और उसके द्वारा समर्थित हमास और हिजबुल्ला जैसे आतंकी संगठनों की गतिविधियां इस्राइल की चिंताओं को और ठोस बनाती हैं। फिर सवाल केवल इस्राइल की सुरक्षा का नहीं है, एक परमाणु शक्तिसंपन्न ईरान पूरे पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन बिगाड़ सकता है। इस्राइली हमले के बाद ईरान के तेवर देखकर लग रहा है कि यह युद्ध अभी थमने वाला नहीं है। गौरतलब है कि यही वह इलाका है, जिसकी वैश्विक तेल उत्पादन में एक-तिहाई हिस्सेदारी है। ईरान पर हमले के बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत एक ही दिन में आश्चर्यजनक ढंग से 7.5 फीसद तक बढ़ गई। चीन और अमेरिका के बाद चूंकि भारत सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है, इसलिए अगर तेल महंगा होगा, तो भारत के विदेशी मुद्रा भंडार पर सीधा असर होगा और अर्थव्यवस्था की गति धीमी होगी। लिहाजा इस संघर्ष का पूरी तरह युद्ध में तब्दील होना भारत के लिए चिंताजनक बात होगी। भारत की पश्चिम एशिया में भूमिका हमेशा संतुलनकारी रही है। एक ओर जहां इस्राइल भारत का प्रमुख रक्षा साझेदार रहा है,

ऑपरेशन सिंदूर के वक्त भी वह हमारे साथ खड़ा था, तो दूसरी ओर ईरान के साथ भी भारत के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रिश्ते रहे हैं। भारत, जो खुद आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है, इस्राइल के आत्मरक्षा के अधिकार को समझ सकता है। फिर भी एक पूर्ण युद्ध भारत के लिए भी संकटों को बढ़ाएगा, इसलिए उसे अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के हित में संयमित रुख अपनाते हुए दोनों पक्षों से तनाव कम करने का आह्वान करना चाहिए।

मैं आपके साथ चलना चाहता हूं

पापा, आजकल सभी फोन के साथ चलते हैं, लेकिन मैं कल सुबह, जब फादर्स डे पर सब आपको दूसरी तरह से याद कर रहे होंगे, तब आपके साथ चलना चाहता हूं, ताकि आपसे जीवन की सलाह सुनता रहूं। अगर मां घर की सुबह हैं, जो हमें जीवन का एहसास देती है, तो आप उस सुबह का तेज हैं, जो हमें ऊर्जावान बनाता है।

पूज्य पापा, आप सोच रहे होंगे कि आज के जमाने में मुझे पत्र लिखने की क्या जरूरत पड़ गई? वह इसलिए कि कल फादर्स डे है। आप कहेंगे, 'अरे ये फादर्स डे, मदर्स डे क्या होता है? तुम तो हर दिन ही फादर्स डे, मदर्स डे के रूप में मनाते हो।' पर मुझे लगता है, पिताजी कि 'हैप्पी फादर्स डे' तो मेरी पत्नी, बच्चे भी आपसे कहेंगे। और आप मुस्कराकर पूछेंगे भी कि 'आज के दिन तुम लोगों को क्या चाहिए!' मां भी कहेंगी कि आप बच्चों के लिए कोई गिफ्ट खरीद दें।

पर मुझे लगता है कि ऐसे दिवस सिर्फ उस पुत्री या पुत्र को ढूंढने आते हैं, जो अपनी दिनचर्या में गुम हो चुके हैं। हैप्पी फादर्स डे कहकर या गिफ्ट देकर वे वापस अपने फोन में, रील के संग चिपकना चाहते हैं या मीटिंगों में व्यस्त रहना चाहते हैं, पर कुछ कहना या सुनना नहीं चाहते। बहुत हुआ तो मैनेजर अवतार में घर को कुछ निर्देश देते हैं और शाम में आकर रिव्यू करते हैं कि फादर्स डे में किसने क्या गिफ्ट दिया और बाहर से पिज्जा या कुछ और मंगाया गया या नहीं।

नंदितेश निलय
स्तंभकार, लेखक एवं एथिक्स प्रशिक्षक

लेकिन मेरे लिए तो फादर्स डे आपके पास बैठना, आपके साथ वॉक करना, विभिन्न विषयों पर बातचीत करना होता है। और जब कभी आप कृष्ण भाव में डांटते हैं, समझाते हैं, तो मैं भी अर्जुन भाव में सुनने की कोशिश करता हूं। लेकिन यह भी सच है कि वृद्ध व्यक्ति या पीले पड़ते पत्तों के लिए कोई समाज तैयार नहीं मालूम पड़ता और वह गहरी संवेदनशीलता नहीं महसूस होती, जो किसी भी सामाजिक प्राण की संभावना होती है। यहां तक कि सबसे निकटतम संबंध भी उस माता-पिता के पास नहीं रुकना चाहता। और बहाना समय की कमी का होता है।

एक सूखापन, निष्ठुरता और 'मैं और मेरा' में उलझा हुआ यह समाज बाल सुलभ भाव के साथ कुछ पल के लिए ही सही, अपने पिता या मां के पास बैठने का समय नहीं निकाल पाता। क्योंकि अधिकांश जगह भावनाओं को डिजिटल दुनिया और बाजार ने कैद कर रखा है। अगर कभी उस भाव से रूबरू होना होता है, तो परिवार को घर के दरख्त से निकल कर मॉल की बेजान दीवारों के पास आना पड़ता है, जहां पूरा परिवार अपनों से थोड़ी देर के लिए ही सही, पर मिल जरूर पाता है। बाजार हमारे अंदर धैर्य और ठहराव सृजित करता है, क्योंकि भले ही घरों में अंधेरा रहे, बाजार रात भर रोशनी बिखेरता है।

ऐसे में एक पुत्री या पुत्र के लिए अपने पिता या मां को सुनना, समझना और मन तक पहुंचने का मन बनाना थोड़ा बेमन-सा कार्य हो जाता है। आप भी यह मानेंगे कि शायद पिता की तरफ से पुत्र को कुछ कहने की मानसिक ताकत और वह भावनात्मक विश्वास सत्तर की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते कुछ कमजोर-सा पड़ जाता है, क्योंकि पुत्र भी तब तक पिता बन चुका होता है और आत्मनिर्भर भी। लेकिन पिताजी, आपको जो भी लगे, बेबाक बोलते रहिए, सुनूंगा मैं। क्योंकि मैं भी तो कुछ बड़ा हुआ हूं, और वैसे ही, जैसे आप और मां चाहती हैं। उस सबल पेड़ की तरह, जिसकी जड़ें गहरी होती हैं और इन जड़ों से ही मैं अपने माता-पिता से जुड़ा हूं।

ऐसे दिवस हमें खुद के करीब लाते हैं और रिश्तों के मूल्यांकन का भी मौका देते हैं। नेटवर्किंग की चकमक में माता-पिता को ढूंढना आसान नहीं होता। इसलिए सोच रहा हूं कि फादर्स डे के दिन एक पुत्री या पुत्र को अपने पिता की सुबह बननी चाहिए, जिससे कि उनका हर दिन 'फादर्स डे' बन सके। मतलब यह कि चाहे माता-पिता के साथ रहते हों, या दूर, लेकिन हमारे बेडरूम से माता-पिता के कमरे का सफर दुरूह और नीरस नहीं होना चाहिए। बल्कि कुछ ऐसा, जैसे सिद्धार्थ से गौतम बनने का सफर।

दुनिया कहती है कि बुजुर्गों को नींद कम ही आती है, या जल्दी सो जाते हैं, तो जल्दी उठ भी जाते हैं। मैं भी हमेशा जल्दी ही उठना चाहता हूं, पिताजी। सुबह की चाय साथ पीने या कभी बनाने का मौका नहीं खोना चाहता और सुबह का पहला घंटा आप दोनों के संग बिताना चाहता हूं। मैं अन्य लोगों से भी यह कहना चाहता हूं कि अगर पैरेंट्स हों, दूर हों या बहुत दूर हों, तो भी आप सुबह ही उठ जाइए। सुबह के पहले घंटे को ऐसे दिन की तरह बिताइए, जिसमें माता-पिता अपने बेटे या बेटी से मिल सकें। फोन पर, सामने या यादों में। पर सुबह की पहली मुलाकात तो माता-पिता से ही बनती है।

अगर मैं जल्दी नहीं उठ पाता, तो आपके साथ प्रतिदिन चलने या वॉक करने का मौका ही खो दूंगा। साथ चलना अच्छा होता है न पिताजी! आजकल सभी फोन के साथ चलते हैं, पर मैं सुबह इसलिए उठना चाहता हूं, पिताजी कि आपके साथ चलूं और जीवन की सलाह सुनता रहूं। मैं बस आपकी सुबह में शामिल रहना चाहता हूं। अगर मां घर की सुबह हैं, जो हमें जीवन का एहसास देती है, तो आप उस सुबह का तेज हैं, जो हमें ऊर्जावान बनाता है।

मुझे लगता है कि एक पुत्र का चार बार जन्म होता है। एक, उसकी बाल्यावस्था, दूसरा, जब उसकी शादी होती है, तीसरा, जब वह पिता बनता है, और चौथा जब उसके मां-बाप कुछ वृद्ध होने लगते हैं। इस तरह यह यात्रा उसके मनुष्य होने का बोध कराती है। आपको याद होगा कि पिछले साल हम सभी अयोध्या राम मंदिर गए थे और दर्शन करने के बाद जब हम सभी बाहर निकले, तो मैं आप लोगों को बिना बताए दोबारा दर्शन करने चला गया। आपको लगा कि मैं गुम गया हूं या मेरी कोई चीज खो गई है। आप मंदिर प्रांगण में अपनी चिंता को ठीक से बता भी नहीं पाए और न ही मुझे अपने स्वाभाविक रूप से डांटा। मैं समझ गया कि आप परेशान हो गए हैं। फिर हम साथ-साथ चलने लगे और मैंने आपको छूते हुए धीरे से सॉरी भी कहा। दर्शन की सुबह सार्थक हुई। राम ने पिता को सुना था और मैं भी अपने पिता को सुनने और महसूस करने की कोशिश कर रहा था।

जब हम अपने माता-पिता में दुनिया का सबसे अच्छा इन्सान पाते हैं, तो फिर घर में ही गुडनेस का दार्शनिक और व्यावहारिक दर्शन भी कर लेते हैं। मैं भी अपने बच्चों के लिए एक अच्छा इन्सान बनना चाहता हूं और पैरेंटिंग में फेल नहीं होना चाहता। अगर मेरे बच्चे मुझमें वह अच्छा इन्सान नहीं ढूंढ पाए, तो यह मेरी विफलता होगी। आपलोग तो फर्स्ट हो गए, मैं भी फर्स्ट आना चाहता हूं, एक अच्छा इन्सान बनकर। आज मैं अपनी पहली कविता फिर से आपको सुनाना चाहता हूं: *मां के निःशब्द सपनों को/ और पिता के बढ़ते कदमों को,/ कुछ थमा देख, कुछ थका देख,/ उनके मन को कुछ झुका देख,/देखो मैं यह प्रण कर चला,/मैं फिर कुछ आगे बढ़ चला।*

edit@amarujala.com

अंतरराष्ट्रीय

इस्राइल, ईरान और अमेरिका

एक बड़ा संघर्ष न केवल पहले से ही अस्थिर पश्चिम एशिया को और अस्थिर करेगा, बल्कि नाजुक वैश्विक भू-राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य को भी उलट सकता है।

इस खुफिया जानकारी के मिलते ही कि कुछ ही महीनों में ईरान परमाणु हथियार बनाने में सफल हो जाएगा, इस्राइल ने उसके परमाणु कार्यक्रम को नष्ट करने के लिए हवाई हमला शुरू कर दिया। इस्राइल के हवाई हमलों ने ईरान के मुख्य परमाणु संवर्धन सुविधा के साथ-साथ इसकी हवाई सुरक्षा और लंबी दूरी की मिसाइल सुविधाओं को भी निशाना बनाया। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामनेई ने जवाब में कड़ी सजा देने की घोषणा की है। ईरान संभवतः इस्राइल के परमाणु ठिकानों और फारस की खाड़ी में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बना सकता है।

इस्राइल ने दावा किया कि हमले के कुछ ही घंटों बाद ईरान ने उसकी तरफ 100 ड्रोन दागे। जाहिर है, पश्चिम एशिया एक बार फिर संभावित विनाशकारी युद्ध के मुहाने पर खड़ा है, जिसके गंभीर क्षेत्रीय और वैश्विक परिणाम होंगे। गौरतलब है कि इस्राइल ने यह हमला तब किया है, जब अमेरिका और ईरान के बीच मध्य अप्रैल से परमाणु समझौता वार्ता चल रही है।

हाल के हफ्तों में यह कूटनीतिक प्रयास ट्रंप की इस मांग के कारण रुक गया कि ईरान शून्य-यूरेनियम संवर्धन की स्थिति पर सहमत हो और 60 फीसदी शुद्धता के स्तर पर लगभग 400 किलोग्राम संवर्धित यूरेनियम के अपने भंडार को नष्ट कर दे। लेकिन तेहरान ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। नेतन्याहू ने पहले भी वाशिंगटन से ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान में शामिल होने का आग्रह किया था। लेकिन अमेरिकी नेताओं ने पश्चिम एशिया में एक और युद्ध छेड़ना या उसमें शामिल होना उचित नहीं समझा, खासकर इराक में पराजय और अफगानिस्तान में असफल हस्तक्षेप के बाद।

अमीन सैकाल
पश्चिम एशिया मामलों के विशेषज्ञ

इस्राइल की सुरक्षा और क्षेत्रीय वर्चस्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बावजूद, ट्रंप तेल समृद्ध अरब देशों के साथ अपने संबंधों की कीमत पर नेतन्याहू से बहुत निकटता से जुड़ने के इच्छुक नहीं हैं। उन्होंने हाल ही में पश्चिम एशिया की यात्रा की, जबकि इस्राइल को दरकिनार कर दिया। इस हफ्ते ट्रंप ने नेतन्याहू को चेतावनी भी दी थी कि वे ऐसा कुछ न करें, जिससे ईरान के साथ अमेरिका की परमाणु वार्ता कमजोर हो जाए। वह शांति मध्यस्थ के रूप में अपनी स्वघोषित छवि गढ़ने के लिए समझौता करने को उत्सुक हैं। लेकिन जब परमाणु वार्ता में गतिरोध दिखा, तो नेतन्याहू ने फैसला किया कि अब कार्रवाई करने का समय आ गया है।

ट्रंप प्रशासन ने इस हमले से खुद को अलग कर लिया है। पर यह देखना अभी बाकी है कि ईरान द्वारा जवाबी कार्रवाई किए जाने पर क्या अमेरिका अब इस्राइल की रक्षा के लिए इसमें शामिल होगा। ईरानी प्रतिक्रिया की प्रकृति और दायरे के आधार पर मौजूदा संघर्ष एक अनियंत्रित क्षेत्रीय युद्ध में बदल सकता है, जिसमें कोई भी पक्ष विजयी नहीं हो सकता। एक बड़ा संघर्ष न केवल पहले से ही अस्थिर पश्चिम एशिया को और अस्थिर करेगा, बल्कि नाजुक वैश्विक भू-राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य को भी उलट सकता है। ट्रंप के पास परमाणु वार्ता के बहाने नेतन्याहू को रोकने के अच्छे कारण थे। लेकिन अब जबकि नेतन्याहू ने ईरान पर हमला कर ही दिया है, तो देखना होगा कि समय रहते एक बड़े युद्ध को टाला जा सकता है या नहीं।

(द कन्वर्सेशन से)

हम ऐसी दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं, जहां एआई के साथ सहअस्तित्व में रहना सीखेंगे, लेकिन उसके मालिक नहीं, बल्कि सहयोगी के रूप में। -मार्क जुकरबर्ग

बाधाओं को खुद पर हावी न होने दें

मन का व्यस्त रहना आनंद का ऐसा स्रोत है, जो हर दर्द को दूर कर सकता है। हर नई खोज, हर नया ज्ञान और हर नया उपकरण मानव जीवन को सरल बनाता है।

जीवन एक महान मशीन की तरह 'जटिल और अद्भुत' है। हर इन्सान को इसकी अनंत गति में अपना हिस्सा गढ़ने का काम सौंपा गया है, ताकि इस जीवन को और अच्छी तरह से निखारा जा सके। जब मैं डिफरेंस इंजन और एनालिटिकल इंजन पर काम कर रहा था, तब मैंने एक ऐसे भविष्य की कल्पना की थी, जहां मानवीय सोच की कोई सीमा नहीं होगी। असल में अनुसंधान करते वक्त हमें समझना चाहिए कि प्रत्येक खोज विज्ञान और मानवता की दिशा निर्धारित करेगी।

चार्ल्स बैबेज

मनुष्य को हमेशा जिज्ञासु बने रहना चाहिए, क्योंकि ज्ञान की खोज ही जीवन का असली मकसद है। हम अपने वर्तमान पर नजर रखते हुए भविष्य के बारे में सोचें और बड़े सपने देखें। सपनों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत ही जरिया है। हरेक व्यक्ति के जीवन में बाधाएं और मुश्किलें आती हैं। मुझे खुद पैसे की कमी और लोगों की अनदेखी का शिकार होना पड़ा, पर मैंने बाधाओं को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। आलोचनाओं से बचने का एकमात्र उपाय है, उन पर ध्यान नहीं देना। इसलिए आलोचनाओं और मुश्किलों को अपनी राह में बाधा न बनने दें। आलोचनाओं से छुटकारा पाने के लिए जरूरी है कि आप अपने मन को जरूरी कामों में लगा दें। मन का व्यस्त रहना आनंद का ऐसा स्रोत है, जो हर दर्द को दूर कर सकता है। हर नई खोज, हर नया ज्ञान और हर नया उपकरण मानव जीवन को सरल बनाता है। इसलिए चाहे मशीन बनाना हो या ज्ञान हासिल करना, सीखना कभी न छोड़ें। बच्चे स्कूल से विश्वविद्यालय पहुंच जाते हैं, लेकिन उन्हें उपयोगी ज्ञान की बुनियाद नहीं मिलती। किसी भी देश में ज्ञान की स्थिति, वहां अपनाई जाने वाली सामान्य शिक्षण प्रणाली पर निर्भर नहीं करती है। इस युग के महान आविष्कार, कम-से-कम हमारे यहां, विश्वविद्यालयों में नहीं किए गए हैं। नई खोज के लिए स्वयं से सवाल करना होता है, कुछ नया खोजने और कुछ बेहतर बनाने के लिए उत्सुक होना पड़ता है। नाम में कुछ नहीं रखा है, यह सिर्फ एक खाली टोकरी है, जब तक आप इसमें कुछ न डालें। यानी हम सब एक खाली टोकरी की तरह हैं, जिसकी सार्थकता तभी है, जब इसमें पदार्थ, अर्थ या सामग्री से भरा जाए। अपने काम को ऐसा बनाएं कि वह युगों तक प्रेरणा दे। हर कदम पर साहस और समर्पण के साथ आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि यही सच्ची प्रगति का मार्ग है।

जीवन धारा

कैसा लगता है, जब मशीन नौकरी छीन ले

पोलैंड के पत्रकार डेम्स्की हों, या इंडोनेशिया की चित्रकार मेलिना, इनके जैसे कइयों की रोजी एआई ने छीन ली है। द गार्जियन की स्तंभकार चैरिस मैकगोवन बताती हैं कि अगर चैटबॉट ही आपकी नौकरी छीन ले, तो आखिर लगता कैसा है।

क्राकोव (पोलैंड) के 31 वर्षीय फ्रीलांस पत्रकार माटेउज डेम्स्की को एआई के कारण अपना काम खोना पड़ा। वह बताते हैं, 'मैं 10 साल से स्वतंत्र पत्रकारिता करते हुए सिनेमा के बारे में पत्रिकाओं और वेबसाइटों के लिए लिखता हूं। दो साल तक रेडियो क्राकोव पर सप्ताह में दो बार सुबह का शो प्रस्तुत किया। मुझे याद है कि 2022 में मैंने जो पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया था, उसमें मैंने रूसी आक्रमण के बारे में यूक्रेनियन लोगों का साक्षात्कार लिया था। अगस्त, 2024 में मुझे और एक दर्जन से ज्यादा सहकर्मियों को नौकरी से निकाल दिया गया, जो पार्ट-टाइम काम करते थे। हमें बताया गया कि रेडियो स्टेशन को वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन कुछ महीने बाद मैंने सुना कि रेडियो क्राकोव तीन एआई पात्रों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले कार्यक्रम शुरू कर रहा था। उन्होंने इसे युवा दर्शकों के लिए एक 'प्रयोग' बताया।

एआई प्रस्तुतकर्ता ने जो पहला कार्यक्रम किया, वह एक पोलिश कवयित्री विस्लावा शिम्बोर्स्का का लाइव 'साक्षात्कार' था, जिन्हें 1996 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था और जिनकी मृत्यु 12 साल पहले हो गई थी। तकनीकी का मृत व्यक्ति का साक्षात्कार लेने में उपयोग करना क्या नैतिकता है? शिम्बोर्स्का पोलिश बौद्धिक संस्कृति की प्रतीक हैं, इसको लेकर आक्रोश पैदा हुआ। हम अपने अनुभवों, भावनाओं या आवाजों को अवतारों से नहीं बदल सकते। नए एआई अवतारों में से एक का नाम एलेक्स था, जो एक नॉन-बाइनरी छात्र और समलैंगिक विषयों का 'विशेषज्ञ' था। मेरे सहकर्मी और एलजीबीटी समुदाय के लिए यह चौंकाने वाला और नुकसानदेह था कि उनके अनुभव और ज्ञान की नकल एआई द्वारा की जा रही है। हममें से कुछ लोगों ने, जिन्हें नौकरी से निकाला गया था, स्टेशन के खिलाफ एक याचिका शुरू की, जिसमें एआई शो को बंद करने की मांग की गई। हमने हजारों लोगों से हस्ताक्षर करवाए। हमारे आंदोलन के कारण रेडियो स्टेशन ने अवतारों को खत्म कर दिया है। अब यह नौसिखिए छात्रों द्वारा संचालित है। हालांकि, यह योग्य पत्रकारों को काम पर न रखने का एक सस्ता विकल्प भी है। फिर भी, यह एआई से बेहतर है। पोलैंड में एआई के उपयोग को लेकर अब भी कोई स्पष्ट नियम नहीं हैं। मैं यह अभियान इसलिए चला रहा हूं, क्योंकि मैं गलत सूचना और श्रोताओं को धोखा देने की अनैतिकता के बारे में चिंतित हूं। मैं पूरी तरह से एआई के खिलाफ नहीं हूं। लेकिन मुझे लगता है कि इसका इस्तेमाल जिम्मेदारी से हमारे काम के उबाऊ हिस्सों को करने के लिए किया जा सकता है। लेकिन हम रचनात्मक सोच को मशीनों से बदल नहीं सकते। एआई हमारी जिज्ञासा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की जगह नहीं ले सकता।

ऐसी ही कहानी बांडुंग (इंडोनेशिया) की 30 वर्षीय चित्रकार लीना मेलिना की है, जो बचपन से ही चित्र बनाती हैं। अब वह एनीमे शैली के चित्र बनाती हैं और उनकी आय का स्रोत कमीशन है। वह ग्राहकों के लिए खास किरदार बनाती हैं और खुद भी किरदार बनाती हैं। इंडोनेशिया कलाकारों को गंभीरता से नहीं लेता और कॉपीराइट कानून कमजोर हैं। लोग उनकी कलाकृति चुराकर खुदरा वेबसाइटों पर बेच देते हैं। वेबसाइट की एडमिन को रिपोर्ट करने के लिए उन्हें एक-एक पृष्ठ का स्क्रीनशॉट लेना पड़ता है। अब एआई ने कलाकृति का स्वामित्व साबित करना मुश्किल बना दिया है, क्योंकि कोई भी आपकी कलाकृति चुराकर उसमें थोड़े बहुत बदलाव कर सकता है, जिसे सीधी नकल नहीं कहा जा सकता है। इंडोनेशियाई सरकार भी एआई कला का उपयोग कर रही है: उसने हाल ही में एक वीडियो जारी किया है, जिसमें छात्रों के लिए मुफ्त लंच की योजना को बढ़ावा दिया गया है। यह एक शानदार पहल है, लेकिन उसने एक प्रतिभाशाली इंडोनेशियाई कलाकार को नियुक्त करने के बजाय एआई का उपयोग किया। वह बताती हैं, 'मैं टीवी विज्ञापनों के लिए स्टोरीबोर्ड कलाकार के रूप में एक छोटे से स्टूडियो में काम करती थी। जब से एआई आया है, मैंने देखा है कि कंपनियां मिडजर्नी सॉफ्टवेयर (जो प्रॉम्प्ट के अनुसार छवि बनाता है) का इस्तेमाल कर रही हैं, इसलिए मेरे सहकर्मियों की नौकरियां चली गई हैं। जिनकी नौकरी बची हुई है, उनका वेतन कम हो गया है-जबकि दक्षिण-पूर्व एशिया में वेतन पहले से ही कम है।'

रिकर्सिव प्रॉम्प्टिंग

एआई भाषा मॉडलों को उच्च गुणवत्ता वाले आउटपुट का उत्पादन करने के लिए मार्गदर्शन करने की रणनीति को रिकर्सिव प्रॉम्प्टिंग (पुनरावर्ती संकेत) कहते हैं। इसमें मॉडल को संकेतों या प्रश्नों की एक शृंखला प्रदान की जाती है, जो पिछले उत्तरों पर आधारित होती है तथा वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए संदर्भ और एआई की समझ, दोनों को परिष्कृत किया जाता है। प्रॉम्प्ट को बार-बार परिष्कृत करके यूजर एआई को अधिक सटीक और प्रासंगिक आउटपुट की ओर निर्देशित कर सकते हैं। प्रत्येक पुनरावृत्ति एआई को यूजर के इरादे और कार्य के संदर्भ को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है।